{ संपादकीय }
नई दिल्ली, गुरुवार 13 नवम्बर 2025
संस्थापक-सम्पादक : स्व. मायाराम सुरजन

विस्फोट के बाद बेतुकी बयानबाजी

10 नवंबर को हुए दिल्ली बम धमाके के बाद देश में फिर डर और संदेह का माहौल बन गया है। जिस देश में हिंदू, मुसलमान, सिख, ईसाई, बौद्ध, यहूदी सब मिलजुल कर रहें, उसे तोड़ना मुश्किल होता है। इसके लिए जरूरी है कि देश में भीतरी दरारें बनाई जाएं, यह काम दो तरीकों से हो सकता है। पहला डर का माहौल और दूसरा परस्पर भरोसे को तोड़ना। इस समय देश में यही हो रहा है। हर मुसलमान आतंकवादी नहीं होता, लेकिन हर आतंकवादी मुसलमान ही क्यों होता है, जैसे वाक्यों के जरिए बड़ी चालाकी से आतंकवाद को इस्लाम से जोड़ने की कोशिशें बरसों से हो रही हैं। दाढ़ी, जालीदार टोपी, बुर्का ये सब संदेह के घेरे में डाल दिए गए हैं। याद पड़ता है कि कोरोना काल में एक प्रतिष्ठित अंग्रेजी दैनिक ने कोरोना को आतंकवाद की तरह खतरनाक बताते हुए कार्टून प्रकाशित किया था, तो वायरस के मानवीकरण चित्रण में उसे पायजामे, जालीदार टोपी में दिखाया गया था। इसकी खूब निंदा भी हुई थी। लेकिन यह असल में समाज में भीतर तक पैठ चुकी सोच का सबूत है।

जब पहलगाम हमला हुआ था, तो आतंकियों ने धर्म पूछकर मारा यह बात चर्चा में आई थी। क्योंकि आतंकवादी भी जानते हैं कि इस तरह हम भारत के लोगों में आसानी से फूट डलवा सकते हैं। अभी दिल्ली धमाके से पहले ही फरीदाबाद में जब बड़ी मात्रा में विस्फोटक मिली तो भाजपा सांसद गिरिराज सिंह का बयान था कि जो लोग कहते हैं कि आतंकवाद का कोई धर्म नहीं होता, मैं उनसे पूछना चाहता हूं कि जितने आतंकी पकड़े गए सभी मुसलमान ही क्यों हैं? इस पर जम्मू-कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती ने कहा भी है कि गांधी जी को किसने मारा? इंदिरा जी को किसने मारा? राजीव गांधी जी को किसने मारा? गिरिराज जी के जवाब के बाद हम बात करेंगे।

सुश्री मुफ्ती का तर्क बिल्कुल वाजिब है, क्योंकि भारत ही नहीं विश्व के अधिकतर देश आतंकवाद का दंश किसी न किसी तरह झेल रहे हैं या झेल चुके हैं और आतंक फैलाने वाले लोग किसी भी मज़हब या पंथ के हो सकते हैं। जो लोग आतंकवाद को धर्म से जोड़ते हैं, वे असल में आतंकवाद पर पर्दा डालने का कम करते हैं, जो गंभीर अपराध की तरह देखा जाना चाहिए। क्योंकि इसमें आतंकवादियों को बचाकर सारा ध्यान बंटाया जाता है। गिरिराज सिंह पहले भी राजनैतिक फायदे के लिए बार-बार अपने विरोधियों को पाकिस्तान जाने की नसीहत देते रहे हैं। हमें नहीं पता कि उनकी अपनी पार्टी के मुस्लिमों को ये बातें कैसी लगती हैं। हो सकता है वे भी राजनैतिक मजबूरी के कारण चुप रहते हों। लेकिन देश का हित राजनैतिक लाभ-हानि से सर्वोपरि है, यह बात उन्हें भी समझनी चाहिए।

भाजपा में केवल गिरिराज सिंह ही नहीं हिमंता बिस्वासरमा जैसे नेता भी हैं, जो शिक्षित और अतिवादी होने में फर्क नहीं कर पा रहे। दिल्ली विस्फोट पर बोलते हुए असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने कहा, 'हमें सिखाया गया था कि अगर लोग शिक्षित होंगे, तो कोई अतिवाद नहीं रहेगा। लेकिन आपने देखा कि शिक्षा उन्हें और खतरनाक बनाती है। डॉक्टर बनना उन्हें और भी खतरनाक बनाता है। एक व्यक्ति कभी अपना रंग नहीं बदलता। जो लोग वंदे मातरम नहीं गा सकते, वे भारतीय नहीं हो सकते। अगर आप भारतीय नहीं हो सकते, तो आप भारत माता को कभी अपनी मां नहीं मान सकते। इसलिए, हमें लगातार सतर्क रहने की ज़रूरत है।'

अपनी राजनैतिक सहूलियत से श्री बिस्वासरमा ने दिल्ली धमाके और वंदे मातरम को आपस में जोड़ दिया, जबकि इसकी कोई तुक नहीं है। दिल्ली आतंकी हमले में डॉ.मोहम्मद उमर को मुख्य आरोपी माना जा रहा है। लेकिन इसका ये मतलब कतई नहीं है कि आरोपी ने उच्च शिक्षा हासिल की, इसलिए वो अधिक खतरनाक बन गया। चरमपंथ में अक्सर लोगों का ब्रेनवॉश यानी उन्हें मानसिक तौर पर पूरी तरह प्रभावित कर बड़ी घटनाओं को अंजाम देने के लिए तैयार किया जाता है। ऐसे लोग अनपढ़, गरीब भी हो सकते हैं और उच्च शिक्षित और संपन्न भी। हिमंता बिस्वासरमा ये बात अच्छे से जानते होंगे कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और विश्व हिंदू परिषद जैसे अतिवादी हिंदू संगठनों में कई उच्चशिक्षित बल्कि पेशे से चिकित्सक शामिल हैं। डा. मोहन भागवत, डा. प्रवीण तोगड़िया, डा. माया कोडनानी ऐसे कई नाम गिनाए जा सकते हैं, जो हिंदुत्व के पैरोकार हैं। तो क्या हिमंता बिस्वासरमा इन्हें भी अतिवादी मानेंगे या इनके लिए उनके मानक कुछ और होंगे।

शिक्षा को आतंकवाद और चरमपंथ से जोड़ना और यह कहना कि शिक्षा खतरनाक बनाती है, असल में पूरे समाज को मध्ययुग की तरफ धकेलने जैसी बात है। सामान्य आदमी इस तरह की बात करे तो उसे समझाया जा सकता है, लेकिन मुख्यमंत्री जैसे जिम्मेदार पद पर बैठकर ऐसी बेतुकी बातें करना लोकतंत्र के लिए खतरनाक है। भाजपा नेता और पूर्व आईपीएस अधिकारी किरण बेदी ने भी कहा कि... हमें इन गद्दारों की पहचान करनी होगी। वे देश में पढ़ते हैं, सारे लाभ लेते हैं और फिर देश छोड़ देते हैं, इन गद्दारों की पहचान करना हमारी ज़िम्मेदारी है।

इस तरह के बयान संदेह पैदा करने में मदद करते हैं। क्योंकि अब अल्पसंख्यकों या पड़ोसी देशों से पढ़ने आए छात्रों को कदम-कदम पर अपनी वफादारी की मिसाल देनी पड़ेगी। वैसे भी इस पूरे प्रकरण में अल-फ़लाह विश्वविद्यालय का नाम जिस तरह आया है, उससे संस्थान पर संकट आ गया है। जानकारी है कि इस हमले का मुख्य आरोपी डा.मोहम्मद उमर विस्फोट में मारा गया है, लेकिन उसका और एक अन्य डॉक्टर का संबंध फरीदाबाद में मिले विस्फोटक से जोड़ा जा रहा है। ये दोनों अल-फ़लाह विश्वविद्यालय में ही कार्यरत थे। अल-फ़लाह विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. (डॉ.) भूपिंदर कौर आनंद ने एक बयान में कहा, विश्वविद्यालय का 'इन व्यक्तियों से कोई संबंध नहीं है, सिवाय इसके कि वे विश्वविद्यालय में अपनी आधिकारिक क्षमता में कार्यरत थे।' विश्वविद्यालय ने ऑनलाइन प्रसारित हो रही 'निराधार और भ्रामक कहानियों' की निंदा करते हुए कहा कि इनका उद्देश्य उसकी प्रतिष्ठा और साख को धूमिल करना है।

सोचने वाली बात है कि दो लोगों के कारण पूरे विश्वविद्यालय को संदेह की नजर से देखकर कितने लोगों के साथ अन्याय किया जा रहा है। दरअसल यह वक्त तमाम तरह की बयानबाजियों से परहेज करने का है। जांच एजेंसियां अपना काम करें और दोषियों को पकड़ें, यही देश के हित में है।

नक्कालों से सावधान, क्योंकि खेद नहीं है

दुनियादारी

■ **सर्वमित्रा सुरजन**

ब्रिटिश प्रसारक बीबीसी के प्रमुख टीम डेवी और समाचार की मुख्य कार्यकारी अधिकारी डेबोरा टर्नेस ने रविवार 9 नवंबर को अपने पद से इस्तीफा दे दिया। दरअसल बीबीसी के एक कार्यक्रम में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के भाषण को गलत संदर्भ में दिखाने के आरोप लगे थे। व्हाइट हाउस ने बीबीसी को 'प्रोपेगैंडा मशीन' (प्रचार मशीन) करार दिया था। बीबीसी के पैनोरमा कार्यक्रम में ट्रंप के भाषण के दो हिस्सों को एक साथ इस तरह संपादित किया गया था, मानो ट्रंप जनवरी 2021 के कैपिटल हिल दंगों को प्रोत्साहित कर रहे थे। ज्ञात हो कि ट्रंप उस वक्त राष्ट्रपति चुनाव हार गए थे और तब उनके समर्थकों ने कैपिटल हिल पर हमला किया था, जो अमेरिका के लोकतंत्र के लिए बड़ी चुनौती माना गया था। इस प्रकरण पर बीबीसी की पैनोरमा डॉक्यूमेंट्री में ट्रंप अपने समर्थकों से कहते हुए दिखाई दिए थे कि 'हम कैपिटल तक पैदल चलेंगे' और 'पूरी ताकत से लड़ेंगे'। लेकिन बाद में यह बताया गया कि यह टिप्पणी ट्रंप ने अपने भाषण के एक अलग हिस्से में की थी। असल में ट्रंप ने कहा था कि वे 'हमारे बहादुर सीनेटरों और कांग्रेसियों का उत्साहवर्धन करेंगे।' बीबीसी की इस डॉक्यूमेंट्री पर ट्रंप की प्रेस सचिव कैरोलिन लेविट ने बीबीसी को '100 प्रतिशत फर्जी खबर' बताया था। इसके दो दिन बाद ही बीबीसी में दो बड़े इस्तीफे हो गए।

गौरतलब है कि बीबीसी पर हाल के वर्षों में निष्पक्ष समाचारों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता बनाए रखने में विफल रहने के, साथ ही ध्रुवीकृत हो चुके राजनीतिक और सामाजिक माहौल में तालमेल न बिठा पाने के आरोप लगे हैं। हालांकि बीबीसी सीईओ डेबोरा टर्नेस ने कर्मचारियों को भेजे एक ईमेल में कहा कि हालांकि गलतियां हुई हैं, पर 'मैं बिल्कुल स्पष्ट कर देना चाहती हूं कि बीबीसी न्यूज़ के संस्थागत रूप से पक्षपाती होने के हालिया आरोप गलत हैं।'

बीबीसी के इस पूरे प्रकरण को यहां उद्धृत करने का मकसद पाठक समझ ही चुके होंगे। मीडिया जगत में विश्वसनीयता केवल शब्द नहीं है, उसका प्राणतत्व है। भाषा में अशुद्धि हो सकती है, लिखने का तरीका अरुचिकर हो सकता है, तथ्यों का दोहराव हो सकता है। लेकिन खबर गलत और पक्षपातपूर्ण नहीं होनी चाहिए, यही पत्रकारिता की पहली और आखिरी शर्त है। मानवीय या तकनीकी त्रुटि से खबर गलत बन भी गई तो भूल सुधार कर पाठकों तक सही जानकारी पहुंचानी चाहिए। बीबीसी अभी इन बुनियादी शर्तों पर टिका नजर आ रहा है, लेकिन भारत के मीडिया के संदर्भ में क्या यही दावा किया जा सकता है, यह कठिन सवाल हमारे सामने है।

2007 में कनाडा के पत्रकार क्रेग सिल्वरमैन की एक किताब आई थी : रिग्रेट द एरर यानी त्रुटि के लिए खेद है। इस किताब में उन्होंने बताया है कि त्रुटि के लिए खेद है, यह वाक्य लगभग हर रोज हम अखबारों और पत्रिकाओं में देखते हैं। सिल्वरमैन ने बड़े रोचक तरीके से कभी हास्यास्पद, कभी चौंकाने वाली और कभी-कभी परेशान करने वाले पत्रकारिता की गलतियों और सुधारों का संग्रह इस किताब में दिया है। इसमें सभी प्रकार की अशुद्धियां हैं, एक जीवित और स्वस्थ व्यक्ति का मृत्युलेख छापने से लेकर पूर्ण और घोर नैतिक चूक तक सबका उल्लेख है। इस किताब में मीडिया की गलतियों के इतिहास के जरिए समकालीन पत्रकारिता में जनता के प्रति जवाबदेही की कमी की गंभीर प्रवृत्ति को उकेरा गया है। शायद इस समय भारतीय मीडिया के स्वघोषित धुरंधरों और खुद को फिल्मी कलाकारों या खिलाड़ियों की तरह सेलिब्रिटी मानने वाले पत्रकारों को इस किताब पर एक नजर दौड़ाने की जरूरत है। क्योंकि खबरों को सबसे पहले ब्रेक करने के फेर में बिना तथ्यों की जांच के खबर दे दी जाती है और अगर खबर गलत निकले तो डिलीट कर दी जाती है। न कोई भूल सुधार, न कोई खेद प्रकट। मानो अपनी गलती मान लेंगे तो ओहदा थोड़ा छोटा हो जाएगा। ये उथले पत्रकार इतना भी विचार नहीं करते कि आखिर इनका ये ओहदा बना कैसे, जनता इनके कहे-लिखे पर यकीन क्यों करती है।

> **भारतीय पत्रकारिता के पुरखों ने जिन कष्टों के साथ जनता की आवाज को उठाने का काम किया है, उसी प्रताप की फसल आज के पत्रकार काट रहे हैं। आजादी के वक्त अंग्रेजी शासन की नाराजगी के खतरे मोल लेकर, कम साधनों के साथ पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित होते थे, ताकि जनता में आजादी और बाकी अधिकारों के लिए जागरुकता लाई जाए। आजादी के बाद भी यह सिलसिला जारी रहा।**

दरअसल भारतीय पत्रकारिता के पुरखों ने जिन कष्टों के साथ जनता की आवाज को उठाने का काम किया है, उसी प्रताप की फसल आज के पत्रकार काट रहे हैं। आजादी के वक्त अंग्रेजी शासन की नाराजगी के खतरे मोल लेकर, कम साधनों के साथ पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित होते थे, ताकि जनता में आजादी और बाकी अधिकारों के लिए जागरुकता लाई जाए। आजादी के बाद भी यह सिलसिला जारी रहा, हालांकि पूंजीपतियों के हाथों में मीडिया की बागडोर जैसे-जैसे आती गई, प्रायोजित खबरों, इकतरफा विश्लेषण, सरकारी मदद की अपेक्षा में चापलूसी का सिलसिला बढ़ता गया। फिर भी जब तक प्रिंट मीडिया का जमाना था, आंखों का पानी बचा रहा, कि पाठक को भी जवाब भी तो देना है। प्रिंट मीडिया में पोस्ट और डिलीट जैसे त्वरित विकल्प नहीं रहते हैं। मगर इलेक्ट्रानिक मीडिया का चलन बढ़ने यानी टीवी पर निजी चैनलों की बाढ़ आने के बाद से तो जनता तक सही सूचनाएं पहुंचाने की जवाबदेही से चैनल मालिकों और उनके बंधुआ पत्रकारों ने बिल्कुल ही हाथ झटक दिया। अब जनता को टार्गेट (लक्ष्य) की तरह देखा जाता है कि इसे कैसे अपने चंगुल में फंसाया जाए। शुरुआत नाग-नागिन, भूतिया महल, चमत्कारी बाबा जैसे समाचारों से हुई, जनता को समाचारों के बीच इस तरह का मनोरंजन पसंद आ गया तो फिर समाचारों को पूरी तरह किनारे कर केवल मनोरंजन आगे कर दिया गया और अब नफरत ही समाचारों का प्रधानतत्व हो गई है। टीवी की बहसों के बीच मार-पीट, अपशब्दों का प्रयोग होने लगे तो जनता को समझ लेना चाहिए कि उसे किस कदर गिरा हुआ मानकर उसे खबरें परोसी जा रही हैं। यह पत्रकारिता के पेशे का अपमान तो है ही जनता का तिरस्कार भी है। अब अपना सम्मान अपने हाथों रहता है, तो जनता को ही इस पर सोचना होगा।

फिलहाल जिस भाजपा के दौर में पत्रकारिता में आए सबसे बड़े क्षरण को देखा गया है, बुधवार को उस पर भाजपा सांसद हेमा मालिनी तक परेशान दिखीं। दरअसल उनके पति और दिग्गज अभिनेता धर्मेंद्र को लगभग तीन हफ्ते पहले सांस लेने में तकलीफ़ और निमोनिया होने के कारण अस्पताल में भर्ती कराया गया था और बुधवार की सुबह धर्मेंद्र को अस्पताल से घर ले जाया गया है। लेकिन मंगलवार को आज तक, इंडिया टुडे इन सबमें धर्मेन्द्र की मौत की खबर आ गई। इसके साथ ही धर्मेन्द्र का फिल्मी जीवन, निजी जीवन सब पर सामग्री भी दे दी गई। इंडिया टुडे ने तो बाकायदा पोस्ट में लिखा कि उनकी टीम ने इस खबर की पुष्टि की है। इसके बाद धर्मेन्द्र को सोशल मीडिया पर श्रद्धांजलियां भी दी जाने लगीं। इससे नाराज होकर हेमा मालिनी ने लिखा कि 'जो हो रहा है उसे माफ़ नहीं किया जा सकता है! ज़िम्मेदार चैनल ऐसे व्यक्ति के बारे में झूठी ख़बर कैसे फ़ैला सकते हैं जिस पर इलाज का असर दिख रहा है और वह ठीक हो रहा है? यह बेहद अपमानजनक और गैर ज़िम्मेदाराना है। कृपया परिवार और उसकी निजता का सम्मान करें।' धर्मेन्द्र की बेटी ईशा देओल और अभिनेता शत्रुघ्न सिन्हा ने भी मीडिया की आलोचना की है।

जब खुद पर बीतती है तो नाराजगी होती है। हेमा मालिनी समेत अब पूरी भाजपा को सोचना चाहिए कि जो भस्मासुर उन्होंने खड़ा किया है, वो कभी भी उनके सिर पर हाथ रख सकता है। किसान आंदोलन, शाहीन बाग, ऑपरेशन सिंदूर जैसे अनेक मौकों पर मीडिया में झूठी खबरें चलीं। सोशल मीडिया भी फर्जी खबरें धड़ल्ले से चलाता है। अभी दिल्ली के आतंकी हमले में गलत तस्वीरें दिखाई गईं, जो 2024 में लेबनान के बेरूत में हुए इजरायली एयरस्ट्राइक की तस्वीरें हैं। बिहार चुनाव में भी ऐसी झूठी खबरें खूब चलीं। सरकार ने लोगों से अपील की है कि किसी भी तस्वीर या वीडियो को साझा करने से पहले उसकी सत्यता की जांच करें। हालांकि पहले सरकार को सोचना चाहिए कि उससे कहां चूक हुई है, जो अब खबरों को भी परखने की नौबत आ गई। नकली उत्पाद से बचने के लिए जिस तरह नक्कालों से सावधान की चेतावनी बड़े अक्षरों में लगाई जाती है, ताकि ग्राहक झांसे में न आए। क्या अब नकली खबरों से बचने के लिए भी ऐसी ही सावधानी की जरूरत है। या कि समाचार चैनलों को अब खबरें देने से पहले डिस्क्लेमर (अस्वीकरण) देना चाहिए कि दर्शक अपने खतरों पर हमारी खबरों पर यकीन करें।

'पेसा' की पहल से बढ़ेगा जनजातियों का गौरव

■ **राजकुमार सिन्हा**

वर्ष 2021 में घोषित 15 नवंबर के 'जनजातीय गौरव दिवस' को इस वर्ष एक से 15 नवंबर के बीच 'जनजातीय गौरव वर्ष पखवाड़ा' के रूप में मनाने की घोषणा की गई है। यह दिवस भगवान बिरसा मुंडा की जयंती (15 नवंबर 1875) के अवसर पर मनाया जाता है। यह केवल स्मरण-दिवस नहीं, बल्कि नीति निर्माण में आदिवासी दृष्टिकोण को केंद्र में लाने का अवसर है। समय आ गया है कि आदिवासी दृष्टिकोण को सही मंशा के साथ संवैधानिक प्रावधानों में लागू किया जाए।

उल्लेखनीय है कि केंद्र सरकार ने संविधान के भाग-9 के अनुच्छेद-243 से जुड़े 'पंचायत उपबंध (अनुसूचित क्षेत्रों का विस्तार) अधिनियम,1996' अर्थात 'पेसा कानून' बनाया था। 24 दिसंबर 1996 से प्रभावी यह कानून विशेष रूप से 'अनुसूचित क्षेत्रों' के लिए बनाया गया था, जहां सामान्य 'पंचायती राज व्यवस्था' सीधे लागू नहीं की जा सकती थी। 73 वें 'संविधान संशोधन अधिनियम, 1992' में पंचायतों के गठन, शक्तियां और कार्यप्रणाली का उल्लेख तो किया गया है, परंतु प्रावधान यह किया गया है कि 'यह भाग अनुसूचित क्षेत्रों और आदिवासी क्षेत्रों पर लागू नहीं होगा।' इसलिए इन क्षेत्रों के लिए अलग से कानून बनाने की आवश्यकता हुई।

'पांचवीं अनुसूची' में दिए गए प्रावधान 'अनुसूचित क्षेत्रों' और वहां के जनजातीय समुदायों के प्रशासन से संबंधित हैं। इसी के तहत राष्ट्रपति को अधिकार है कि वे इन क्षेत्रों के लिए विशेष प्रावधान करें। इन्हीं संवैधानिक प्रावधानों के आधार पर भारत सरकार ने 'पेसा कानून' लागू किया था जो आदिवासी क्षेत्रों में स्थानीय स्वायत्त सरकार की सशक्त नींव रखता है। यह संविधान के स्वशासन और आत्मनिर्णय के सिद्धांत को साकार करने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है। राज्य सरकार को 'अनुसूचित क्षेत्रों' में रहने वाले आदिवासी समुदायों को स्वशासन का अधिकार देना है, अर्थात ग्रामसभा को निर्णय लेने की सर्वोच्च इकाई बनाना है।

'अनुसूचित क्षेत्रों' में 'ग्राम सरकार' और 'जिला स्वायत्त परिषदें' केवल प्रशासनिक ढांचे नहीं हैं, बल्कि आदिवासी समुदायों के सांस्कृतिक अस्तित्व, आत्मनिर्णय और सतत विकास के संवैधानिक साधन हैं। स्थानीय स्वायत्तता में प्रमुख हैं- ग्रामसभा को भूमि, जल, वन संसाधनों के उपयोग, प्रबंधन और संरक्षण में निर्णय लेने का अधिकार और स्थानीय विकास योजनाओं की स्वीकृति और निगरानी का अधिकार, संसाधनों का प्रबंधन, लघु वनोपज, जलस्रोत, खनिज, चारागाह, ईंधन, मछली पालन आदि पर सामुदायिक नियंत्रण। परंपरागत न्याय व्यवस्था के अनुसार ग्रामसभा विवादों को निपटा सकती है। ग्रामसभा की अनुमति के बिना भूमि हस्तांतरण या अधिग्रहण नहीं किया जा सकता। ग्रामसभा से अनिवार्य परामर्श के बिना कोई विकास परियोजना शुरू नहीं की जा सकती।

'भारत जन आंदोलन' के विजय भाई कहते हैं कि 'पांचवीं अनुसूची' के ढांचे में केन्द्र और राज्य सरकारों तथा राज्यपालों को 'कृपालु पालनकर्ता' जैसा बनाया गया है। उनके मन में आया तो कोई कानून बनाएं, नहीं तो नहीं भी बनाएं, लेकिन संसद ने जो 'पेसा कानून' बनाया है वह 'पांचवीं अनुसूची' के 'कृपालु पालनकर्ता' की बजाए एक स्वशासी, स्वाभिमानी ढांचे को स्थापित करता है। यह राज्य और केन्द्र सरकारों, राज्यपालों के विवेक पर निर्भर नहीं है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि 'पांचवीं अनुसूची' के क्षेत्रों में 'पेसा कानून' लागू होने के करीब 29 वर्षों बाद भी कुछ राज्यों ने इसके नियम नहीं बनाए हैं।

'पेसा कानून' का अर्थ है- 'स्थानीय स्वायत सरकार।' संविधान की 'सातवीं अनुसूची' के मुताबिक राज्य विधानमंडल को इस हेतु कानून बनाना पड़ेगा। प्रश्न उठता है कि संसद ने तब नियम क्यों नहीं बनाए? 'पांचवीं अनुसूची' के पैरा-3 के तहत संसद ने जो 'पेसा कानून' बनाया है, वह सिर्फ राज्य को निर्देश है। उससे ज्यादा संविधान इजाजत नहीं देता। संसद ने जो 'पेसा कानून' बनाया है वह केवल 'अनुसूचित क्षेत्र' में संविधान के भाग-9 को विस्तार देते हुए निर्देशित करता है कि राज्य सरकार कानून बनाकर उसे लागू करे। सवाल उठता है कि राज्य ने अब तक कानून क्यों नहीं बनाए?

> **'पेसा कानून' का अर्थ है- 'स्थानीय स्वायत सरकार।' संविधान की 'सातवीं अनुसूची' के मुताबिक राज्य विधानमंडल को इस हेतु कानून बनाना पड़ेगा। प्रश्न उठता है कि संसद ने तब नियम क्यों नहीं बनाए? 'पांचवीं अनुसूची' के पैरा-3 के तहत संसद ने जो 'पेसा कानून' बनाया है, वह सिर्फ राज्य को निर्देश है। उससे ज्यादा संविधान इजाजत नहीं देता।**

राज्य सरकारों ने 'पंचायत राज कानून' को 'पेसा' से जोड़ते हुए कुछ मामूली कानूनों में थोड़ा संशोधन कर नियम बना दिए थे। 'पांचवीं अनुसूची' क्षेत्र के 10 प्रदेशों में 1997 तक कुछ-न-कुछ नियम बनाए गए थे, लेकिन ग्रामसभा का अधिकार क्षेत्र व्यापक नहीं था। अब सरकार ग्रामसभा को थोड़ा कार्यभार देने की जुगत में है, लेकिन वह 'पेसा' सम्मत स्वशासी हो ही नहीं सकता, क्योंकि मूल कानून 'पंचायत राज कानून' ही है। हम कितना भी प्रयास कर लें, ग्रामसभा को सक्षम कर ही नहीं सकते, क्योंकि वह स्वशासी नहीं है। 'अनुसूचित क्षेत्र' में 'पंचायत राज कानून' लागू करेंगे तो वह संविधान सम्मत नहीं हो सकता। 'पंचायत राज कानून' संविधान की 'सातवीं अनुसूची' के तहत है इसलिए हर वाक्य में अंग्रेजी भाषा का 'मे' (एमएवाई) शब्द उपयोग किया गया है, अर्थात इसे लागू करना राज्य सरकार के 'विवेक' पर निर्भर है।

'पेसा कानून' संविधान की 'पांचवीं अनुसूची' से निकालकर भाग-9 में प्रस्तावित है, जहां राज्य सरकार को 'विवेक' जैसा कोई बहाना नहीं है। इसलिए 'पेसा कानून' के हर वाक्य में अंग्रेजी के 'शैल' (एसएचएएलएल) शब्द का उपयोग किया गया है जो बाध्यकारी है। सामान्य क्षेत्रों में एक समान 'पंचायती राज व्यवस्था' चलेगी, लेकिन अनुसूचित क्षेत्रों के लिए अलग ढांचा आवश्यक होगा। इसलिए संसद को यह संवैधानिक अधिकार दिया गया कि वह अनुसूचित क्षेत्रों में पंचायतों की विशेष व्यवस्था बनाए। इसका अभिप्राय था कि 'जनजातीय और अनुसूचित क्षेत्रों में स्थानीय स्वशासन लागू करने के लिए, उनके सामाजिक-सांस्कृतिक ढांचे और पारंपरिक ग्राम शासन प्रणाली के अनुरूप एक विशेष कानून बनाया जाए,' लेकिन नौकरशाहों की चालाकी से इस बाध्यकारी बात को 'विवेकाधीन' ढांचे में जोड़ देने से 'पेसा' का महत्व खो गया।

'पेसा' लागू होने पर निर्णय लेने की शक्ति ग्रामसभा को मिलती है, जैसे - भूमि उपयोग, खनन, शराब बिक्री, बाजार प्रबंधन, लघु वनोपज आदि। इससे नौकरशाहों और जनप्रतिनिधियों के अधिकार सीमित हो जाते हैं, इसलिए वे इसे लागू करने में ढिलाई या टालमटोल करते हैं। भारत की प्रशासनिक व्यवस्था ऊपर से नीचे चलती है, जबकि 'पेसा' नीचे से ऊपर की बात करता है। स्थानीय समुदायों को निर्णय लेने की शक्ति देना नौकरशाहों के लिए असुविधाजनक होता है। खनन, वनोपज और भूमि-अधिग्रहण जैसे क्षेत्रों से सरकारी और निजी कंपनियों के आर्थिक हित जुड़े हैं। अगर ग्रामसभा को वास्तविक अधिकार मिल जाएं, तो खनन और ठेकेदारी नेटवर्क पर रोक लग सकती है, जिससे कई राजनीतिक और आर्थिक हित प्रभावित होते हैं।

राज्यों ने अब तक 'पेसा' के नियम देर से या अधूरे बनाए हैं। जहां नियम बने भी हैं, वहां ग्रामसभा को सिर्फ सलाह देने वाला निकाय बनाकर रखा गया है, निर्णय लेने वाला नहीं। 'पेसा कानून' को नौकरशाहों और राजनेताओं के चक्रव्यूह से निकालने की जरूरत है। घोर केंद्रीकृत व्यवस्था से विकेंद्रीकृत व्यवस्था बनाने के लिए मजबूत राजनीतिक इच्छाशक्ति अनिवार्य है। 'अनुसूचित क्षेत्रों' से 'पंचायती राज कानून' को खारिज कर राज्य विधानमंडल 'पेसा' सम्मत कानून बनाएं, जिसके तहत ग्रामसभा तथा जिला परिषद को स्वशासी दर्जा देकर शक्तिशाली बनाए जाने की दिशा में काम हो। आज का 'पंचायती राज कानून' ज्यादा-से-ज्यादा सिर्फ शीर्ष संचालित विकास की एक सक्रिय और निर्वाचित एजेंसी की रचना कर सकता है।

(लेखक 'बरगी बांध विस्थापित संघ' के वरिष्ठ कार्यकर्ता हैं।)

ललित सुरजन की कलम से

विधानसभा नतीजों के संकेत

'नरेन्द्र मोदी की एक विराट छवि इस बीच गढ़ने की निरंतर कोशिशें हुईं जिसमें कारपोरेट घरानों व पूंजीमुखी मीडिया ने भी बढ़-चढ़ कर भूमिका निभाई। श्री मोदी को अपराजेय, लौहपुरुष, विकास पुरुष, कृष्ण, विवेकानंद जैसे विशेषणों से नवाजा गया। उनकी अशिष्टता की हद को छूती वाचालता, प्रकट नस्लवादी मानसिकता, व्यक्तिवादी अहंकार, पार्टी के ऊपर स्वयं को रखने की एक तरह की दृष्टता व प्रधानमंत्री पद की महत्वाकांक्षा- इन सबको उनके गुणों के रूप में प्रचारित किया गया। ऐसा हिटलर के उदय के समय जर्मनी में भी हुआ था। आज भी इस तथ्य को सहजता से भुला दिया गया कि 182 सीटों पर चुनाव लड़ने के लिए नरेन्द्र मोदी को एक भी अल्पसंख्यक उम्मीदवार उपयुक्त न जान पड़ा। पिछले चुनाव के दौरान उन्होंने जहां बार-बार मुख्य चुनाव आयुक्त का पूरा नाम लेकर उनके ईसाई होने को रेखांकित किया था, इस बार उन्होंने अहमद पटेल को सप्रयोजन बार-बार अहमद 'मियां' पटेल कहकर पुकारा। इससे नरेन्द्र मोदी के अल्पसंख्यक द्वेष का प्रमाण तो मिलता ही है, भाजपा का राष्ट्रीय पार्टी होने का दावा भी कमजोर पड़ता है।'

(देशबन्धु में 21 दिसम्बर 2013 को प्रकाशित सम्पादकीय)

https://lalitsurjan.blogspot.com/2012/12/blog-post_20.html

पावन प्रसंग

सफलता का भावार्थ धन दौलत संग्रहण नहीं

यह सर्वविदित सत्य है कि आपका संव्यवहार आपके व्यक्तित्व का दर्पण होता है। हर कार्य के संचालन संपादन में आपके व्यक्तित्व की परछाई स्पष्ट परिलक्षित होती है, आपका व्यवहार आपके चरित्र तथा स्वभाव के बारे में सब कुछ बता देता है, और उसका इसका बड़ा व्यापक प्रभाव भी दृष्टिगोचर होता है, व्यक्तित्व विकास न सिर्फ आपकी निजी जिंदगी में प्रभाव डालता है वरन आपकी व्यवसाय और लक्ष्य में भी सकारात्मक एवं प्रभावकारी होता है। जब आप एक अच्छे व्यक्तित्व और सकारात्मक विचारवान व्यक्ति होते हैं तो आप काफी उत्साही एवं आत्मविश्वास से भरपूर भी हो सकते हैं, और आत्मविश्वास से परिपूर्ण व्यक्ति जिंदगी में हर मुश्किल को पार कर एक सफल व्यक्तित्व का धनी हो जाता है। उसे हर जगह सफलता ही सफलता प्राप्त होती है। सफल व्यक्तित्व बनाने के लिए आप अपने व्यवहार को अत्यंत नम्र, शालीन और आत्मविश्वास से भरा ही रखें, किसी भी व्यक्ति से चाहे छोटा हो, बड़ा हो, अमीर हो, गरीब हो मिलते समय उसका यथायोग्य अभिवादन शिष्टाचारपूर्वक अवश्य करें। इससे आपकी पहुंच एवं प्रभाव का दायरा विस्तृत होने लगेगा, सफलता ही सफलता से आप आगे बढ़ने लगेंगे, किसी भी व्यक्ति से अशिष्टतापूर्वक व्यवहार न करें, आपको यदि यह महसूस होता है कि सामने वाला कुछ गलती पर है या गलत कार्य कर रहा है तो उस पर नाराज ही जाए न कर उसे बड़े ठंडे दिमाग से समझाइश दीजिए, इससे आपका प्रभाव गलत न होकर शानदार होने लगेगा।

प्रभावशाली व्यक्तित्व के निर्माण में समय की प्रतिबद्धता एवं समय पर कार्य करने की अदम्य लालसा का बड़ा महत्व है। यदि आप सही समय पर सही कार्य करेंगे एवं अपने संपूर्ण कार्य समय पर प्रतिपादित करने की आदत डालेंगे, तो कार्यों की सफलता की एक तरह से संपूर्णता दिखाई देने लगती है यदि कहीं मीटिंग या किसी व्यक्ति को अपने समय दिया है तो आप वहां समय पर ही पहुंच कर मीटिंग का संपादन करें, आज के युग में किसी को किसी का इंतजार करना पसंद नहीं आता है। ऐसे में काम की सफलता की गुंजाइश कम हो जाती है और किसी को किसी भी कार्य के लिए इंतजार करवाना अच्छे व्यक्तित्व के निर्माण के प्रतिकूल प्रभाव डालता है। यदि आप नौकरी में हैं,व्यवसाय में हैं या जन प्रतिनिधि हैं, तो लोगों की बातें सुनने का आप में पर्याप्त संयम भी होना चाहिए, यदि आप किसी व्यक्ति की बातें धैर्यपूर्वक सुनते हैं तो उसे आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली लगता है एवं कार्य की सफलता में संदेह नहीं रह जाता। अनावश्यक किसी भी व्यक्ति से बिना उसकी बात सुने समझे बहस करने की थोड़ी भी गुंजाइश न रखें, अन्यथा कार्य विपरीत स्वरूप भी ले सकता है। सामने वाला व्यक्ति यदि सचमुच गलत है तो ही अपनी बात आप रखें या बोले, इसमें महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि आप अपनी शक्ति एवं दुर्बलताओं को अच्छे से पहचाने और जाने। आपको जब अपनी शक्ति और क्षमता का पता होगा तो आप उस कार्य को अच्छे से कर पाएंगे एवं इससे आपके आत्मविश्वास में भी वृद्धि होगी, और अपनी कमजोरियों को सफलता के पीछे सुधार करने में सफल भी होंगे। आप प्रयास करें कि हमेशा मुस्कुराहट आपके चेहरे पर हो एवं आपका चेहरा चिड़चिड़ा या परेशान न दिखाई दे, क्योंकि यह नकारात्मक ऊर्जा का एक बड़ा प्रतीक है। यह सफलता में कठिनाई पैदा करने वाला कारक माना जाता है। मुस्कुराते हुए चेहरे से लोग प्रसन्न होकर उसकी बात सुनना चाहेंगे और यही एक ऐसा तत्व है जो आपके आत्मविश्वास को कई गुना बढ़ा देगा और आपकी सफलता में कोई गुंजाइश नहीं रह जाएगी।

-संजीव ठाकुर

आपके पत्र

वंदे मातरम राष्ट्रवाद की आध्यात्मिक प्रेरणा

बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित यह गीत उनकी प्रसिद्ध कृति आनंदमठ (1882) में शामिल किया गया था। 'वंदे मातरम' ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को एक भावनात्मक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक दिशा दी। यह गीत भारतीय राष्ट्रीयता का वह ज्योति-पुंज बन गया जिसने अंधकारमय औपनिवेशिक काल में प्रकाश फैलाया। आज भी जब इसकी धुन बजती है, तो प्रत्येक भारतीय के भीतर एक अलौकिक गर्व, श्रद्धा और कृतज्ञता का भाव जाग उठता है। यह केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि भविष्य के लिए प्रेरणा का स्रोत है—जो हमें यह सिखाती है कि जब तक 'वंदे मातरम' की भावना जीवित है, भारत की आत्मा अमर है।

इसने राष्ट्रवाद को केवल राजनीतिक विचार नहीं, बल्कि एक भक्ति-भावना में परिवर्तित किया। बंग-भंग आंदोलन से लेकर क्रांतिकारी संघर्षों तक यह गीत स्वतंत्रता सेनानियों की प्रेरणा बना। आज भी यह राष्ट्रीय सम्मान, एकता और स्वाभिमान का प्रतीक है। 'वंदे मातरम' ने भारत की आत्मा को जागृत किया और यह सदा हमारी राष्ट्रीय चेतना की धड़कन बना रहेगा।

'वंदे मातरम' ने औपनिवेशिक भारत में राष्ट्रवाद के बीज बोए और उन्हें एक ऐसे वृक्ष में परिवर्तित किया जिसकी छाया में भारत ने स्वतंत्रता का फल पाया। इसने यह सिद्ध किया कि जब कोई राष्ट्र अपनी संस्कृति, अपनी भाषा और अपनी मातृभूमि को आत्मा के रूप में पहचान लेता है, तो कोई भी बाहरी शक्ति उसे लंबे समय तक दास नहीं बना सकती। यह गीत भारतीय स्वतंत्रता का नहीं, बल्कि भारतीय आत्मजागरण का गीत है।

इस गीत ने भारतीय जनमानस को यह सिखाया कि स्वतंत्रता केवल अधिकार नहीं, बल्कि उत्तरदायित्व भी है—अपनी संस्कृति, अपनी मातृभूमि और अपने समाज के प्रति। 'वंदे मातरम' में गूंजती आवाज़ केवल एक कालखंड की नहीं, बल्कि युगों-युगों तक प्रेरणा देने वाली पुकार है। यह पुकार हमें बार-बार स्मरण कराती है कि राष्ट्र की सच्ची शक्ति उसकी एकता, उसकी आस्था और उसके स्वाभिमान में निहित है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान जब भी आंदोलन कमजोर पड़ता, 'वंदे मातरम' की गूंज लोगों में फिर से ऊर्जा भर देती। यह गीत लोगों के दिलों में इतना गहराई से बस गया कि यह स्वतंत्रता की प्रतीक ध्वनि बन गया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशनों में इसे गाना परंपरा बन गई। महात्मा गांधी ने इसे भारत की आत्मा का गीत कहा। हालांकि कुछ धार्मिक समुदायों ने इसकी कुछ पंक्तियों पर आपत्ति की, फिर भी अधिकांश भारतीयों के लिए यह राष्ट्र की भावना का सर्वोच्च प्रतीक बना रहा।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जब भारत का संविधान तैयार हुआ, तब 'वंदे मातरम' को राष्ट्रीय गीत के रूप में मान्यता दी गई, जबकि 'जन गण मन' को राष्ट्रीय गान के रूप में स्वीकृत किया गया। संविधान सभा की चर्चाओं में यह स्पष्ट किया गया कि 'वंदे मातरम' का सम्मान राष्ट्रगान के समान रहेगा, क्योंकि इसने भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष में अनुपम योगदान दिया था। आज भी जब यह गीत गाया जाता है, तो उसकी ध्वनि में वही जोश, वही भक्ति और वही मातृभाव झलकता है जो स्वतंत्रता सेनानियों के समय था। यह गीत हमें याद दिलाता है कि राष्ट्र केवल राजनीतिक सीमाओं का नाम नहीं, बल्कि एक जीवंत संस्कृति, एक साझा भावना और एक आत्मा है जो हमें एक साथ जोड़ती है।

-डॉ. प्रियंका सौरभ

प्रकाशक, मुद्रक : राजीव रंजन श्रीवास्तव द्वारा पत्रकार प्रकाशन प्रा. लि. के लिए 506, आई.एन.एस. बिल्डिंग, 9, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित एवं बीएफएल इंफोटेक लि., सी 9, सेक्टर-3, नोएडा से मुद्रित। सम्पादक : राजीव रंजन श्रीवास्तव, (पी.आर.बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार)। आर.एन.आई. नं. DELHIN/2008/24216. दिल्ली कार्यालय :फोन: 011-23718195,23357784, फैक्स: 011-43581404, नोएडा कार्यालय: फोन: 0120-4114404 फैक्स: 0120-4273770
ई-मेल: deshbandhudelhi@gmail.com वेब: www.deshbandhu.co.in

देशबन्धु

[अर्थ जगत]

सर्वाधिक बढ़ने वाले शेयर

एशियन पेंट्स	4.46 प्रतिशत
टेक महिंद्रा	3.34 प्रतिशत
टीसीएस	2.73 प्रतिशत
बजाज फिनसर्व	2.42 प्रतिशत
अडानी पोर्ट्स	2.14 प्रतिशत

सर्वाधिक घटने वाले शेयर

टाटा स्टील	1.30 प्रतिशत
टीएमपीवी	1.28 प्रतिशत
टीएमसीवी	0.79 प्रतिशत
बीईएल	0.64 प्रतिशत
कोटक बैंक	0.29 प्रतिशत

सर्राफा

सोना (प्रति दस ग्राम)स्टैंडर्ड	1,20,100
बिटुर	88,730
गिन्नी (प्रति आठ ग्राम)	39,795
चांदी (प्रति किलो) टंच हाजिर	1,48,275
वायदा	70,857
चांदी सिक्का लिवाली	900
बिकवाली	880

मुद्रा विनिमय

मुद्रा	क्रय	विक्रय
अमेरिकी डॉलर	77.85	90.26
पौंड स्टर्लिंग	105.22	122.04
यूरो	88.88	103.09
चीन युआन	8.4	13.63

अनाज

देसी गेहूँ एमपी	2400-3000
गेहूं दड़ा	3100-3200
आटा	2800-2900
मैदा	2900-2950
चोकर	2000-2100

मोटा आनाज

बाजरा	1300-1305
मक्का	1350-1500
ज्वार	3100-3200
जौ	1430-1440
काबुली चना	3500-4000

शुगर

चीनी एस	4280-4380
चीनी एम	4500-4600
मिल डिलीवरी	3620-3720
गुड़	4400-4500

दाल-दलहन

चना	5700-5800
दाल चना	7876.63
मसूर काली	8152.33
उड़द दाल	10369.04
मूंग दाल	10088.98
अरहर दाल	10583.98

अमेरिकी शुल्क की घोषणा से एमएसएमई पर बढ़ा खतरा

नई दिल्ली। सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) पर 50 प्रतिशत अमेरिकी शुल्क की घोषणा से खतरा मंडराने लगा है। देश के कुल निर्यात में 45 प्रतिशत से अधिक योगदान करने वाले इस क्षेत्र के सामने बड़ी आफत आ खड़ी हुई है। एमएसएमई उद्योग संगठनों ने अमेरिकी कदम का बड़ा असर होने की चिंता जताई है और सरकार से तत्काल हस्तक्षेप करने की मांग की है। इंडिया एसएमई फोरम के अध्यक्ष ने कहा कि शुल्क बढ़ने से सालाना 30 अरब डॉलर से अधिक का कारोबार खटाई में पड़ने की आशंका है।

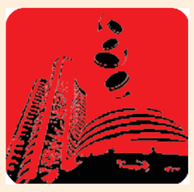

भारत-सऊदी अरब की साझेदारी आपसी विश्वास व साझा समृद्धि पर आधारित : गोयल

- भारत का चौथा सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है सऊदी अरब

नई दिल्ली, 12 नवम्बर (एजेंसियां)। केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने बुधवार को सऊदी अरब के निवेश मंत्री खालिद अल-फलीह और उनके प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात को लेकर जानकारी दी। केंद्रीय मंत्री गोयल ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा कि सऊदी अरब के निवेश मंत्री खालिद अल-फलीह और उनके प्रतिनिधिमंडल से मिलकर बेहद खुशी हुई।

केंद्रीय मंत्री गोयल ने दोनों देशों के संबंधों को लेकर कहा कि हमारी साझेदारी आपसी विश्वास और साझा समृद्धि पर आधारित होने के साथ लगातार मजबूत बनती जा रही है। उन्होंने एक्स पर लिखा, 'हमने भारत-सऊदी अरब के आर्थिक संबंधों को पहले से अधिक मजबूत बनाने, टेक्नोलॉजी, एनर्जी, इंफ्रास्ट्रक्चर और स्टार्टअप्स सहित अन्य क्षेत्रों में व्यापार और निवेश को बढ़ावा देने के तरीकों को लेकर चर्चा की।'

हमने भारत-सऊदी अरब के आर्थिक संबंधों को पहले से अधिक मजबूत बनाने व निवेश को बढ़ावा देने के तरीकों को लेकर चर्चा की : **गोयल**

भारत और सऊदी अरब के बीच द्विपक्षीय समझौते की बात करें तो हाल ही में, केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत और सऊदी अरब के संस्कृति मंत्री प्रिंस बदर बिन अब्दुल्ला बिन फरहान अल सऊद ने 9 नवंबर 2025 को रियाद में सांस्कृतिक सहयोग पर द्विपक्षीय समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। संस्कृति मंत्रालय द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार, इस समझौता ज्ञापन का उद्देश्य कला, विरासत, संगीत और साहित्य सहित विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ावा देना है, जिससे दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत बनाया जा सके।

यह साझेदारी सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देने, नियामक और नीतिगत अनुभवों को साझा करने और त्योहारों एवं आयोजनों में भागीदारी को सुगम बनाने पर आधारित है। यह समझौता सांस्कृतिक संस्थानों के बीच संचार को भी प्रोत्साहित करता है और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण से संबंधित ज्ञान और व्यवहार के आदान-प्रदान को बढ़ावा देता है।

'ग्रीन हाइड्रोजन' कम-कार्बन व आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था को दे रहा बढ़ावा

नई दिल्ली। केंद्र सरकार की ओर से बुधवार को दी गई जानकारी के अनुसार, 'ग्रीन हाइड्रोजन' कम-कार्बन और आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था की दिशा में परिवर्तन को बढ़ावा देते हुए भारत की स्वच्छ ऊर्जा रणनीति के केंद्र में बना हुआ है। दुनिया के सबसे अधिक प्रतिस्पर्धी रिन्यूएबल एनर्जी बेस पर बना नेशनल ग्रीन हाइड्रोजन मिशन घरेलू उत्पादन को बढ़ा रहा है, इनोवेशन को बढ़ावा दे रहा है और ग्रीन हाइड्रोजन और इसके डेरिवेटिव्स के लिए ग्लोबल मार्केट को ओपन कर रहा है। केंद्र के अनुसार, नेशनल हरित हाइड्रोजन मिशन (एनजीएचएम) का उद्देश्य देश को क्लीन हाइड्रोजन को लेकर ग्लोबल लीडर बनाने के साथ जरूरी क्षमता और इकोसिस्टम तैयार करना है। अगले 5 वर्षों में 2030 तक इस मिशन को ग्रीन हाइड्रोजन के उत्पादन के लिए लगभग 125 गीगावाट नई रिन्यूएबल एनर्जी कैपेसिटी और 8 लाख करोड़ रुपए से अधिक के निवेश की सहायता दी जाएगी। एनजीएचएम से 2030 तक हर वर्ष लगभग 50 एमएमटी ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में कमी आने की उम्मीद है।

वित्त मंत्री ने की एमएसएमई सेक्टर के प्रतिनिधियों से मुलाकात

प्री-बजट मीटिंग

नई दिल्ली, 12 नवम्बर (एजेंसियां)। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बुधवार को तीसरी प्री-बजट बैठक की अध्यक्षता की और सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) के प्रतिनिधियों के साथ आगामी बजट के इनपुट के लिए चर्चा की।

वित्त मंत्रालय ने कहा कि यह बैठक आने वाले केंद्रीय बजट 2026-27 को लेकर थी। वित्त मंत्री मंत्रालय ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर कहा, 'वित्त मंत्री ने आने वाले केंद्रीय बजट 2026-27 को लेकर सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों के प्रतिनिधियों के साथ तीसरी प्री-बजट बैठक की नई दिल्ली में अध्यक्षता की। इस बैठक में केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी और सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे। प्री-बजट चर्चा के तहत सरकार आने वाले बजट के इनपुट के लिए इंडस्ट्री के प्रतिनिधियों और अन्य पक्षकारों के साथ लगातार बैठक कर रही है। इससे पहले वित्त मंत्री ने किसान संगठनों और कृषि सेक्टर से जुड़े अर्थशास्त्रियों के साथ प्री-बजट बैठक की थी। दिन की शुरुआत में आई एसोचैम की रिपोर्ट के मुताबिक, सभी राज्यों में एमएसएमई के लिए निवेश माहौल सुधारने में डिजिटलाइजड और समयबद्ध सिंगल विंडो क्लियरेंज सिस्टम एक गेम-चेंजर साबित हो सकता है। रिपोर्ट में व्यावसायिक नियमों को सरल बनाने, अनुमोदन प्रणालियों में सुधार लाने और भारत के एमएसएमई के विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से सुधारों में तेजी लाने की आवश्यकता जताई गई है। कंपनी अधिनियम के तहत अनुपालन को आसान बनाने के लिए पंजीकृत एमएसएमई के लिए द्विवार्षिक या त्रैवार्षिक फाइलिंग साइकिल शुरू करने का भी सुझाव दिया गया है।

सौर ऊर्जा जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए भारत सोलर यात्रा ने अपनी आधिकारिक वेबसाइट लॉन्च की

नई दिल्ली 12 नवम्बर (एजेंसियां)। सतत और ऊर्जा-सुरक्षित भारत की दिशा में कदम बढ़ाते हुए, भारत सोलर यात्रा ने सौर ऊर्जा के प्रसार के अपने अभियान के तहत आज अपनी आधिकारिक वेबसाइट लॉन्च की, जो इसके सफर का एक अहम पड़ाव है। इस अवसर पर अरुण कुमार त्रिपाठी, पूर्व महानिदेशक, नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ सोलर एनर्जी (एनआईएसई) एवं मुख्य वैज्ञानिक एवं सलाहकार, नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (एमएनआरई), पुरुषोत्तम पांडे, संस्थापक, भारत सोलर यात्रा; चरनजीत सिंह, संस्थापक एवं सीईओ, इंटरटेक अर्थिंग सॉल्यूशंस तथा नरेश पिपलानी, सीईओ, परफेक्ट इम्पैक्ट डिज़ाइनिंग प्रा. लि. उपस्थित रहे।

भारत सोलर यात्रा की शुरुआत 79वें स्वतंत्रता दिवस, 15 अगस्त 2025 को अयोध्या से की गई थी। अब यात्रा का दूसरा चरण 16 नवम्बर 2025 से राजस्थान से प्रारंभ होगा। यह यात्रा 180 दिनों में लगभग 25,000 किलोमीटर की दूरी तय करते हुए देश के विभिन्न हिस्सों में जाएगी, जहाँ यह नागरिकों, संस्थानों और स्थानीय प्रशासनिक इकाइयों के साथ संवाद स्थापित करेगी ताकि सौर ऊर्जा अपनाने की दिशा में जागरूकता और भागीदारी को बढ़ाया जा सके।

टीएनएफडी फ्रेमवर्क वाली भारत की पहली इंटीग्रेटेड ट्रांसपोर्ट यूटिलिटी बनी अडाणी पोर्ट्स

अहमदाबाद, 12 नवम्बर (एजेंसियां)। अडाणी पोर्ट्स एंड स्पेशल इकोनॉमिक जोन लिमिटेड (एपीएसईजेड) ने बुधवार को कहा कि वह टास्कफोर्स ऑन नेचर-रेलेटेड फाइनेंशियल डिस्क्लोजर्स (टीएनएफडी) फ्रेमवर्क को अपनाने वाली भारत की पहली इंटीग्रेटेड ट्रांसपोर्ट यूटिलिटी बन गई है, जिससे नेचर-पॉजिटिव इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट का एक नया बेंचमार्क सेट हुआ है।

टीएनएफडी फ्रेमवर्क को अपनाने के साथ एपीएसईजेड, जैव विविधता के लिए काम करने वाले उन कुछ चुनिंदा ग्लोबल पोर्ट ऑपरेटर्स की लीग में शामिल हो गया है और विज्ञान-आधारित, पारदर्शी पर्यावरणीय डिस्क्लोजर्स के माध्यम से समुद्री इकोसिस्टम की सुरक्षा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को मजबूत कर रहा है।

- ग्लोबल, विज्ञान-आधारित पहल है टीएनएफडी

कंपनी ने कहा कि वह प्रकृति से संबंधित निर्भरताओं, प्रभावों, जोखिमों और अवसरों पर टीएनएफडी फ्रेमवर्क एलाइन्ड रिपोर्टिंग को लागू करने के लिए प्रतिबद्ध है।

टीएनएफडी एक ग्लोबल, विज्ञान-आधारित पहल है, जिसकी स्थापना संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम वित्त पहल (यूएनईपी एफआई), संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी), विश्व वन्यजीव कोष (डब्ल्यूडब्ल्यूएफ) और ग्लोबल कैनोपी के एक गठबंधन द्वारा की गई है, जिसका उद्देश्य कंपनियों को प्रकृति से संबंधित जोखिमों और अवसरों की पहचान, आकलन, प्रबंधन और प्रकटीकरण में मार्गदर्शन करना है। एपीएसईजेड के पूर्णकालिक निदेशक और सीईओ अश्विनी गुप्ता ने कहा, 'हमारा दृढ़ विश्वास है कि जिम्मेदार व्यावसायिक व्यवहार दीर्घकालिक सफलता का मंत्र है। टीएनएफडी फ्रेमवर्क को अपनाना, सीओपी30 में प्रकृति-संबंधी कॉर्पोरेट रिपोर्टिंग के लिए हमारे समर्थन को दर्शाता है।

सार संक्षेप

उम्मीद से अच्छी रही दीपावली पर स्मार्टफोन की बिक्री

मुंबई। इस साल दीपावली पर स्मार्टफोन्स की बिक्री उम्मीद से अच्छी रही है और जीएसटी की दरें कम होने से ग्राहकों की खरीदारी करने की क्षमता में सुधार हुआ है। यह जानकारी दुकानदार की ओर से बुधवार को दी गई। चंडीगढ़ में मोबाइल शॉप चलाने वाले दुकानदार अनिल ढींगरा ने कहा कि इस दीपावली के सीजन में मोबाइल फोन की बिक्री उम्मीद से अच्छी रही है। इसकी वजह जीएसटी सुधार होना है। हालांकि, मोबाइल पर जीएसटी में कोई बदलाव नहीं हुआ है, लेकिन अन्य चीजों पर टैक्स कम होने से लोगों के खर्च करने की क्षमता बढ़ गई है। उन्होंने आगे बताया कि इस साल 17 सीरीज में लॉन्च होने के कारण आईफोन का काफी क्रेज देखने को मिला है, जिससे आईफोन की बिक्री 40 प्रतिशत तक बढ़ी है। अन्य फोन की मांग भी काफी अच्छी रही है। 25,000 रुपए से लेकर 40,000 रुपए तक के स्मार्टफोन की बिक्री में बढ़त देखी गई है।

फोर्स मोटर्स की आय और लाभ में ऐतिहासिक वृद्धि

नई दिल्ली। फोर्स मोटर्स लिमिटेड, भारत की सबसे बड़ी वैन निर्माता और विशेष परिवहन वाहनों की अग्रणी कंपनी, ने 30 सितंबर 2025 को समाप्त दूसरी तिमाही और वित्त वर्ष 2025-26 की पहली छमाही के वित्तीय परिणाम जारी किए। इस अवधि में कंपनी ने राजस्व, लाभ और ईबीआईटीडीए मार्जिन, तीनों स्तरों पर अपना अब तक का सर्वोच्च प्रदर्शन दर्ज किया। ये उपलब्धि फोर्स मोटर्स की मजबूत उत्पाद श्रृंखला, बाज़ार में बढ़ती मांग और बेहतर संचालन क्षमता का प्रमाण है।

अटोवियो ने गुरुग्राम ट्रैफिक पुलिस के साथ मिलकर विशेष पहल शुरू की

गुरुग्राम। नवाचार और सामाजिक जिम्मेदारी को साथ लाने वाले कदम के रूप में, अटोवियो, एक भारतीय स्टार्टअप जो पहनने योग्य एयर प्यूरीफिकेशन तकनीक में अग्रणी है, ने गुरुग्राम ट्रैफिक पुलिस के साथ मिलकर क्लीन-एयर अवेयरनेस और डोनेशन ड्राइव का आयोजन एसजीटी यूनिवर्सिटी, गुरुग्राम में किया। इस कार्यक्रम की थीम थी 'उनकी रक्षा जो हमारी रक्षा करते हैं'। इस पहल के तहत, अटोवियो ने गुरुग्राम ट्रैफिक पुलिस के 50 अधिकारियों को पहनने योग्य एयर प्यूरीफायर दान किए, जो प्रतिदिन कठिन और प्रदूषित परिस्थितियों में शहर की सेवा करते हैं। इस प्रयास का उद्देश्य यह भी था कि कैसे टेक्नोलॉजी आधारित समाधान शहरी स्वास्थ्य और सुरक्षा को मजबूत करने में मदद कर सकते हैं।

व्यापार समझौते की उम्मीद से उछला बाजार

- सेंसेक्स 0.71 प्रतिशत चढ़कर 84,466.51 अंक पर रहा
- निफ्टी 0.70 फीसदी बढ़कर 25,875.80 अंक पर बंद

मुंबई, 12 नवम्बर (एजेंसियां)। अमेरिका के साथ व्यापार समझौते की उम्मीद और विदेशी संस्थागत निवेशकों के भारतीय बाजार में पूंजी लगाने से घरेलू शेयर बाजारों में बुधवार को लगातार तीसरे दिन तेजी देखी गई और बीएसई का 30 शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 595.19 अंक (0.71 प्रतिशत) चढ़कर 84,466.51 अंक पर पहुंच गया जो 29 अक्टूबर के बाद का उच्चतम स्तर है। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी-50 सूचकांक भी 180.85 अंक यानी 0.70 फीसदी बढ़कर 25,875.80 अंक पर बंद हुआ। यह 30 अक्टूबर के बाद का उच्चतम स्तर है।

अमेरिका और भारत के बीच व्यापार समझौता जल्द होने की उम्मीद में बाजार में निवेश धारणा मजबूत बनी हुई है। इसकेसाथ ही विदेशी संस्थागत निवेशकों ने शुद्ध रूप से इक्विटी तथा दूसरे इस्ट्रूमेंट्स में लिवाली की। इससे शेयर बाजार को बढ़त मिली।

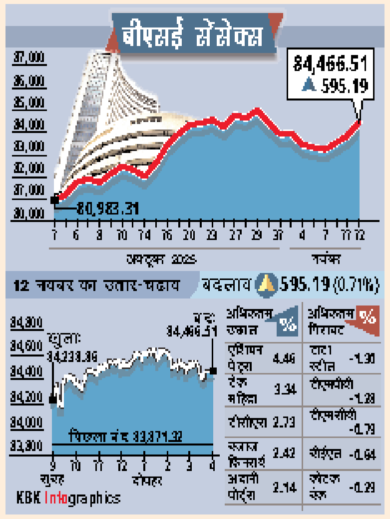

आईटी सेक्टर में सबसे अधिक तेजी देखी गई। इसके बाद ऑटो, फार्मा और मीडिया सेक्टरों का योगदान रहा। टिकाऊ उपभोक्ता उत्पाद और स्वास्थ्य क्षेत्रों में भी अच्छी तेजी देखने को मिली। रियलिटी और धातु क्षेत्रों में गिरावट रही। पीएल कैपिटल के मुख्य सलाहकार विक्रम कसाट ने बताया कि निकट भविष्य में निफ्टी की परीक्षा 26,000 अंक के आसपास होगी, हालांकि कुछ बड़ी कंपनियों के वित्तीय परिणामों और आर्थिक आंकड़ों से पहले बाजार में उतार-चढ़ाव देखा जा सकता है। मझौली और छोटी कंपनियों में भी निवेशक लिवाल रहे। निफ्टी मिडकैप-50 सूचकांक 0.83 प्रतिशत और निफ्टी स्मॉलकैप-100 सूचकांक 0.82 प्रतिशत की मजबूती के साथ बंद हुआ। एनएसई में कुल 3,200 कंपनियों के शेयरों में कारोबार हुआ जिनमें 1,927 के शेयर बढ़त में और 1,178 के लाल निशान में बंद हुए। वहीं, अन्य 95 कंपनियों के शेयर दिन भर के उतार-चढ़ाव के बाद अंततः अपरिवर्तित रहे। सेंसेक्स की 30 में से 22 कंपनियों के शेयरों में तेजी और अन्य आठ में गिरावट रही। मजबूत तिमाही परिणाम और अंतरिम लाभांश की घोषणा के बाद एशियन पेंट्स का शेयर सबसे अधिक 4.46 प्रतिशत चढ़ा। टेक महिंद्रा का शेयर 3.34 फीसदी, टीसीएस का 2.73, बजाज फिनसर्व का 2.42 और अडानी पोर्ट्स का 2.14 प्रतिशत की बढ़त में रहा।

एचसीएल टेक्नोलॉजीज में 1.54 प्रतिशत, भारती एयरटेल में 1.52, इंफोसिस में 1.36, ट्रेंट में 1.34, रिलायंस इंडस्ट्रीज में 1.19 और इटरनल में 1.03 प्रतिशत की तेजी रही। सनफार्मा, अल्ट्राटेक सीमेंट, टाइटन और बजाज फाइनेंस के शेयर भी हरे निशान में रहे।

एआई का 50 प्रतिशत से अधिक भारतीय कंपनियां डेटा सेंटर क्षमता में कर रही निवेश

मुंबई, 12 नवम्बर (एजेंसियां)। भारत में 50 प्रतिशत से ज्यादा कंपनियों का मानना है कि एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) वर्कलोड आने वाले तीन से पांच वर्षों में 50 प्रतिशत से अधिक बढ़ सकता है और इसे संभालने के लिए 51 प्रतिशत कंपनियां अगले 12 महीनों में नई डेटा सेंटर क्षमता में निवेश कर रही हैं। यह जानकारी बुधवार को जारी एक रिपोर्ट में दी गई।

नेटवर्किंग उपकरण बनाने वाली कंपनी सिस्को की ओर से जारी की गई रिपोर्ट में कहा गया कि 91 प्रतिशत भारतीय कंपनियां अपने सिस्टम में ऑटोनॉमस एआई एजेंट्स की तैनाती कर रही हैं और केवल 37 प्रतिशत ही उसे पूरी तरह से सुरक्षित रख पाने में सक्षम हैं।

रिपोर्ट में कहा गया कि वैश्विक स्तर पर, एआई को लागू करने वाले 13 प्रतिशत संगठन फंडामेंटल इन्फ्रास्ट्रक्चर के विकल्प चुनकर अपने समकक्षों से बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं, जिससे चक्रवृद्धि लाभ प्राप्त हो रहे हैं।

सिस्को ने रिपोर्ट में ऐसे संगठनों को 'पेससेटर' कहते हुए, कहा कि 97 प्रतिशत ग्लोबल पेससेटर्स ने यूस केस को अनलॉक करने और अधिक रिटर्न ऑन इन्वेस्टमेंट

- 91 प्रतिशत भारतीय कंपनियां अपने सिस्टम में ऑटोनॉमस एआई एजेंट्स की कर रही तैनाती

(आरओआई) प्राप्त करने के लिए एआई का उपयोग किया है। रिपोर्ट में कहा गया है, 'वे नेटवर्क-फर्स्ट नींव का निर्माण करते हैं, पावर इन्फ्रास्ट्रक्चर को प्राथमिकता देते हैं, निरंतर अनुकूलन करते हैं और पहले दिन से ही सुरक्षा का ध्यान रखते हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कर्मचारियों के लिए भी वर्कप्लेस में उनके काम करने के तरीकों को बदलने को लेकर एक अहम फैक्टर बन रहा है।

जॉब साइट इनडीड की एक लेटेस्ट स्टडी बताती है कि 71 प्रतिशत कर्मचारी एआई का इस्तेमाल करियर को प्लान करने और प्रॉब्लम को सॉल्व करने के लिए करते हैं।

प्राइवेट इंडस्ट्रीज, प्रयोगशालाओं व टेस्टिंग फैसिलिटी के लिए केंद्र ने लांच किया ऑनलाइन पोर्टल

नई दिल्ली, 12 नवम्बर (एजेंसियां)। उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय द्वारा बुधवार को दी गई जानकारी के अनुसार, प्राइवेट इंडस्ट्रीज, प्रयोगशालाओं और टेस्टिंग फैसिलिटी के लिए एक ऑनलाइन पोर्टल की सुविधा पेश की गई है। इस पोर्टल का इस्तेमाल गवर्मेंट अप्रूव्ड टेस्ट सेंटर्स के रूप में मान्यता प्राप्त करने के लिए आवेदन के लिए किया जा सकेगा।

आधिकारिक बयान के अनुसार, एप्लीकेशन ऑफिशियल पोर्टल के जरिए 30 नवंबर तक सबमिट की जा सकेंगी। यह कदम भारत के वेरिफिकेशन इकोसिस्टम और माप-तौल के इंफ्रास्ट्रक्चर के विस्तार की दिशा में महत्वपूर्ण है, जो व्यापार में एक्युरेसी, ट्रांसपैरेंसी और फेयरनेस को बढ़ावा देगा। मंत्रालय की ओर से कहा गया, 'प्रॉपर टेस्टिंग इक्विप्मेंट, कैलिब्रेशन फैसिलिटी और क्वालिफाइड स्टाफ वाले संगठनों को जीएटीसी मान्यता के लिए आवेदन करने के लिए आमंत्रित किया जाता है। ऑनलाइन एप्लिकेशन प्रॉसेस का उद्देश्य व्यवसायों के लिए अप्लाई करने को आसान बनाना है। इसके अलावा, उनके लिए डिजिटल पोर्टल के जरिए तेज, ट्रांसपैरेंट अप्रूवल्स को सुनिश्चित करना है।'

आधिकारिक बयान में मान्यता प्राप्त जीएटीसी को 18 तरह के तौल और माप उपकरणों को वेरिफाई करने के लिए अधिकृत किया जाएगा। इनमें वॉटर मीटर, स्फिग्मोमैनोमीटर, क्लिनिकल थर्मामीटर, ऑटोमैटिक रेलवेब्रिज, टेप मेजर, लोड सेल, बीम स्केल, काउंटर मशीन, सभी श्रेणियों के भार, गैस मीटर, ऊर्जा मीटर, नमी मीटर, वाहनों के लिए स्पीड मीटर, ब्रेथ एनालाइजर, मल्टीडायमेंशनल मेजरिंग इंस्ट्रूमेंट, फ्लो मीटर शामिल हैं। इसके अलावा, 150 किलोग्राम तक के भार के साथ एक्युरेसी क्लास 3 के नॉन-ऑटोमैटिक वेइंग इंस्ट्रूमेंट और एक्युरेसी क्लास 4 के नॉन-ऑटोमैटिक वेइंग इंस्ट्रूमेंट शामिल हैं।

तीन साल में 17 करोड़ टन बढ़ सकती है सीमेंट उत्पादन क्षमता : क्रिसिल

मुंबई, 12 नवम्बर (एजेंसियां)। देश में सीमेंट उत्पादन क्षमता में वित्त वर्ष 2027-28 तक तीन साल में 16-17 करोड़ टन की वृद्धि की संभावना है जो पिछले तीन वित्त वर्ष के 9.5 करोड़ टन की क्षमता वृद्धि के मुकाबले 75 प्रतिशत अधिक है।

बाजार अध्ययन एवं साख निर्धारक एजेंसी क्रिसिल ने बुधवार को जारी एक रिपोर्ट में यह बात कही। उसने बताया कि मजबूत मांग और उच्च क्षमता दोहन को देखते हुए उम्मीद है कि सीमेंट कंपनियां अपनी क्षमता बढ़ाएंगी। हालांकि इसके लिए बड़ी पूंजी आवश्यकता होगी। साथ ही अधिकतर मामलों में मौजूदा कंपनियों के ही क्षमता विस्तार में उम्मीद दिख रही है। क्रिसिल ने 17 सीमेंट कंपनियों की योजनाओं और बैलेंसशीट के अध्ययन के आधार पर यह बात कही है। इन 17 सीमेंट कंपनियों की संयुक्त उत्पादन क्षमता देश के कुल 66.8 करोड़ टन सालाना क्षमता का 85 प्रतिशत है।

- पिछले तीन साल में देश में सीमेंट का उत्पादन 9.5 प्रतिशत वार्षिक औसत दर से बढ़ा

मजबूत मांग के कारण रिपोर्ट में कहा गया है कि पिछले तीन साल में देश में सीमेंट का उत्पादन 9.5 प्रतिशत वार्षिक औसत दर से बढ़ा है। इसमें बुनियादी ढांचा और आवास क्षेत्र की मुख्य भूमिका रही है। इसके परिणाम स्वरूप पिछले वित्त वर्ष में क्षमता दोहन एक दशक के 65 प्रतिशत की औसत के मुकाबले बढ़कर 70 प्रतिशत पर पहुंच गया।

क्रिसिल रेटिंग्स के आनंद कुलकर्णी ने कहा कि वित्त वर्ष 2025-26 से 2026-28 के बीच हर साल सीमेंट की मांग में तीन-चार करोड़ टन की वृद्धि होने की उम्मीद है। इससे क्षमता में भी मजबूत वृद्धि देखने के लिए मिलेगी, हालांकि यह हर साल एक जैसी नहीं होगी। मौजूदा वित्त वर्ष में सात से 7.5 करोड़ टन अतिरिक्त उत्पादन शुरू होगा जिससे निकट भविष्य में क्षमता दोहन के अनुपात में कमी आएगी। लेकिन तीन साल में उत्पादन क्षमता विस्तार के अनुरूप हो जाएगा। क्रिसिल रेटिंग्स के एसोसिएट डॉयरेक्टर पार्थ शाह ने कहा कि सीमेंट कंपनियों के अगले तीन साल में 1.2 लाख करोड़ के पूंजीगत निवेश की संभावना है।

कल्पमेधा

बुरा व्यक्ति उस समय और भी बुरा हो जाता है, जब वह अच्छा होने का ढोंग रचता है।

– फ्रांसिस बेकन

आपदा का जलवायु

एक तरफ जलवायु परिवर्तन से उपजा संकट लगातार बढ़ रहा है, तो दूसरी ओर इससे निपटने के लिए वैश्विक स्तर पर प्रयासों की गति धीमी पड़ रही है। दुनिया भर में हो रहे नए-नए अध्ययन और वैज्ञानिक शोध चेतावनी देते रहे हैं कि अगर समय रहते इस दिशा में प्रभावी उपाय नहीं किए गए, तो निकट भविष्य में इसके परिणाम भयावह हो सकते हैं। पिछले कुछ वर्षों से जलवायु परिवर्तन का भारत समेत पूरी दुनिया में प्रभाव साफ दिखने लगा है। ब्राजील के बेलेम में आयोजित काप 30 सम्मेलन में बुधवार को जारी 'जलवायु जोखिम सूचकांक-2026' की रपट में कहा गया है कि जलवायु आपदाओं से सबसे अधिक प्रभावित देशों में भारत नौवें स्थान पर है। पिछले तीन दशकों में देश में जलवायु आपदाओं के कारण करीब अस्सी हजार लोगों की जान जा चुकी है। सरकार की ओर से इस संकट से निपटने को लेकर किए जा रहे दावों के बीच ये आंकड़े वास्तव में चिंताजनक हैं। इससे एक बात तो स्पष्ट है कि सरकारी प्रयासों को अभी और व्यापक करने तथा उन्हें गति देने की जरूरत है।

रपट के मुताबिक, जलवायु आपदाओं से वर्ष 1995 से 2024 तक लगभग 170 अरब अमेरिकी डालर का आर्थिक नुकसान हुआ है। जान-माल का सबसे ज्यादा नुकसान बाढ़, चक्रवात, सूखा और तेज गर्मी के कारण हुआ है। इसके पीछे बढ़ता वैश्विक ताप भी एक बड़ा कारक है, जो जलवायु परिवर्तन का ही नतीजा है। भारत में यह स्थिति निरंतर खतरे का संकेत दे रही है, क्योंकि बार-बार होने वाली मौसमी आपदाओं से जहां विकास की गति कमजोर होती है, वहीं आम लोगों की आजीविका भी प्रभावित होती है। रपट में कहा गया है कि पिछले वर्ष भारत में भारी बारिश और अचानक आई बाढ़ से अस्सी लाख से अधिक लोग प्रभावित हुए। हालांकि, जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए भारत ने नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देने, कार्बन उत्सर्जन कम करने और वन आवरण बढ़ाने जैसे कई कदम उठाए हैं, लेकिन इन्हें जमीनी स्तर पर प्रभावी तरीके से अमल में लाने की जरूरत है।

अगर वैश्विक स्तर पर बात करें, तो पिछले तीन दशकों में नौ हजार से अधिक मौसमी आपदाओं ने आठ लाख से ज्यादा लोगों की जिंदगी लील ली है। यह बात छिपी नहीं है कि जलवायु परिवर्तन का सबसे ज्यादा असर उन्हीं विकासशील देशों को झेलना पड़ रहा है, जिनकी वैश्विक कार्बन उत्सर्जन में भागीदारी सबसे कम है। विकासशील देश कमजोर सहन क्षमता और अनुकूलन के सीमित संसाधनों के कारण ज्यादा प्रभावित हो रहे हैं। भारत सहित कई विकासशील देशों में जलवायु आपदाएं सामान्य स्थिति बनती जा रही हैं, जिसके लिए तत्काल और व्यापक वित्त पोषित अनुकूलन उपायों की जरूरत है। यह जगजाहिर है कि कार्बन उत्सर्जन के मामले में विकसित देशों का योगदान सबसे ज्यादा है, इसलिए अनुकूलन उपायों को लेकर उनकी जिम्मेदारी भी अधिक होनी चाहिए। उनकी भूमिका सिर्फ वित्तीय सहायता और तकनीकी सहयोग तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें कार्बन उत्सर्जन में कमी और कमजोर देशों के अनुकूलन प्रयासों का समर्थन करना भी शामिल है।

सजगता का संदेश

बिहार विधानसभा चुनाव में इस बार अब तक का सर्वाधिक मतदान हुआ है। इसके साथ ही जो सुखद तस्वीर सामने आई, वह है लोकतंत्र के इस पर्व में महिला मतदाताओं की बढ़-चढ़ कर भागीदारी। यह न केवल महिलाओं की दृढ़ इच्छाशक्ति को दर्शाता है, बल्कि समाज में जागरूकता का संदेश भी देता है। राज्य की महिलाओं ने यह साबित कर दिया कि वे अपनी तमाम व्यस्तताओं के बावजूद लोकतांत्रिक व्यवस्था में अपने अधिकारों और कर्तव्य के प्रति सजग हैं। इसी का नतीजा है कि राज्य के अब तक के चुनावी इतिहास में इस बार महिलाएं मतदान में पुरुषों से कहीं आगे रहीं। चुनाव आयोग के मुताबिक, पहले चरण में 61.56 फीसद पुरुषों के मुकाबले 69.04 फीसद महिलाओं ने मतदान किया। यह सिलसिला दूसरे चरण में भी जारी रहा और 64.01 फीसद पुरुषों के मुकाबले महिलाओं का मतदान 74.03 फीसद रहा। यह परिदृश्य राजनीति और राष्ट्र निर्माण में महिलाओं की सशक्त होती भूमिका को रेखांकित करता है।

बिहार में महिलाएं कई स्तरों पर जागरूक हुई हैं। उनका दायरा अब घरों तक सीमित नहीं है। मतदान के प्रति महिलाओं का बढ़ता उत्साह इस बात का प्रमाण है कि वे देश और राज्य की समस्याओं से अवगत हैं और उन्हें दूर करने में वे अपनी भूमिका सुनिश्चित करना चाहती हैं। महिलाओं में आई इस सजगता को इस रूप में भी महत्त्वपूर्ण माना जा रहा है कि वे अपने मत की अहमियत को जानने एवं समझाने लगी हैं। हालांकि महिलाओं का मतदान फीसद बढ़ने के पीछे पुरुषों का रोजगार के लिए दूसरे राज्य में पलायन भी एक कारक हो सकता है, लेकिन यह भी सच है कि सरकार चुनने के निर्णय में महिलाएं बराबर की भागीदार बनना चाहती हैं। बिहार की महिलाओं ने इस बार मतदान में बढ़चढ़कर भाग लेकर जो मिसाले पेश की है, वह पूरे देश के लिए एक बड़ा संदेश है। सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक मोर्चे पर भी महिलाएं अपना कौशल दिखाना चाहती हैं। उनकी इस इच्छाशक्ति को समझने और सम्मान देने की जरूरत है।

सेवा निर्यात का बढ़ता दायरा

भारत ने वैश्विक सेवा निर्यात में 4.3 फीसद की हिस्सेदारी के साथ अब दुनिया में सातवां स्थान हासिल कर लिया है। पिछले वित्त वर्ष में देश का सेवा निर्यात 387 .5 अरब डालर था, जो चालू वित्त वर्ष के अंत तक 475 अरब डालर तक पहुंच सकता है।

जयंतीलाल भंडारी

भारत सेवा निर्यात में भले ही नई ऊंचाई हासिल करते हुए वैश्विक सेवा निर्यात का एक प्रमुख केंद्र बनने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है, मगर इस मामले में उसके सामने चुनौतियां भी कम नही हैं। इनमें सेवाओं की गुणवत्ता, दक्षता, सभी क्षेत्रों में कारोबार बढ़ाने, ग्रामीण और छोटे शहरों में शोध एवं नवाचार के साथ-साथ युवाओं में कृत्रिम मेधा (एआइ) जैसे कौशल विकसित करने की चुनौतियां प्रमुख हैं। इनके साथ-साथ अमेरिका की नई शुल्क नीति और वीजा चुनौतियां भी भारत के सेवा निर्यात की राह में मुश्किलें खड़ी कर रही हैं। इन चुनौतियों के बीच भारत अपने असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों को कौशल विकास और डिजिटल क्षेत्र में शिक्षित-प्रशिक्षत करके उसे सेवा निर्यात में सहभागी बनाने की संभावनाओं को साकार रूप दे सकता है।

पिछले वित्त वर्ष 2024-25 के दौरान भारत का सेवा निर्यात 387.5 अरब डालर रहा था। उम्मीद है कि यह चालू वित्त वर्ष 2025-26 के अंत तक 475 अरब डालर की रेकार्ड नई ऊंचाई पर पहुंच जाएगा। वर्ष 2013-14 में भारत के सेवा निर्यात का आकार महज 152 अरब डालर था। नेशनल स्टाक एक्सचेंज (एनएसई) के मुताबिक, भारत ने वैश्विक सेवा निर्यात में 4.3 फीसद की हिस्सेदारी के साथ अब दुनिया में सातवां स्थान हासिल कर लिया है। वर्ष 2001 में सेवा निर्यात के मामले में भारत 24वें स्थान पर था। यह उपलब्धि मुख्य रूप से दूरसंचसार, सूचना प्रौद्योगिकी और वाणिज्य सेवाओं की बदौलत संभव हो पाई है। ये क्षेत्र देश के कुल सेवा निर्यात का लगभग तीन-चौथाई हिस्सा रखते हैं। इनके साथ-साथ भारत सांस्कृतिक और मनोरंजन सेवा निर्यात में भी आगे हैं।

सेवा निर्यात की मौजूदा प्रगति देश में हो रहे संरचनात्मक सुधारों, तकनीकी विकास और नई पीढ़ी की उच्च कौशल युक्त क्षमताओं का परिणाम है। गौरतलब है कि सेवा निर्यात में सूचना प्रौद्योगिकी, वाणिज्य, बैंकिंग, वित्त, बीमा, पर्यटन, आतिथ्य, शिक्षा, चिकित्सा और कृत्रिम मेधा जैसी सेवाओं का निर्यात शामिल है। भारत में बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर (जीसीसी) खोलने में आई तेजी से भी सेवा निर्यात बढ़ रहा है। नैसकाम और जिनोव की ओर से जारी इंडिया जीसीसी-लैंडस्केप रपट के मुताबिक, जीसीसी के लिए भारत दुनिया का सबसे बड़ा केंद्र बन रहा है। फिलहाल देश में 1800 से अधिक जीसीसी हैं, जिनसे 21 लाख से अधिक लोगों को रोजगार मिल रहा है। दुनिया के करीब पचास फीसद जीसीसी सिर्फ भारत में हैं। देश के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में जीसीसी का योगदान 1.5 फीसद से अधिक है, जो वर्ष 2030 तक 3.5 फीसद हो जाएगा। जीसीसी प्रमुख रूप से सूचना प्रौद्योगिकी, उपभोक्ता सेवाएं, वित्त, मानव संसाधन और अनुसंधान एवं विकास पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

यह बात भी महत्त्वपूर्ण है कि भारत में कृत्रिम बुद्धिमता और डेटा विश्लेषण जैसे क्षेत्रों में शोध एवं विकास तथा नवउद्यम के अनुकूल माहौल से अमेरिका, यूरोप और एशियाई देशों की बड़ी-बड़ी कंपनियां अपने केंद्र यहां खोलना चाहती हैं। वास्तव में भारत के सेवा क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमता के आगमन से इस क्षेत्र में रोजगार के नए द्वार खुल रहे हैं। भारत जैसे-

जैसे रणनीतिक रूप से कृत्रिम बुद्धिमता के क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है, वैसे-वैसे यहां की नई पीढ़ी भी इसमें लगातार अपना योगदान बढ़ा रही है। ओपन एआइ के प्रमुख सैम आल्ट मैन के मुताबिक, कृत्रिम बुद्धिमता के लिए दुनिया में भारत दूसरा सबसे बड़ा बाजार है। वहीं, गुगल के सीईओ

> **इसमें दोराय नहीं कि सेवा निर्यात भारतीय अर्थव्यवस्था का एक अहम पहलू बन गया है। इससे न केवल विदेशी व्यापार घाटे को थामे रखने में मदद मिल रही है, बल्कि देश में रोजगार निर्माण में भी इसका महत्त्वपूर्ण योगदान है। नीति आयोग की नई रपट में कहा गया है कि देश की जीडीपी में सेवा क्षेत्र का योगदान 55 फीसद से अधिक है और लगभग 18.8 करोड़ लोगों को यह रोजगार देता है। सेवा क्षेत्र ने पिछले छह वर्षों में चार करोड़ अतिरिक्त रोजगार पैदा किए हैं। देश का सेवा निर्यात 14.8 फीसद की चक्रवृद्धि वार्षिक दर से बढ़ रहा है, जो वस्तु निर्यात के 9.8 फीसद से कहीं ज्यादा है।**

सुंदर पिचाई का मानना है कि भारत इस क्षेत्र में दुनिया का नेतृत्व कर सकता है। इस समय भारत में कृत्रिम बुद्धिमता पारिस्थितिकी तंत्र का काफी तेजी से विस्तार हो रहा है। इस वर्ष भारत का कृत्रिम बुद्धिमता का बाजार 13.05 अरब डालर मूल्य की ऊंचाई पर है, जिसका आकार वर्ष 2032 में 130.63 अरब डालर तक पहुंचने का अनुमान लगाया जा रहा है। भारत में प्रौद्योगिकी और कृत्रिम बुद्धिमता पारिस्थितिकी तंत्र में वर्तमान में साठ लाख से अधिक लोग कार्यरत हैं। देश में लगभग 1.8 लाख नवउद्यम हैं और पिछले वर्ष शुरू किए गए नवउद्यमों में से करीब 89 फीसद ने अपने उत्पादों या सेवाओं में कृत्रिम बुद्धिमता का उपयोग किया है।

इसमें दोराय नहीं कि सेवा निर्यात भारतीय अर्थव्यवस्था का एक अहम पहलू बन गया है। इससे न केवल विदेशी व्यापार घाटे को थामे रखने में मदद मिल रही है, बल्कि देश में रोजगार निर्माण में भी इसका महत्त्वपूर्ण योगदान है। नीति आयोग की नई रपट में कहा गया है कि देश के सकल घरेलू उत्पाद में सेवा क्षेत्र का योगदान 55 फीसद से अधिक है और लगभग 18.8 करोड़ लोगों को यह रोजगार से जोड़ता है। सेवा क्षेत्र ने पिछले छह वर्षों में चार करोड़ अतिरिक्त रोजगार पैदा किए हैं। देश का सेवा निर्यात 14.8 फीसद की चक्रवृद्धि वार्षिक दर से बढ़ रहा है, जो वस्तु निर्यात के 9.8 फीसद से कहीं ज्यादा है।

ऐसे में भारत को सेवा क्षेत्र को और मजबूत करते हुए सेवा निर्यात में तेजी लाने की नई रणनीति के साथ आगे बढ़ना होगा। इस बात पर ध्यान देना होगा कि अभी भी भू-राजनीतिक रूप से भारत का सेवा क्षेत्र देश की व्यापक आर्थिक असमानता को दर्शाता है। देश में कर्नाटक, महाराष्ट्र, तेलंगाना और तमिलनाडु उच्च मूल्य वाली सेवाओं मसलन-सूचना प्रौद्योगिकी, वित्त और अचल संपत्ति में दबदबा रखते हैं। जबकि देश के अधिकांश राज्य अभी भी सेवा क्षेत्र में तुलनात्मक रूप से पीछे हैं। इसमें कोई संदेह नहीं हैं कि देश अपने संरचनात्मक परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है, और अर्थव्यवस्था के औपचारिक एवं शहरीकृत होने के साथ-साथ सेवा क्षेत्र में और भी ज्यादा कर्मचारियों को शामिल करने की क्षमता मौजूद है। सेवा क्षेत्र में लैंगिक समानता पर भी ध्यान देना जरूरी है। ग्रामीण क्षेत्रों में केवल 10.5 फीसद महिलाएं सेवा क्षेत्र में कार्यरत हैं, जबकि शहरी क्षेत्रों में यह आंकड़ा 60 फीसद है।

यह बात भी ध्यान में रखनी होगी कि अब सेवा निर्यात के क्षेत्र में भी प्रतिस्पर्धा लगातार बढ़ रही है। ऐसी स्थिति में भारत के सेवा निर्यात में तेजी लाने के लिए सेवाओं की गुणवत्ता, दक्षता, उत्कृष्टता तथा सुरक्षा को लेकर और अधिक प्रयास करने होंगे। साथ ही सेवा निर्यात में विविधता लाने और अन्य उभरते क्षेत्रों पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है। अब हमें साफ्टवेयर निर्यात के लिए अमेरिकी बाजार पर निर्भरता कम करनी होगी और सेवा निर्यात की संभावनाओं वाले अन्य देशों में कदम बढ़ाने होंगे। हमें नए दौर की तकनीकी जरूरतों और उद्योग की अपेक्षाओं के अनुरूप कौशल प्रशिक्षण से नई पीढ़ी को सुसज्जित करना होगा। सेवा निर्यात बढ़ाने के लिए शोध, नवाचार और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के मापदंडों पर आगे बढ़ना होगा। देश के कोने-कोने खासकर ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों को भी सेवा क्षेत्र से जोड़ने के प्रयास करने होंगे। उम्मीद की जानी चाहिए कि ऐसे प्रयासों से देश का सेवा क्षेत्र और सेवा निर्यात रफ्तार पकड़ेगा तथा इससे भारत को वर्ष 2027 तक दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था और वर्ष 2047 तक विकसित देश बनाने के बड़े लक्ष्य को हासिल करने में भी मदद मिलेगी।

थकते कदम

अशोक कुमार

दुनिया मेरे आगे

धरती पर जीवन के पदार्पण होते ही वह कई चरणों में अपनी यात्रा की शुरुआत कर देता है। शैशवास्था, बाल्यावस्था, तरुणावस्था, युवावस्था, प्रौढ़ावस्था और अंत में वृद्धावस्था के दौर में मानव मन कई अनुभूतियों और कार्यों से अपने को संलिप्त रखने को विवश है। बचपन के बाद तरुण काल में उसे विद्यालय के प्रांगण आमंत्रित कर लिया जाता है। जीवन निर्माण के उद्देश्य में व्यक्ति आगे की कड़ियों से तादात्म्य स्थापित करते हुए अध्ययन, व्यवसाय, खेती-गृहस्थी, नौकरी और अन्य प्रकल्पों की पूर्णता के बाद एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव पर आकर ठहर जाता है, जब वह अपने सभी बुनियादी दायित्वों से भी आजाद हो जाता है। इस क्रम में पुत्री-पुत्र की शादी के बाद नवदंपति के लिए नूतन घर गृहस्थी के नए आयाम प्रकट होते हैं। जीवन के उत्तरार्ध काल में माता-पिता जब अपनी जिम्मेदारियों से मुक्त होते हैं, तब उनके पास अपनी एक सक्रिय दिनचर्या नहीं होती।

इस दौर में परिवार के सदस्य शिशु के आगमन की बाट जोहते हैं और जब यह घड़ी आ जाती है तो बच्चे के माता-पिता के साथ उसके दादा-दादी, नाना-नानी के जीवन में आनंद की लहरें उफान पर होती हैं। इस स्थिति में बुजुर्गों की दुनिया पूरी तरह परिवर्तित होते दिखती है। मासूम की मुस्कान और उसे अपनी गोद में लेकर स्नेह सिंचित करने का पल बुजुर्गों को नैसर्गिक सुख की अनुभूति से लबालब भर देता है। धीरे-धीरे शिशु अपनी उम्र के उस मोड़ पर आ जाता है, जब वह अपने पैरों पर खड़ा होना, ठुमकते हुए चहलकदमी करना कुछ बुदबुदाना और घर के सभी सदस्यों को पहचानने की अल्प समझ से जुड़ता है। माता-पिता के साथ बिताए पलों के बाद बच्चे का शेष समय उसके नानी-दादी, दादा-नाना के साथ अधिक बीतता हैं। ये लोग भी बड़ी आतुरता से प्रतीक्षा करते हैं कि कब उन्हें नन्हे बच्चे को अपने पास रखने का मौका मिले।

> **एकल परिवार की बहुलता के कारण बहुत से घरों में बुजुर्ग अकेले भी हैं, जिन्हें समय बिताना कठिन हो जाता है। बुजुर्ग दंपति तो आपस में कुछ बोल-बतिया कर समय काट भी लेते हैं, लेकिन जिस घर में बुजुर्ग सिर्फ अकेले हो गए हैं, उन्हें एकाकीपन और निष्क्रियता घेर लेती है।**

कई बाल मनोवैज्ञानिकों के अनुभव का सारांश है कि बुजुर्ग जब अपने पोते-पोती, नाती-नतिनी की बाल्यावस्था की गतिविधियों से बंध जाते हैं, तो उनकी उम्र बढ़ने की गति कम होने लगती है। वे आत्मिक संतुष्टि और सुख के दृश्यों को जब नित्य जीते हैं, तो उनकी प्रसन्नता के सूचकांक में अभूतपूर्व वृद्धि दर्ज होती है। इस अवस्था में वे अपने स्वास्थ्य की छोटी-मोटी समस्याओं को भूल जाते हैं, क्योंकि उनका चरम लक्ष्य बच्चों के साथ समय बिताना तय है। यह घड़ी उन्हें अकेलेपन से राहत दिलाते हुए खुश रखती है। बच्चों के साथ बुजुर्गों के भावनात्मक लगाव के कुछ अन्य सकारात्मक लाभ भी मिलते हैं, जैसे जीवन के अन्य सांसारिक कार्यों से मुक्त होकर वे स्वच्छंद वातावरण में बिल्कुल स्वतंत्र महसूस करते हैं। इससे उनकी प्रसन्नता और उत्साह में वृद्धि करने वाले हार्मोन का प्रवाह भी बना रहता है। बढ़ती उम्र का तकाजा है कि बुजुर्गों के शरीर में कुछ न कुछ व्याधियां प्रवेश कर जाती हैं, जिसमें प्रमुख हैं- मधुमेह, रक्तचाप, कैल्शियम की कमी। इस कारण से वे अपने रोग के निदान के लिए अधिक चिंतित हो जाते हैं, लेकिन जब उनके पोते-पोती, नाती-नतिनी अपने कदमों में गति भरने लगते हैं तो उन्हें सहारे की जरूरत होती है, जिसका मूल आधार बुजुर्ग बनते हैं।

बच्चों के साथ अधिक समय बिताने के फलस्वरूप बुजुर्गों का अधिक चलना-फिरना हो जाता है। घर के आंगन या आसपास किसी उद्यान में बच्चों को ले जाकर उसके साथ खेलना, उसके पीछे अपनी गति में दौड़ने जैसी अन्य गतिविधियां उन्हें सक्रिय रखती हैं। शाम के समय बच्चों को कहानियां सुनाने और कभी-कभी अपने हाथों से उन्हें खाना खिलाने से बच्चे बुजुर्गों की ओर आकर्षित रहते है। कभी गांव में बुजुर्ग बच्चों को अपनी पीठ और कंधों पर बिठाकर कुछ देर घुमा दिया करते थे, जबकि दोनों घुटनों पर उन्हें सवार कर झुला झुलाने (घुघा-मामा) से बच्चों का मधुर मनोरंजन हुआ करता था। इस प्रक्रिया से बुजुर्गों को लाभप्रद व्यायाम हो जाता था।

बच्चों की देखभाल में सम्मिलित लोग अन्य बुजुर्गों की तुलना में कम सुस्त होते हैं। यह सक्रियता बुजुर्गों के शारीरिक वजन को नियंत्रित करते हुए उनके स्वास्थ्य को ठीक रखते हैं। अकेलेपन के शिकार अधिकतर बुजुर्ग अक्सर गैरजरूरी विषयों की चिंतन की गंभीरता के चलते मानसिक अवसाद के शिकार हो जाते हैं। बच्चों के साथ उनकी रोचक सहभागिता इस रोग से रक्षा करती है। आज की भौतिक भागदौड़ में अधिकांश बुजुर्ग अनिद्रा से पीड़ित होते हैं, लेकिन जब वे बच्चों की किलकारियां सुनते हैं, उसकी मधुर मुस्कान देखते हैं, उनके साथ खेल-खेल में अपना अधिक समय व्यतीत करते हैं, तो उन्हें भरपूर नींद भी आती है और वे रोज सुबह तरोताजा महसूस करते हैं।

एकल परिवार की बहुलता के कारण बहुत से घरों में बुजुर्ग अकेले भी हैं, जिन्हें समय बिताना कठिन हो गया है। बुजुर्ग दंपति तो कुछ आपस में बोल-बतिया कर समय काट भी लेते हैं, लेकिन जिस घर-आंगन में बुजुर्ग सिर्फ अकेले हो गए हैं, उनके पुत्र-पुत्री साल में एक दो बार आते हैं और वे अपने माता-पिता को कई कारणों से साथ रख नहीं पाते। ऐसे बुजुर्गों के जीवन को एकाकीपन और निष्क्रियता घेर लेती है। उनकी मानसिक व्यथा के घनत्व में अधिक वृद्धि तब दिखती है जब पर्व-त्योहार में उनकी संतान दो-चार दिन के लिए भी घर नहीं आ पाते। आज की युवा पीढ़ी को इस संदर्भ में विशेष चिंतन-मनन करना चाहिए, क्योंकि वे भविष्य में वरिष्ठ नागरिक की श्रेणी में जब आएंगे, तब तक पूर्वजों द्वारा संकल्पित ताने-बाने बिखरने का संकट खड़ा हो सकता है। इसलिए समय रहते अकेलेपन में जी रहे बुजुर्गों के कदमों में गति कायम रखने की हर कोशिश की जाए। शायद इस चेष्टा का फल यह हो कि हमारे बुजुर्गों की जिजीविषा जीवंत हो उठे।

हाशिये पर बुजुर्ग

देश में बड़े पैमाने पर बुजुर्गों की हालत यह है कि सब कुछ अपना होते हुए भी उन्हें घर में दो वक्त की रोटी नसीब नहीं हो पाती। अपनों से बेदखल किए बुजुर्गों की हालत दयनीय हो रही है। आज देश में अधिकांश बुजुर्गों के नाम पर चल रही कुछ योजनाओं का लाभ उनके अपने ही उठाते हैं। केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा बुजुर्गों को दी जाने वाली वृद्धावस्था पेंशन योजना की राशि महंगाई के इस दौर में ऊंट के मुंह में जीरे के समान है। जिस उम्र में उनको अपनी आवश्यकता की चीजों की जरूरत होती है, तब उनके हाथ खाली हो जाते हैं। उनकी जरूरतों को उनके अपने तक समझ नहीं पाते। इन बुजुर्गों को घर के ही लोगों द्वारा एकाकी जीवन जीने पर मजबूर कर दिया जाता है। भले ही मुफ्त खाद्यान्न और मुफ्त इलाज की योजनाएं चल रही हैं, लेकिन इसके बाद भी अन्य जरूरतों के लिए बुजुर्गों को पैसे की भी आवश्यकता होती है। सरकार की ओर से वृद्धावस्था पेंशन योजना के तहत देश के अलग-अलग राज्यों में पांच सौ से सात सौ रुपए तक पेंशन दी जाती है, जो आज के दौर में बहुत ही कम है। सरकार को इस ओर ध्यान देना चाहिए।

– अरविंद रावल, झाबुआ, मप्र

आस्तीन के सांप

दिल्ली में लालकिला के पास हुए धमाके पर कई सवाल उठ रहे हैं। आखिर राजधानी में शांति को कौन भंग करना चाहता है? धमाके के समय आसपास अच्छी-खासी भीड़ थी। देखा जाए तो मानवता और शांति-सौहार्द के दुश्मनों ने अपनी नापाक हरकत को अंजाम दिया है। इस धमाके के पीछे कौन हैं, इसका पता लगाया जा रहा है। इस घटना को ध्यान में रखकर दिल्ली में सख्ती बरतते हुए उत्तर प्रदेश सहित कई राज्यों में सजगता बरती जा रही है। यह जरूरी भी है। उधर, हरियाणा और उत्तर प्रदेश से हुई गिरफ्तारी में विस्फोटक के साथ तीन आतंकी दबोचे गए। आस्तीन के इन सांपों का फन कुचलना जरूरी है। धमाकों के पीछे आतंकी साजिश ही लगती है। कुछ भी हो, हमें दिल्ली के साथ पूरे देश को सुरक्षित रखना है। आपरेशन सिंदूर के बाद पाकिस्तान की बौखलाहट साफ नजर आती है। कार धमाके की जांच बारीकी से होनी चाहिए।

– योगेश जोशी, बड़वाह

योग का महत्त्व

योग वह माध्यम है, जिससे व्यक्ति स्वस्थ रहता है। यह सक्रिय दिनचर्या के लिए जरूरी है। मगर आजकल भागदौड़ की जिंदगी में लोग योग से दूर हो गए हैं। इसका मुख्य कारण है कि वे सोशल मीडिया मंचों पर अपना समय ज्यादा व्यतीत कर रहे हैं। इससे बीमारियों के उपचार पर समय और पैसा खर्च हो रहा है। लोगों में अवसाद और बेवजह का तनाव पैदा हो रहा है, जो एक सामाजिक क्षति को दर्शाता है। एक स्वस्थ व्यक्ति ही परिवार एवं समाज के लिए सही निर्णय ले सकता है और वह कुछ अच्छा सोच सकता है, जो परिवार एवं समाज को विकसित करने के लिए जरूरी है। ग्रामीण क्षेत्रों में ज्यादातर खेतिहर मजदूर और किसान अपने शारीरिक श्रम के कारण सेहतमंद रहते हैं। वहीं ग्रामीण महिलाएं घरेलू और कृषि से जुड़े काम कर शरीर को सक्रिय रखती हैं। सभी लोगों को अपनी दिनचर्या में कुछ समय योग के लिए निकालना चाहिए।

– तारामुनी देवी, लालगंज, वैशाली

स्वास्थ्य से खिलवाड़

आज के उपभोक्तावादी दौर में अधिक से अधिक मुनाफा कमाना ही लक्ष्य बन गया है और आम लोगों की सेहत की किसी को परवाह नहीं है। ओआरएस एक ऐसा चिकित्सकीय घोल है, जो शरीर में पानी और लवण की कमी पूरी करने के लिए उपयोग में लाया जाता है। लेकिन कई कंपनियां इसी नाम से मिलते-जुलते पेय पदार्थ बाजार में उतार रही हैं, जो स्वादिष्ट तो होते हैं, परंतु उनका औषधीय गुणों से कोई संबंध नहीं होता। साधारण उपभोक्ता जब इन उत्पादों का नाम ओआरएस से मिलता-जुलता देखता है, तो उसे भ्रम होता है कि यह भी स्वास्थ्यवर्धक पेय है, जबकि सच्चाई इसके विपरीत होती है। यह केवल कानूनी नहीं, बल्कि नैतिकता का भी सवाल है। इससे न केवल लोगों का स्वास्थ्य खतरे में पड़ता है, बल्कि व्यावसायिक पारदर्शिता पर भी प्रश्नचिह्न लग जाता है।

– मो अजहर आलम अंसारी, पूर्णिया

हमें लिखें, हमारा पता : edit.jansatta@expressindia.com | chaupal.jansatta@expressindia.com

आतंकी तंत्र का पर्दाफाश होने और विस्फोट के बाद

जांच के घेरे में अल-फलाह विश्वविद्यालय

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 12 नवंबर।

'सफेदपोश आतंकी तंत्र' और दिल्ली के लाल किले के पास हुए उच्च तीव्रता वाले विस्फोट के सिलसिले में तीन चिकित्सकों की गिरफ्तारी के बाद हरियाणा में फरीदाबाद जिले के मुस्लिम बहुल धौज गांव में अल-फलाह विश्वविद्यालय और उसका 76 एकड़ में फैला परिसर जांच के घेरे में आ गया है।

अल फलाह विश्वविद्यालय की शुरुआत 1997 में एक इंजीनियरिंग कालेज के रूप में हुई थी और एमबीबीएस की कक्षाएं 2019 में शुरू हुईं। इसकी आधिकारिक वेबसाइट के अनुसार, 76 एकड़ में फैले इस विश्वविद्यालय की स्थापना 2014 में हरियाणा विधानसभा द्वारा हरियाणा निजी विश्वविद्यालय अधिनियम 2006 के तहत की गई थी। पढ़े-लिखे लोगों के 'पाकिस्तान समर्थित सरपरस्तों के इशारे पर काम करते' हुए पाए जाने के बाद जांचकर्ता यह पता लगा रहे हैं कि यह विश्वविद्यालय ऐसे व्यक्तियों के लिए आश्रय स्थल कैसे बन गया।

विवि के कुलाधिपति जवाद अहमद सिद्दीकी, अल फलाह चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष भी हैं। वर्तमान रजिस्ट्रार प्रोफेसर मोहम्मद परवेज हैं।

डा भूपिंदर कौर आनंद इसकी कुलपति हैं। कई विशेषज्ञों के अनुसार, अपने प्रारंभिक वर्षों में अल-फलाह विवि ने खुद को अल्पसंख्यक छात्रों के लिए अलीगढ़ मसलिम विश्वविद्यालय व जामिया मिल्लिया इस्लामिया के एक विकल्प के रूप में पेश किया। पुलिस ने बताया कि उन्होंने मंगलवार को पूरे दिन विश्वविद्यालय में निरीक्षण किया और कई लोगों से पूछताछ की।

पुलवामा का मोहम्मद उमर नबी अल-फलाह विवि में सहायक प्रोफेसर था। ऐसा संदेह है कि दिल्ली विस्फोटकों से लदी हुंदै आइ20 कार वही चला रहा था। यह विस्फोट विश्वविद्यालय से जुड़े तीन चिकित्सकों सहित आठ लोगों को गिरफ्तार करने और 2,900 किलोग्राम विस्फोटक जब्त करने के कुछ घंटों बाद हुआ, जिसमें जैश-ए-मोहम्मद और अंसार गजवत-उल-हिंद से जुड़े एक 'सफेदपोश आतंकी माड्यूल' का खुलासा हुआ, जो कश्मीर, हरियाणा और उत्तर प्रदेश तक फैला हुआ था।

उधर, घातक रासायनिक जहर 'रिसिन' से जुड़ी आतंकी साजिश मामले की जांच कर रहे गुजरात आतंकवाद निरोधक दस्ते (एटीएस) ने गिरफ्तार डाक्टर अहमद मोहिउद्दीन सैयद के हैदराबाद स्थित घर पर तलाशी ली तथा रसायन और कच्चा माल जब्त किया।

एक अधिकारी ने बुधवार को कहा कि दो अन्य गिरफ्तार आरोपियों के उत्तर प्रदेश स्थित घरों पर भी इसी तरह की तलाशी ली गई। हालांकि, अभी तक कुछ भी आपत्तिजनक नहीं पाया गया है।

कश्मीर बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष की संपत्ति यूएपीए मामले में कुर्क

कश्मीर बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष मियां अब्दुल कयूम की आवासीय संपत्ति गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम (यूएपीए) के तहत दर्ज एक मामले में बुधवार को कुर्क कर ली गई। अधिकारियों ने बताया कि वकील बाबर कादरी की हत्या के आरोप में जेल में बंद कयूम के बुलबुल बाग बरजुल्ला स्थित आवास को पुलिस ने यूएपीए की धारा 38 और 39 के तहत कुर्क किया। पुलिस महानिदेशक नलिन प्रभात ने कुर्की आदेश जारी किया। यूएपीए की धारा 25 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, श्रीनगर के बुलबुल बाग बरजुल्ला में स्थित दो कनाल, एक मरला और 90 वर्ग फुट भूमि सहित दो मंजिला आवासीय भवन की कुर्की के लिए पूर्व अनुमोदन प्रदान किया जाता है।

बढ़ते प्रदूषण पर पंजाब व हरियाणा से सुप्रीम कोर्ट ने मांगी स्थिति रपट

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 12 नवंबर।

सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली-एनसीआर में पराली जलाने के कारण वायु गुणवत्ता की खराब होती स्थिति का संज्ञान लेते हुए बुधवार को पंजाब और हरियाणा सरकारों से स्थिति को नियंत्रित करने के लिए की गई कार्रवाई से अवगत कराने को कहा।

प्रधान न्यायाधीश बीआर गवई, न्यायमूर्ति के विनोद चंद्रन और न्यायमूर्ति एनवी अंजारिया की पीठ ने 17 नवंबर को याचिका पर सुनवाई करने पर भी सहमति जताई। न्यायमूर्ति गवई ने कहा कि पंजाब और हरियाणा सरकार पराली जलाने पर नियंत्रण के लिए उठाए गए कदमों पर जवाब दें। पूर्व में, पीठ ने मामले की सुनवाई बुधवार के लिए निर्धारित की थी। सुनवाई शुरू होते ही वरिष्ठ अधिवक्ता गोपाल शंकरनारायणन ने कहा कि वर्तमान में 'ग्रैप-3' प्रतिबंध लागू है। वरिष्ठ अधिवक्ता ने कहा कि ग्रैप-4 लागू किया जाना चाहिए। कुछ स्थानों पर एक्यूआइ 450 को पार कर गया है। यहां एक अदालत के बाहर खुदाई हो रही है, कम से कम इन परिसरों में तो ऐसा नहीं होना चाहिए।

'पंद्रह सितंबर से 10 नवंबर तक पराली जलाने की 4300 घटनाएं'

नई दिल्ली, 12 नवंबर (ब्यूरो)।

सुप्रीम कोर्ट को सूचित किया गया है कि 15 सितंबर से 10 नवंबर के बीच पंजाब और हरियाणा में पराली जलाने की क्रमशः 4,000 और 360 से अधिक घटनाएं सामने आई हैं तथा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में गंभीर वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और राजस्थान में 1,500 से अधिक औद्योगिक इकाइयों को बंद किया गया है।

वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग और केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने न्यायालय के निर्देशों के अनुसार दो अलग-अलग हलफनामों में वायु प्रदूषण को कम करने के लिए उठाए गए कदमों की जानकारी दी है। आयोग ने पंजाब और हरियाणा की सरकारों की रपट में कहा है कि पंजाब में 15 सितंबर से 10 नवंबर तक पराली जलाने की 4,195 घटनाएं दर्ज की गईं और इसने क्षेत्र में वायु गुणवत्ता को खराब करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

दिल्ली धमाका : प्रधानमंत्री मोदी ने पीड़ितों से मुलाकात की, कहा

दोषियों को न्याय के कठघरे में लाया जाएगा

जनसत्ता संवाददाता
नई दिल्ली, 12 नवंबर।

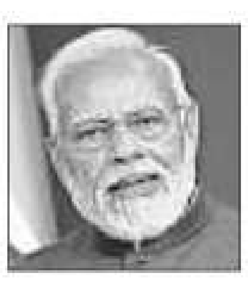

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस सप्ताह की शुरुआत में लाल किले के निकट हुए विस्फोट में घायल लोगों से बुधवार को एलएनजेपी अस्पताल में मुलाकात की और कहा कि अपराधियों को न्याय के कठघरे में लाया जाएगा।

मोदी ने 'एक्स' पर कहा कि दिल्ली में बम विस्फोट में घायल हुए लोगों से मिलने एलएनजेपी अस्पताल गया। सभी के शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना करता हूं। इस साजिश के पीछे जो भी लोग हैं, उन्हें न्याय के कठघरे में लाया जाएगा! इस दौरान पूरे परिसर में कड़े सुरक्षा इंतजाम किए गए थे। अस्पताल में तथा इसके आसपास भारी सुरक्षा व्यवस्था की गई है। अधिकारियों ने बताया कि भूटान से वापस आने के बाद प्रधानमंत्री मोदी विस्फोट में घायल हुए लोगों से मिलने के लिए सीधे एलएनजेपी अस्पताल गए। मोदी ने घायलों से मुलाकात की और उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की।

अस्पताल के अधिकारियों व चिकित्सकों ने उन्हें घायलों के बारे में जानकारी दी। सोमवार को लाल किला यातायात सिग्नल के निकट धीमी गति से चलती एक गाड़ी में हुए उच्च-तीव्रता वाले विस्फोट में 12 लोगों की मौत हो गई थी। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह सोमवार को अस्पताल पहुंचे थे और पीड़ितों से मिले थे। मोदी के अस्पताल दौरे को लेकर दिल्ली पुलिस सतर्क रही।

दिल्ली कार विस्फोट के बाद अमित शाह का गुजरात दौरा रद्द

नई दिल्ली, 12 नवंबर (ब्यूरो)।

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह का गुरुवार का निर्धारित गुजरात दौरा रद्द कर दिया गया है। भाजपा पदाधिकारियों ने हालांकि, दौरा रद्द किए जाने का कोई आधिकारिक कारण नहीं बताया गया है, लेकिन माना जा रहा है कि गृह मंत्री राष्ट्रीय राजधानी में हुए कार विस्फोट के बाद की स्थिति से निपटने में व्यस्त हैं। शाह का 13 नवंबर को 'अहमदाबाद फूड फेस्टिवल' और 'अहमदाबाद इंटरनेशनल बुक फेस्टिवल' 2025 का उद्घाटन करने का कार्यक्रम था।

सख्ती

डोडा जिले में बुधवार को लाल किले के पास हुए विस्फोट के बाद सुरक्षाकर्मी एक वाहन की जांच करते हुए।

प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्रियों को हटाने के विधेयकों संबंधी समिति की अध्यक्ष होंगी अपराजिता

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 12 नवंबर।

प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्रियों और मंत्रियों को गंभीर आरोपों में लगातार 30 दिनों तक हिरासत में रहने की स्थिति में पद से हटाने के प्रावधान वाले तीन विधेयकों पर विचार के लिए बुधवार को संयुक्त समिति का गठन कर दिया गया, जिसकी अध्यक्षता भाजपा सांसद अपराजिता सारंगी करेंगी। लोकसभा सचिवालय की ओर से जारी बुलेटिन में कहा गया है कि 31 सदस्यीय संयुक्त समिति का गठन किया गया है तथा लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने सारंगी को इसका अध्यक्ष नियुक्त किया है। इस समिति में लोकसभा के 21 और राज्यसभा के 10 सदस्य शामिल हैं।

कांग्रेस समेत कई प्रमुख विपक्ष दलों ने इस समिति में शामिल नहीं होने का फैसला किया है, हालांकि 'इंडिया' गठबंधन की एक घटक राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरद पवार) ने इस समिति का हिस्सा बनने का निर्णय लिया। राकांपा (शरद पवार) की लोकसभा सदस्य सुप्रिया सुले को इस समिति में शामिल किया गया है।

गृह मंत्री अमित शाह ने पिछले मानसून सत्र के आखिर में विपक्ष के विरोध और हंगामे के बीच सदन में 'संविधान (130वां संशोधन) विधेयक, 2025', 'संघ राज्य क्षेत्र शासन (संशोधन) विधेयक, 2025' और 'जम्मू कश्मीर पुनर्गठन (संशोधन) विधेयक, 2025' पेश किए। बाद में उनके प्रस्ताव पर सदन ने तीनों विधेयकों को संसद की संयुक्त समिति को भेजने का निर्णय लिया।

लाल किला विस्फोट का विषय संसदीय समिति की बैठक में उठा

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 12 नवंबर।

संसद की गृह मामलों की स्थायी समिति की बुधवार को हुई बैठक में लाल किले के निकट के हुए विस्फोट का विषय उठाया गया, लेकिन समिति के अध्यक्ष ने इस मामले पर चर्चा से इनकार कर दिया। सूत्रों ने यह जानकारी दी।

समिति के अध्यक्ष ने इस मामले पर चर्चा से इनकार कर दिया।

बैठक में मौजूद एक सदस्य के अनुसार, लाल किले के पास सोमवार शाम को हुए विस्फोट का मुद्दा तृणमूल कांग्रेस के एक सांसद ने उठाया। तृणमूल सांसद ने कथित खुफिया विफलता पर भी चिंता जताई। सूत्र ने बताया कि समिति के अध्यक्ष राधा मोहन दास अग्रवाल ने चर्चा करने से इनकार कर दिया और इस मुद्दे पर किसी भी स्वप्रेरित बयान की अनुमति भी नहीं दी।

गृह मामलों की संसदीय स्थायी समिति की बुधवार को एक बैठक हो रही है और इसके एजंडे में 'आपदा प्रबंधन' विषय शामिल हैं। समिति इस विषय पर गृह मंत्रालय, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए), राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान (एनआइडीएम), राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ) और महानिदेशालय (अग्निशमन सेवा, नागरिक सुरक्षा एवं गृह रक्षक) के विचार सुनेगी।

दिल्ली-एनसीआर में वायु प्रदूषण का स्तर बढ़ा, सतर्क रहें लोग

केंद्र ने पड़ोसी राज्यों को जारी किए दिशानिर्देश

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 12 नवंबर।

दिल्ली-एनसीआर सहित पड़ोसी राज्यों में तेजी से बढ़ते प्रदूषण स्तर को देखते हुए बच्चे, गर्भवती महिलाएं, बुजुर्ग और उच्च जोखिम वर्ग को विशेष सतर्क रहने की सलाह दी है। इस समस्या को लेकर केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने बुधवार के दिल्ली सहित पड़ोसी राज्यों के लिए दिशानिर्देश जारी किए। इसमें कहा गया है कि सरकारी अस्पतालों में चेस्ट क्लीनिक की शुरुआत की जानी चाहिए।

केंद्र सरकार ने राज्यों से वायु प्रदूषण को लेकर त्वरित कार्रवाई करने की अपील की है। साथ ही कहा है कि नागरिक सुबह-शाम व्यायाम से बचें, खुली जगह में आग न जलाएं। मंत्रालय ने राज्यों को 33 पन्नों का दिशानिर्देश सौंपा है। साथ ही कहा कि प्रदूषण से होने वाले श्वसन और हृदय रोगों के मामलों में बढ़ोतरी होती है, इसलिए अस्पतालों को विशेष तैयारी रखनी चाहिए।

केंद्रीय सचिव पुण्य सलिला श्रीवास्तव ने मुख्य सचिवों को लिखे पत्र में कहा है कि वायु गुणवत्ता लगातार खराब हो रही है जो जन स्वास्थ्य के लिए गंभीर चुनौती बन चुकी है। हमें मिलकर एक स्वस्थ और स्वच्छ वातावरण बनाने की दिशा में काम करना होगा। वहीं चेस्ट क्लीनिक में प्रदूषण से प्रभावित रोगियों की किस तरह देखना है, उनकी परेशानी का प्रबंधन कैसे करना है, इसके लिए केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने दिशानिर्देश में एक सूचना भी साझा की है। इसमें मरीज को जरूरत के आधार पर प्रतिदिन अस्पताल से जिला और फिर वहां से दिल्ली तक भेजना अनिवार्य है। इन क्लीनिकों में फेफड़ों की बीमारियों के मरीजों का जोखिम आकलन, जांच, और नियमित निगरानी की जाएगी। स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को भी निर्देश दिया गया है कि वे घर-घर जाकर संवेदनशील आबादी यानी बच्चे, गर्भवती महिलाएं, बुजुर्ग और हृदय या फिर अस्थमा रोगियों की पहचान करें और उन्हें बचाव संबंधी परामर्श दें।

केंद्र ने राज्यों से पांचवीं कक्षा तक के बच्चों को आनलाइन पढ़ाई करने के साथ साथ निर्माण स्थलों पर भी ध्यान देने के लिए कहा है। केंद्रीय सचिव ने पत्र में राज्यों से कहा है कि वे अपने राज्य और जिला टास्क फोर्स को तत्काल सक्रिय करते हुए पर्यावरण, परिवहन, नगर विकास, महिला एवं बाल विकास और श्रम विभागों के साथ समन्वय बढ़ाएं।

पेज 1 का बाकी

दिल्ली की वायु गुणवत्ता दूसरे दिन भी 'गंभीर'

सूचकांक सबसे कम 217 रहा। दिवाली के बाद से, राष्ट्रीय राजधानी की वायु गुणवत्ता लगातार 'खराब' या 'बहुत खराब' श्रेणी में बनी हुई है, कभी-कभी 'गंभीर' श्रेणी में भी पहुंच जाती है।

एनसीआर के अन्य शहरों की बात करें तो जींद, रोहतक और नोएडा का वायु गुणवत्ता सूचकांक 400 के पार दर्ज किया गया। जींद में सूचकांक 418, रोहतक में 406 और नोएडा में 408 दर्ज किया गया। इसके अलावा गुरुग्राम, भिवानी, चरखी दादरी, बहादुरगढ़, सोनीपत, भिवाड़ी, बुलंदशहर, खुर्जा, ग्रेटर नोएडा, गाजियाबाद, हापुड़ और मेरठ का वायु गुणवत्ता सूचकांक 'बेहद खराब' श्रेणी में रहा।

सीपीसीबी के अनुसार, शून्य से 50 के बीच का वायु गुणवत्ता सूचकांक 'अच्छा', 51 से 100 के बीच 'संतोषजनक', 101 से 200 के बीच 'मध्यम', 201 से 300 के बीच 'खराब', 301 से 400 के बीच 'बेहद खराब' और 401 से 500 के बीच 'गंभीर' माना जाता है।

पाकिस्तान में थल सेनाध्यक्ष ही रक्षा बलों के प्रमुख भी होंगे

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 12 नवंबर।

पाकिस्तान की संसद के निचले सदन 'नैशनल असेंबली' ने रक्षा बलों के प्रमुख का नया पद सृजित करने और एक संवैधानिक न्यायालय की स्थापना के लिए विवादास्पद 27वें संविधान संशोधन को बुधवार को इस सदन के बीच दो तिहाई बहुमत से मंजूरी दे दी। यह विधेयक मंगलवार को कानून मंत्री आजम नजीर तरार द्वारा 'नैशनल असेंबली' में पेश किया गया था। विधेयक के मुताबिक, थल सेनाध्यक्ष ही रक्षा बलों के प्रमुख भी होंगे और प्रधानमंत्री के परामर्श से राष्ट्रीय सामरिक कमान के प्रमुख की नियुक्ति करेंगे। इसके अनुसार, राष्ट्रीय सामरिक कमान का प्रमुख पाकिस्तानी सेना से होगा।

संवैधानिक संशोधन के मुताबिक, सरकार सशस्त्र बलों के व्यक्तियों को फील्ड मार्शल, एअरफोर्स मार्शल और फ्लीट एडमिरल के पदों पर पदोन्नत कर सकेगी। फील्ड मार्शल का पद और विशेषाधिकार आजीवन होंगे, अर्थात फील्ड मार्शल आजीवन इस पद पर बने रहेंगे। मौजूदा समय में पाकिस्तानी सेना में आसिम मुनीर फील्ड मार्शल के पद पर आसीन है। यह पाकिस्तानी संसद के उच्च सदन 'सीनेट' द्वारा इस महत्त्वपूर्ण विधेयक को मंजूरी दिए जाने के एक दिन बाद पेश किया गया।

नैशनल असेंबली ने 27वें संविधान संशोधन को मंजूरी दी।

'नैशनल असेंबली' ने बुधवार को विपक्ष के बहिष्कार के बीच 27वें संविधान संशोधन विधेयक के पक्ष में 59 उपबंधों को मंजूरी दे दी।

जेल में बंद पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ पार्टी के सदस्यों ने विधेयक की प्रतियां फाड़कर प्रधानमंत्री की कुर्सी की ओर फेंक दीं। 'नैशनल असेंबली' के अध्यक्ष अयाज सादिक ने कहा कि विधेयक के पक्ष में 234 और विपक्ष में चार वोट पड़े। प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ, पाकिस्तान मुसलिम लीग-नवाज (पीएमएल-एन) प्रमुख नवाज शरीफ और पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी के अध्यक्ष बिलावल भुट्टो-जरदारी निचले सदन के सत्र में शामिल हुए। दो दिन तक चली बहस के बाद संशोधन पारित कर दिया गया। हालांकि, पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ के नेतृत्व वाले विपक्ष ने कार्यवाही का बहिष्कार किया।

हरियाणा के खंदावली में मिली संदिग्ध उमर नबी की लाल कार

हैं। हरियाणा पुलिस ने एक दिन पहले से कई राज्यों में 'अलर्ट' जारी कर दिया था, क्योंकि उन्हें पता चला था कि लाल गाड़ी नबी के नाम पर पंजीकृत है। सूत्रों के अनुसार, यह गाड़ी नबी के दोस्त के फार्महाउस में मिली थी, जिसे हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। फोरेंसिक और बैलिस्टिक विशेषज्ञ गाड़ी की तलाशी ले रहे हैं। विस्फोट के समय नबी जिस आइ20 कार को चला रहा था, वह पहले पुलवामा के एक 'प्लंबर' के नाम पर पंजीकृत मिली थी, जिसे पुलिस ने पूछताछ के लिए हिरासत में भी लिया है। दिल्ली पुलिस सूत्रों ने बताया कि जब रिकार्ड से पता चला कि कार डाक्टर उमर उन नबी के नाम पर पंजीकृत है, तो टीम वाहन के स्वामित्व के सत्यापन के लिए तुरंत मौके पर पहुंची।

सूत्रों ने बताया कि जांचकर्ताओं को संदेह है कि हो सकता है कि कार खरीदने के लिए जाली दस्तावेजों का इस्तेमाल किया गया हो। कार के पंजीकरण पत्रों में उल्लेखित पते के आधार पर पुलिस न्यू सीलमपुर पहुंची, जहां उसने निवासियों से पूछताछ की और दस्तावेजों का सत्यापन किया। इस दौरान उसी पते पर मदरसा चलाने वाले इमाम मोहम्मद तसव्वुर ने कहा कि उन्होंने क्षेत्र में कभी कोई संदिग्ध गतिविधि नहीं देखी। तसव्वुर ने कहा कि पुलिस जांच के लिए मेरा फोन अपने साथ ले गई। हम अपना पूरा सहयोग दे रहे हैं। पुलिस को मामले की जांच करनी चाहिए और घटना के पीछे जो लोग हैं उन्हें गिरफ्तार करना चाहिए। वहीं, दिल्ली पुलिस के विशेष प्रकोष्ठ सूत्रों के अनुसार, फरीदाबाद के सेक्टर 37 स्थित रायल कार प्लाजा के मालिक अमित को फरीदाबाद पुलिस की सहायता से सोमवार देर रात हिरासत में लिया गया। उन्होंने कथित तौर पर हुंदै आइ20 की बिक्री में मदद की थी, जिसका इस्तेमाल सोमवार को लाल किले के पास हुए शक्तिशाली विस्फोट में किया गया था। अमित से पूछताछ की जा रही है।

जांच दल हुंदै आइ20 के स्वामित्व की पूरी कड़ी की जानकारी जुटा रहा है और यह पता कर रहा है कि यह संदिग्ध के हाथों में कैसे पहुंची। पुलिस ने कहा कि हम यह पता लगा रहे हैं कि गाड़ी उसके शोरूम में कौन लाया और किसके जरिए उमर नबी उसके संपर्क में आया। दिल्ली के 15 जिलों के सभी पुलिस उपायुक्तों (डीसीपी) को स्थानीय कार डीलरों के साथ बैठक करने और अपने-अपने थाना प्रभारियों को बिक्री और खरीद के रिकार्ड का सत्यापन कराने के निर्देश दिए गए हैं दूसरी ओर, जम्मू कश्मीर पुलिस के अधिकारियों ने बताया कि हिरासत में लिया गया मौलवी इश्तियाक मेवात का है और अल फलाह विश्वविद्यालय के परिसर में धार्मिक प्रवचन देता था। पुलिस ने उसके घर से ही 2,500 किलोग्राम से अधिक अमोनियम नाइट्रेट, पोटेशियम क्लोरेट और सल्फर बरामद किया था। मौलवी इश्तियाक के आवास पर विस्फोटक सामग्री मुजम्मिल गनई उर्फ मुसैब और उमर नबी ने रखी थी।अधिकारियों ने बताया कि आतंकी तंत्र के संबंध में गिरफ्तार किए गए डाक्टर मुजम्मिल गनई के मोबाइल फोन के डेटा के विश्लेषण से पता चला है कि उसने इस साल जनवरी में लाल किला क्षेत्र की कई बार टोह ली थी। पुलिस ने बताया कि उन्हें संदेह है कि वे ऐसे 26 जनवरी को ऐतिहासिक स्मारक को निशाना बनाने की एक बड़ी साजिश का हिस्सा थीं, जो उस समय क्षेत्र में गहन गश्त के कारण विफल हो गई होगी।

वहीं, दिल्ली पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि उमर नबी के बारे में माना जाता है कि वही कार चला रहा था जिसमें विस्फोट हुआ था और उसने दोपहर बाद करीब 3:19 बजे सुनहरी मस्जिद पार्किंग स्थल पर वाहन खड़ा किया था। इससे पहले, नबी आसफ अली रोड पर, रामलीला मैदान के पास एक मस्जिद गया था, जहां वह कथित तौर पर लगभग तीन घंटे तक रहा और नमाज अदा की। हम संदिग्ध आत्मघाती हमले सहित सभी कोणों से मामले की जांच कर रहे हैं। जांचकर्ता यह भी जांच कर रहे हैं कि लाल किले की ओर बढ़ने से पहले उमर ने पार्किंग स्थल पर तीन घंटे तक रुकने के दौरान क्या किया।उधर, जम्मू-कश्मीर पुलिस ने घाटी में प्रतिबंधित जमात-ए-इस्लामी से संबद्ध लोगों से जुड़े 300 से अधिक ठिकानों पर छापेमारी की। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि विश्वसनीय खुफिया सूचनाओं पर ये छापेमारी की गईं, जिनसे संकेत मिलता है कि जमात-ए-इस्लामी से जुड़े तत्व विभिन्न मोर्चों पर अपनी गतिविधियों को फिर से शुरू करने की कोशिश कर रहे हैं। शोपियां, कुलगाम, पुलवामा, बारामूला और गांदरबल जिलों में कई स्थानों पर छापे मारे गए। दक्षिण कश्मीर के कुलगाम जिले में 200 से अधिक स्थानों पर छापे मारे गए।

वहीं, केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बताया कि देश ने 10 नवंबर की शाम को लाल किले के पास एक कार विस्फोट के माध्यम से राष्ट्र-विरोधी ताकतों द्वारा अंजाम दी गई एक जघन्य आतंकी घटना देखी है। मंत्रिमंडल हिंसा के इस मूर्खतापूर्ण कृत्य के पीड़ितों के प्रति गहरी श्रद्धांजलि अर्पित करता है और शोक संतप्त परिवारों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करता है। मंत्रिमंडल ने मारे गए निर्दोष लोगों के सम्मान में दो मिनट का मौन रखा। मंत्रिमंडल ने कहा कि स्थिति पर सरकार के उच्चतम स्तर पर कड़ी नजर रखी जा रही है। भूटान की दो दिवसीय यात्रा से लौटने के तुरंत बाद प्रधानमंत्री घायलों से मिलने लोक नायक जयप्रकाश अस्पताल गए। उन्होंने सुरक्षा मामलों की मंत्रिमंडल समिति की एक बैठक की अध्यक्षता भी की।

नतीजा पूर्व सर्वेक्षणों का नहीं है कोई वैज्ञानिक आधार : जन सुराज

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 12 नवंबर।

राजनीतिक रणनीतिकार प्रशांत किशोर की जन सुराज पार्टी ने नतीजा पूर्व सर्वेक्षणों को नकार दिया है। पार्टी के प्रदेश महासचिव किशोर कुमार ने कहा कि इन सर्वेक्षणों का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है।

इससे पहले भी कई बार एग्जिट पोल गलत साबित हुए हैं। महासचिव ने कहा कि बिहार में इस बार मतदाताओं का रुझान साफ तौर पर बदलाव की तरफ है। ऐसा बदलाव कोई नहीं चाहता है कि तेजस्वी यादव की सरकार बने और पुरानी व्यवस्था लौटे।

दूसरे प्रदेशों से आए प्रवासियों ने नीतीश सरकार को हटाने और नई व्यवस्था बनाने के लिए अपने परिवार के सदस्यों से भी मतदान करवाया है। उन्होंने कहा कि हम लोग मंत्री-विधायक बनने के लिए नहीं आए हैं बल्कि व्यवस्था परिवर्तन की लड़ाई लड़ रहे हैं।

ज्यादातर नतीजा पूर्व सर्वेक्षणों में राजग को स्पष्ट बढ़त जबकि जन सुराज पार्टी को 0-5 सीटें मिलने की उम्मीद जताई गई है। सर्वेक्षणों के मुताबिक, प्रशांत किशोर की लोकप्रियता और पदयात्रा के बाद भी चुनाव में इसका कोई खास असर नहीं दिखा है। हालांकि चुनाव से पहले ही लगातार एक के बाद एक सनसनीखेज मामलों का खुलासा करने के बाद प्रशांत किशोर लोगों के बीच नई रोशनी के तौर पर उभरे थे। मतदान के करीब आने पर प्रशांत किशोर ने प्रदेश की तमाम विधानसभा सीट पर प्रचार में सक्रियता बढ़ा दी। लेकिन, चुनाव प्रचार में मुख्य चेहरे के तौर पर अकेला होने की वजह से पार्टी को प्रदेश में खास तवज्जो नहीं मिल सकी। हालांकि जानकारों का कहना है कि कुछ जगहों पर जन सुराज पार्टी की दो से पांच सीटों पर अच्छी है।

हारता वही है, जो प्रयास करना छोड़ देता है

समग्र उपायों की अनदेखी

सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली-एनसीआर में बढ़ते वायु प्रदूषण पर पंजाब और हरियाणा से पराली जलाने को लेकर की गई कार्रवाई संबंधी जो रिपोर्ट मांगी, उससे कुछ हासिल होने की उम्मीद कम ही है। इसलिए कम है, क्योंकि एक तो इन दोनों राज्यों में पराली करीब-करीब जलाई जा चुकी है और दूसरे वायु प्रदूषण का एक मात्र कारण पराली दहन नहीं है। विभिन्न अध्ययन यह रेखांकित कर चुके हैं कि वायु प्रदूषण के कारणों में पराली दहन के अतिरिक्त वाहनों का उत्सर्जन और सड़कों व निर्माण स्थलों से उड़ने वाली धूल है। निःसंदेह पराली दहन को रोका ही जाना चाहिए, लेकिन बात तब बनेगी, जब यह भी सुनिश्चित किया जाएगा कि ट्रैफिक जाम के कारण वाहनों से अतिरिक्त विषाक्त उत्सर्जन न हो सके और सड़कों एवं निर्माण स्थलों से धूल के गुबार न उड़ने पाएं। वायु प्रदूषण में वाहन उत्सर्जन और धूल का योगदान पराली से भी अधिक है। बरसात में तो सड़कों एवं निर्माण स्थलों से धूल उड़नी कम हो जाती है, लेकिन वाहन उत्सर्जन बढ़ाने वाला ट्रैफिक जाम वर्ष भर की समस्या है। इसी कारण उत्तर भारत के एक बड़े हिस्से में सर्दियों के अलावा भी वायु की गुणवत्ता का स्तर खराब बना रहता है। समस्या यह है कि हवा की गुणवत्ता में तनिक सुधार आते ही प्रदूषण रोधी एजेंसियों के साथ सरकारों और सुप्रीम कोर्ट के लिए वायु प्रदूषण कोई समस्या नहीं रह जाता। इसी रवैये के कारण दशकों बाद भी वायु प्रदूषण से छुटकारा नहीं मिल रहा है।

कम से कम सुप्रीम कोर्ट को तो यह समझना होगा कि वायु प्रदूषण से मुक्ति तब मिलेगी, जब उससे निपटने के उपाय वर्ष भर किए जाएंगे और प्रदूषण बढ़ाने वाले सभी कारणों के निवारण पर जोर दिया जाएगा। सुप्रीम कोर्ट को दिल्ली-एनसीआर के साथ शेष देश के पर्यावरण की भी चिंता करनी होगी। इसकी अनदेखी नहीं की जानी चाहिए कि हवा तब भी जहरीली होती रहती है, जब पराली जलना बंद हो जाती है? यह रवैया ठीक नहीं कि सर्दियों के आगमन पर पराली जलने की चिंता की जाए और दीवाली पर पटाखों के इस्तेमाल की। इस रवैये में सुधार के साथ यह भी समझा जाना चाहिए कि जब प्रदूषण गंभीर रूप ले लेता है, तब उससे निपटने के लिए किए जाने वाले फौरी उपाय अपर्याप्त ही सिद्ध होते हैं। इसी कारण हवा की गुणवत्ता की सही स्थिति को छिपाया जाता है। उचित यह होगा कि सुप्रीम कोर्ट वायु प्रदूषण के लिए जिम्मेदार सभी कारणों के निवारण वाले उपायों पर ध्यान दे और सरकारों को इसके लिए बाध्य करे कि वे संबंधित एजेंसियों की जवाबदेही बनाएं। उन्हें न केवल यह सुनिश्चित करना होगा कि सड़कों एवं निर्माण स्थलों से धूल न उड़ने पाए, बल्कि यह भी कि यातायात सुगम बना रहे, ताकि वाहन रेंगने के लिए बाध्य न हों।

ध्वस्त हो आतंकी नेटवर्क

दिल्ली में लाल किले के पास विस्फोट की सुरक्षा एजेंसियां जांच अवश्य कर रही हैं, लेकिन अब तक इससे जुड़ी हर कड़ी तक वे पहुंच नहीं पाई हैं। अब तक ये भी स्पष्ट नहीं हो पाया है कि पड़ोसी शहर फरीदाबाद में आतंकियों का इतनी बड़ी मात्रा में विस्फोटक एकत्रित करने के पीछे क्या उद्देश्य था। यही नहीं, लाल किले पर हुए विस्फोट में कौन सा विस्फोटक इस्तेमाल किया गया। ये विस्फोटक आतंकी फरीदाबाद से लेकर आया था या उसे किसी ने दिल्ली में ही उपलब्ध कराया। आतंकी विस्फोट से पहले लाल किला पार्किंग में करीब तीन घंटे था, लेकिन उससे पहले कहां-कहां गया और किससे किससे मिला, अब तक ये भी पूरी तरह से साफ नहीं हो पाया है।

> सुरक्षा एजेंसियां विस्फोट की गुत्थियां सुलझाकर इस पूरे आतंकी नेटवर्क को जल्द से जल्द ध्वस्त करें, ताकि दिल्लीवासी चैन की सांस ले सकें

इसमें कोई दो राय नहीं कि सुरक्षा एजेंसियों का अपना तरीका है और वे उस तरीके से जांच में लगी हैं, लेकिन सुरक्षा की दृष्टि से इन सभी गुत्थियों का जल्द सुलझना बेहद आवश्यक है। फरीदाबाद में आतंकियों की गिरफ्तारी और विस्फोटक की बरामदगी के बीच जिस तरह एक आतंकी विस्फोटक लेकर निकल भागा और उसने विस्फोट कर दस लोगों की जान ले ली और कई अन्य को घायल कर दिया। यह सुरक्षा व खुफिया एजेंसियों की चूक ही रही। ऐसे में उनसे अब सतर्कता के उच्चतम स्तर की अपेक्षा की जाती है। सुरक्षा एजेंसियां ये गुत्थियां सुलझाकर इस पूरे आतंकी नेटवर्क को जल्द से जल्द ध्वस्त करें, ताकि दिल्लीवासी चैन की सांस ले सकें।

कह के रहेंगे

माधव जोशी

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या लाल किला विस्फोट के पीछे पाकिस्तान का हाथ दिख रहा है?

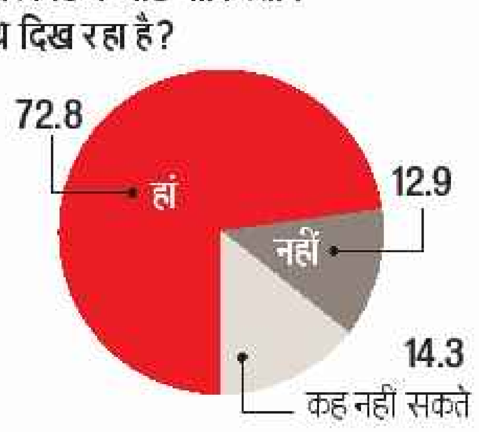

आज का सवाल

क्या बिहार चुनाव के एक्जिट पोल के अनुमान विश्वसनीय दिख रहे हैं?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।
सभी आंकड़े प्रतिशत में।

सबको लड़नी होगी आतंक के खिलाफ लड़ाई

अवधेश कुमार

आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में सुरक्षा बलों और खुफिया एजेंसियों का काम तब आसान होगा, जब देश के आम नागरिक भी सचेत रहेंगे

जम्मू-कश्मीर को छोड़कर शेष देश पिछले लगभग एक दशक से आतंकी हमलों से करीब-करीब मुक्त था, लेकिन दिल्ली में लाल किले के निकट कार में हुए विस्फोट ने फिर से पुराने दौर की याद दिला दी, जब कुछ अंतराल पर एकल या श्रृंखलाबद्ध धमाकों से देश दहल जाता था। शेष देश में लंबे समय तक कोई बड़ी आतंकी घटना न घटने से आम लोग निश्चिंत थे कि अब आतंकी हमले नहीं कर सकेंगे, लेकिन पिछले कुछ समय से कश्मीर घाटी से लेकर उत्तर प्रदेश के सहारनपुर, हरियाणा के फरीदाबाद, गुजरात और दिल्ली तक बरामद विनाशकारी सामग्री तथा गिरफ्तार संदिग्ध आतंकवादियों के कारण उनकी चिंता फिर बढ़ गई है। इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि पिछले कुछ समय से देश के कई हिस्सों से किसी न किसी आतंकी माड्यूल के पकड़े जाने की खबर आ रही है। पिछले दिनों ही गुजरात में हैदराबाद के एक डाक्टर को घातक रसायन बनाने की सामग्री और हथियारों के साथ पकड़ा गया। उसके दो साथी भी गिरफ्तार किए गए, जो उत्तर प्रदेश के हैं।

इस साल अप्रैल में जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में आतंकवादियों ने जब धर्म पूछ कर 26 लोगों की हत्या की थी तो भारत ने इसके जवाब में आपरेशन सिंदूर के तहत पाकिस्तान स्थित जैश-ए-मोहम्मद, लश्कर-ए-तैयबा जैसे आतंकी समूहों के मुख्य अड्डों को ध्वस्त कर सीमा पार आतंकवाद पर अब तक का सबसे बड़ा आघात किया था। निश्चय ही उसके बाद से वे बड़े प्रतिशोध का षड्यंत्र रच रहे होंगे। लाल किला विस्फोट के तरीके और अब तक सामने आए षड्यंत्र की कहानी में छह वर्ष पहले पुलवामा हमले की जिहादी आतंक की कड़ी दिखती है। यद्यपि छानबीन के बाद ही पूरी सच्चाई सामने आएगी, बावजूद इसके पीछे की घटनाएं एक-दूसरे से जुड़ी लगती हैं।

श्रीनगर में जैश-ए-मोहम्मद के समर्थन में पोस्टर लगने के बाद पुलिस ने आतंकवादियों के कुछ हमदर्द और पत्थरबाज गिरफ्तार किए। उनसे एक मौलवी का पता चला, जो संदिग्ध गतिविधियों में लिप्त था। उससे पूछताछ के बाद अनंतनाग के रहने वाले डा. आदिल को उत्तर प्रदेश के सहारनपुर से गिरफ्तार किया गया। पुलिस जब उसे लेकर श्रीनगर पहुंची और पूछताछ की तो अनंतनाग के सरकारी अस्पताल से उसके ठिकाने से असाल्ट राइफल मिली। पुलिस ने और पूछताछ की तो पुलवामा जिले के डा. मुजम्मिल का पता चला। इससे मिली जानकारी के आधार पर पुलिस ने जब फरीदाबाद के धौज स्थित अल फलाह मेडिकल कालेज में कार्रवाई की तो उसे 360 किलोग्राम विस्फोटक, एक एके-47 राइफल और 84 कारतूस सहित टाइमर, जिलेटिन के छड़ और अन्य सामग्रियां मिलीं। उसके बाद जांच की कड़ियां पुलिस को फरीदाबाद के फतेहपुर तगा गांव तक ले गईं, जहां एक घर में विस्फोटक के ढेर देखकर उसके होश उड़ गए। धौज से फतेहपुर तगा गांव चार किलोमीटर दूर है। डा. मुजम्मिल ने मौलाना इश्तियाक से यह घर किराए पर ले रखा था। करीब 3000 किलो अमोनियम नाइट्रेट विस्फोटक बरामद होना सबसे बड़ी बरामदगियों में से एक है।

अवधेश राजपूत

अभी तक इस प्रकरण में गिरफ्तार लोग उच्च शिक्षा प्राप्त और संपन्न परिवार के हैं। डा. मुजम्मिल फिजिशियन है और फरीदाबाद के अल फलाह मेडिकल कालेज में पढ़ाता था और गिरफ्तार किए गए शोपियां के मौलवी इरफान अहमद, श्रीनगर के मकसूद अहमद डार, आरिफ निसार डार और यासिर उल अशरफ, गांदरबल के जमीर अहमद अहंगर में से कोई निर्धन, बेरोजगार या अनपढ़ नहीं है। लाल किला विस्फोट में मारा गया डा. उमर नबी एमडी मेडिसिन डिग्री के साथ फरीदाबाद के अल फलाह मेडिकल कालेज में डाक्टर था। डा. आदिल उसका साथी है। इनकी एक साथी डा. शाहीन लखनऊ की है। उसकी कार से एक राइफल मिली थी। फरीदाबाद माड्यूल में कुछ और डाक्टर शामिल पाए जा सकते हैं। जांच से ही पता चलेगा कि इन्होंने क्यों आतंकवादी माड्यूल बनाया? किस तरह इतना विस्फोटक, हथियार इकट्ठे किए, कौन-कौन इसके पीछे थे और कहां-कहां विस्फोट करने की साजिश थी?

पिछले तीन दशकों की जिहादी घटनाओं के विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष यही निकलता है कि आतंकियों को लाल किला विस्फोट की प्रेरणा अपने कट्टर मजहबी सोच से मिली। इसी कारण यह जानते हुए कि विस्फोट में वे स्वयं भी मारे जाएंगे या पकड़े गए तो उन्हें मृत्युदंड मिलेगा, उन्होंने सब कुछ किया। इस सच को स्वीकार करना पड़ेगा कि सुरक्षा बलों की कार्रवाइयों से हम कुछ समय के लिए उन्हें कमजोर कर सकते हैं, पर दुनिया का इस्लामीकरण करने, काफिरों को सबक सिखाने के घातक मजहबी सोच को समाप्त करना आसान काम नहीं है। फरीदाबाद में एक व्यक्ति किराए पर घर लेकर भारी मात्रा में विस्फोटक लाता रहा, लेकिन मकान मालिक या किसी अन्य ने उसे रोकने-टोकने या पुलिस को खबर करने की कोशिश नहीं की। संभव है इन आतंकियों को स्थानीय लोगों का सहयोग मिला हो। इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि भारत सहित विश्व में जितनी आतंकवादी घटनाएं हुई हैं, ज्यादातर में स्थानीय लोगों का सहयोग रहा है। जब पाकिस्तान के जिहादी जनरल आसिम मुनीर कहते हैं कि मुसलमान हिंदुओं के साथ नहीं रह सकते और मदीना के बाद कलमे की बुनियाद पर बनने वाली दूसरी रियासत पाकिस्तान है तथा कश्मीर हमारे गले की नस है तो यह समझना चाहिए कि आतंकवाद के खिलाफ संघर्ष कितना कठिन है। पाकिस्तान को अमेरिका और तुर्किये जैसे देशों का मिलता सहयोग आतंकवादियों के लिए प्रोत्साहन और समर्थन साबित हुआ है। सुरक्षा व्यवस्था से जुड़े एक-एक व्यक्ति के साथ भारत के सभी नागरिकों को हर क्षण जागरूक और सक्रिय रहने की आवश्यकता है। पता नहीं कौन हमारे आसपास जिहादी मानसिकता से लैस होकर भयानक हिंसा का षड्यंत्र रच रहा हो। एक राष्ट्र के नाते भारत का संकल्प आतंकवाद का समूल नाश करना है। इस संकल्प को बल तब मिलेगा, जब हर नागरिक आतंक के खिलाफ लड़ी जा रही लड़ाई में सजगता का परिचय देगा।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार एवं राजनीतिक विश्लेषक हैं)

response@jagran.com

शीघ्र लागू की जाएं चारों श्रम संहिताएं

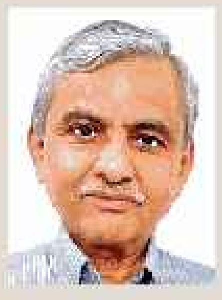

हिरण्मय पंड्या

जब पारंपरिक नौकरियां घट रही हैं, तब श्रम संहिताएं संतुलित विकास का ढांचा प्रदान करने में सक्षम होंगी

भारत के कार्यबल को ऐसे औपचारिक रोजगार में तेजी से जगह मिलनी चाहिए, जहां उचित वेतन और व्यापक सामाजिक सुरक्षा मिले, जिससे विकास के लाभ से सभी को सुरक्षित और सम्मानजनक आजीविका प्राप्त हो। पुराने श्रम नियमों के बने रहने से गुणवत्तापूर्ण रोजगार देने की उद्यमों की क्षमता आंशिक रूप से प्रभावित हुई। इसी के आलोक में राष्ट्रीय श्रम आयोग ने श्रम सुधारों की जो कल्पना की, वह काफी समय से लंबित थी। इन्हें 2019 और 2020 के बीच संसद द्वारा चार श्रम संहिताओं के रूप में पारित किया गया। ये संहिताएं देश के श्रम परिदृश्य को आधुनिक बनाने और संरचनात्मक असंतुलनों को दूर करने के लिए एक व्यापक ढांचा प्रदान करती हैं। दशकों पुराने 29 केंद्रीय श्रम कानूनों को सरल और आधुनिक बनाते हुए चार नई श्रम संहिताओं के निर्माण का उद्देश्य न केवल कानूनों को एकीकृत स्वरूप प्रदान करना है, बल्कि काम को अधिक निष्पक्ष, सुरक्षित और उत्पादक बनाना है।

मजदूरी संहिता, 2019 यह सुनिश्चित करने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है कि प्रत्येक श्रमिक को श्रम की गरिमा का सम्मान करने वाला न्यूनतम वेतन मिले। पहले न्यूनतम वेतन केवल निर्धारित व्यवसायों तक ही सीमित था, लेकिन अब इसे सभी क्षेत्रों और संगठित और असंगठित के समस्त श्रमिकों पर लागू कर दिया गया है। यह न्यूनतम वेतन का सार्वभौमीकरण श्रमिकों को कानूनी रूप से बुनियादी वेतन का अधिकार देता है। इसके साथ ही पहली बार एक राष्ट्रीय आधार वेतन (फ्लोर वेज) की व्यवस्था की गई है, जिसे केंद्र सरकार जीवन स्तर और क्षेत्रीय परिस्थितियों को ध्यान में रखकर तय करेगी। कोई भी राज्य इससे कम न्यूनतम वेतन नहीं तय कर सकेगा। इससे राज्यों के बीच वेतन असमानता भी घटेगी और देशभर के श्रमिकों को समान अवसर मिलेगा। संहिता यह भी सुनिश्चित करती है कि वेतन की समीक्षा नियमित रूप से हो, ताकि बदलती आर्थिक परिस्थितियों के अनुरूप श्रमिकों की आय प्रासंगिक बनी रहे। इस संहिता के तहत विवादों में प्रमाण प्रस्तुत करने का भार नियोक्ता पर होगा, जिससे उनकी जवाबदेही बढ़ेगी।

समय की मांग है श्रम सुधार ● फाइल

सामाजिक सुरक्षा संहिता, 2020 स्वतंत्र भारत में जन कल्याण के सबसे समावेशी विस्तारों में से एक है। कर्मचारी भविष्य निधि अधिनियम, कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम और प्रसूति प्रसुविधा अधिनियम सहित नौ प्रमुख कानूनों को मिला कर यह एक एकीकृत प्रणाली स्थापित करती है, जो पारंपरिक और नए, दोनों प्रकार के कार्यों को कवर करती है। पहली बार गिग श्रमिकों और असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों को राष्ट्रीय कार्यबल का हिस्सा माना गया है। प्रत्येक श्रमिक को पंजीकृत किया जाएगा, उसे एक विशिष्ट सामाजिक सुरक्षा संख्या जारी की जाएगी, जिससे स्वास्थ्य बीमा, पेंशन और मातृत्व सहायता जैसे लाभ का सीधा वितरण संभव हो सकेगा।

व्यावसायिक सुरक्षा, स्वास्थ्य और कार्यदशाएं संहिता, 2020 राष्ट्र का निर्माण करने वालों के प्रति देखभाल और जिम्मेदारी का एक संदेश है। प्रतिष्ठान की परिभाषा को व्यापक बनाकर यह संहिता उन लाखों लोगों को सुरक्षा प्रदान करती है, जो पहले सुरक्षा कानूनों के दायरे में नहीं आते थे। प्रत्येक कर्मचारी को अनिवार्य रूप से निर्धारित प्रारूप में नियुक्ति पत्र प्रदान किया जाएगा, जिसमें कर्मचारी का विवरण, पदनाम, श्रेणी, वेतन का ब्यौरा तथा सामाजिक सुरक्षा से संबंधित विवरण सम्मिलित होंगे। व्यावसायिक सुरक्षा, स्वास्थ्य एवं कार्यदशाएं संहिता, 2020 श्रमिकों के लिए निःशुल्क वार्षिक स्वास्थ्य जांच अनिवार्य करती है और नियोक्ताओं से अपेक्षा करती है कि वे इस मद में कर्मचारियों पर कोई वित्तीय बोझ न डालें और सुरक्षित एवं स्वच्छ कार्यस्थल बनाए रखें। यह संहिता लैंगिक समानता की दिशा में भी महत्वपूर्ण प्रगति करती है। यह महिला श्रमिकों को सभी प्रतिष्ठानों और रात्रि पाली में काम करने की अनुमति देती है।

औद्योगिक संबंध संहिता, 2020 तीन पुराने अधिनियमों को एकीकृत ढांचे में मिला करके नियोक्ताओं और कर्मचारियों के बीच संबंधों में स्पष्टता लाती है। इसमें बीस या उससे अधिक कर्मचारियों वाले प्रतिष्ठानों को शिकायत निवारण समितियां गठित करने का प्रविधान है, ताकि विवादों का शीघ्रता से समाधान हो जाए तथा हड़ताल या मुकदमेबाजी की स्थिति न बने। इस संहिता के तहत छंटनी का सामना कर रहे श्रमिक अब 30 दिन का नोटिस और पर्याप्त मुआवजा पाने के हकदार हैं। यह एक मानवीय सुधार है, जो आजीविका सुरक्षा का सम्मान करता है।

विभिन्न विकासशील देशों के उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि श्रम सुधारों ने उनकी आर्थिक प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। बदलती वैश्विक आर्थिक परिस्थिति, बढ़ते टैरिफ तथा व्यापार ढांचों में बदलाव को देखते हुए भारत में नई श्रम संहिताओं को जल्द से जल्द लागू करना अत्यंत आवश्यक है। श्रम नियम सरल एवं पारदर्शी होने पर निवेश बढ़ेगा, औपचारिक रोजगार बढ़ेगा तथा श्रमिकों के गरिमापूर्ण अधिकार सुनिश्चित होंगे।

स्वचालन और डिजिटलीकरण के युग में जब पारंपरिक नौकरियां घट रही हैं, तब ये संहिताएं संतुलित विकास का ढांचा प्रदान करने में सक्षम होंगी। चारों श्रम संहिताएं उस महत्वाकांक्षा की रीढ़ हैं, जिसमें आर्थिक गतिशीलता को सामाजिक न्याय के साथ जोड़कर एक विकसित भारत, आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाने की कल्पना की गई है।

(लेखक भारतीय मजदूर संघ के अध्यक्ष हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

कर्म और प्रारब्ध

मानव जीवन एक जटिल जाल है जिसमें सुख-दुख, सफलता-असफलता, प्राप्ति और वियोग के अगणित सूत्र एक-दूसरे से गुंथे हुए हैं। इन सभी सूत्रों के केंद्र में दो गूढ़ सिद्धांत हैं-कर्म और प्रारब्ध। ये दोनों सिद्धांत परस्पर अंतर्संबद्ध हैं। जहां कर्म मनुष्य के वर्तमान और भविष्य का निर्माता है, वहीं प्रारब्ध उसके बीते हुए कर्मों का फल है, जो वर्तमान जीवन में भोगने के लिए नियत होता है। इन दोनों के मध्य का संबंध सूक्ष्म, किंतु अत्यंत गहन दार्शनिक और आध्यात्मिक है। प्रारब्ध को प्रायः भाग्य अथवा नियति भी कहा जाता है। मनुष्य जिस परिवार, समाज, देश या परिस्थिति में जन्म लेता है, वह उसके प्रारब्ध का ही परिणाम होता है। हमारी जन्मजात क्षमताएं, आर्थिक स्थिति, शारीरिक रचना, स्वास्थ्य आदि सभी प्रारब्ध से प्रभावित होते हैं। प्रारब्ध को बदलना निस्संदेह कठिन है, परंतु इसका अर्थ यह भी नहीं कि मनुष्य पूर्णतः नियति का गुलाम है। उसे अपने वर्तमान कर्मों द्वारा भविष्य को रूपांतरित करने का अवसर सदैव प्राप्त है।

कर्म और प्रारब्ध एक ही वृक्ष की दो शाखाएं हैं। प्रारब्ध वह है जो अब फल के रूप में प्रकट हो चुका है, और कर्म वह है जो भविष्य में फल देगा। मनुष्य का वर्तमान जीवन उसके अतीत के कर्मों का परिणाम है, और वर्तमान कर्म, उसके भविष्य का आधार। कर्म प्रारब्ध को जन्म देता है और प्रारब्ध कर्म के माध्यम से ही फलित होता है। मनुष्य इस चक्र से तभी ऊपर उठ सकता है जब वह कर्म करते समय फल की आसक्ति को त्याग दे। फल अथवा प्रारब्ध पर हमारा लेशमात्र भी अधिकार एवं नियंत्रण नहीं है।

जो व्यक्ति अपने प्रारब्ध को स्वीकारते हुए सत्कर्म करता है, वह न केवल अपने वर्तमान जीवन को श्रेष्ठ बनाता है, बल्कि अपने भविष्य के जन्मों को भी प्रकाशमान करता है। संक्षेपतः कर्म और प्रारब्ध का संबंध मानव जीवन की गति, नियति और मुक्ति, तीनों का आधार है।

प्रेरणा अवस्थी

पाठकनामा

pathaknama@nda .jagran.com

कुचलना होगा देश विरोधी तत्वों को

अशोक कुमार द्वारा लिखित आलेख ''अभी खत्म नहीं हुआ आतंक के खिलाफ युद्ध'' पढ़ा। साफ दिखता है कि ये आतंकी बाहर से नहीं आ रहे, बल्कि हमारे बीच पलते रहने वाले लोग इसमें शामिल हो रहे हैं। पिछले पंद्रह दिनों में दर्जनों संदिग्ध पकड़े गए हैं और उनमें बड़ी संख्या मुस्लिम डाक्टरों की है। यह बेहद चिंताजनक है कि जिन्हें समाज भगवान के रूप में देखता है, वही कुछ ऐसे दरिंदे भयावह घटनाओं को अंजाम दे रहे हैं। ऐसे मामलों से लोगों में भय बैठ जाता है कि कहीं वे इलाज के बजाय कोई अन्य घिनौनी हरकत न कर दें। गुजरात में भी तीन डाक्टरों को गिरफ्तार किया गया है, जो राइसिन जैसे जानलेवा रसायन बनाकर हजारों लोगों को नृशंस तरीके से मारना चाह रहे थे। राइसिन जैसा विषैला पदार्थ हवा में फैलकर भयानक तबाही मचा सकता है। इस बात से एक भय पैदा होता है-क्या वे भोपाल गैस त्रासदी जैसी कोई घटना की साजिश तो नहीं रच रहे थे? ऐसे सवाल हमारी नींद उड़ा देते हैं। पूर्व सीडीएस जनरल बिपिन रावत का कथन याद आता है-उन्होंने कहा था कि भारत को ढाई मोर्चे पर लड़ना होगा-दो बाहरी मोर्चे चीन एवं पाकिस्तान और आधा मोर्चा भीतर, देशविरोधी तत्वों के रूप में। इसलिए यह केवल सुरक्षा बलों की जिम्मेदारी नहीं रह गई है। हर नागरिक की जागरूकता और देश के प्रति कर्तव्य ही इस आंतरिक मोर्चे पर लड़ने के लिए असली हथियार है। यह लड़ाई बंदूकों या बमों से नहीं, बल्कि समाज की सतर्कता, जागरूकता और जिम्मेदार नागरिकता से जीती जाएगी।

आर्यन वर्मा, सहारनपुर

मीडिया की साख

लोकतंत्र में संचार साधन मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना जाता है। लोकतंत्र में संचार मीडिया आम जनमानस को जहां एक तरफ सरकार को जनता से और जनता को सरकार से जोड़ने का काम करती है, वहीं मीडिया की स्वतंत्रता और निष्पक्षता लोकतंत्र के स्तंभों को और अधिक मजबूत करती है। भारत दुनिया का सबसे लोकतांत्रिक देश है। ऐसे में यहां पर संचार साधनों का महत्व और अधिक बढ़ जाता है लेकिन हाल के वर्षों में मीडिया चैनलों के माध्यम से जैसी खबरें सामने आती रही हैं। उससे हमारे देश के जनसंचार के साधन मीडिया पर और उसकी स्वतंत्रता तथा निष्पक्षता पर सवाल उठने लगे हैं। अभी हाल ही में हिंदी सिनेमा के लीजेंड एक्टर धर्मेंद्र के देहांत की खबरें कई न्यूज चैनलों के माध्यम से चलाई गईं। जो पूरी तरह से गलत और अफवाहों पर आधारित थीं। देश के ऐसे न्यूज चैनलों को शर्म आनी चाहिए, जो किसी भी खबर को पूरी तरह से जांचे और परखे बिना प्रसारित कर देते हैं। भारत के अंदर पहले भी कई बार मीडिया चैनल के माध्यम से ऐसी सूचनाएं सामने आईं, जिनको लेकर स्वतंत्रता तथा निष्पक्षता को लेकर सवाल उठते रहे हैं। देश के अंदर कई बार मीडिया की ऐसी खबरों से देश में भ्रम पैदा होने की नौबत आ चुकी है। देश के लोकतंत्र के स्तंभों को मजबूत करने के लिए स्वतंत्र और निष्पक्ष मीडिया होना चाहिए।

विजय किशोर तिवारी नई दिल्ली

देश विरोधियों पर हो सख्ती

दिल्ली में लाल किले के पास हुए धमाके में पाक परस्त आतंकवाद की संभावना से इन्कार नहीं किया जा सकता है। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह के नेतृत्व में हुई सुरक्षा समीक्षा बैठक में इस घटना की तह में जाने के लिए एनआइए को अधिकृत करना मोदी सरकार की गंभीरता को दर्शाता है। तीन डाक्टरों सहित संदिग्ध आरोपितों की जम्मू-कश्मीर, हरियाणा व उत्तर प्रदेश से की गई गिरफ्तारी से विदित होता है कि आतंकियों की जड़ें देश को खोखला करने वालों के साथ काफी गहराई तक पैठ कर गई हैं। एक आतंकी राजधानी के अधिक जनसंख्या घनत्व वाले क्षेत्र में घंटों रहा, उसकी पहले से पलाश थी। ऐसे में खुफिया तंत्र द्वारा आतंकी संगठनों के पूर्व नियोजित षड्यंत्र को उजागर करने में विफलता प्रतीत हो रही है। घरेलू स्तर पर देश के अंदर आतंकी साजिश को समर्थन या सहयोग मिलना देशद्रोही गतिविधि ही कही जा सकती है। इस घटना को बहुसंख्यक विरोधी विचारधारा से अलग नहीं माना जा सकता है। आतंक को पोषित करने की अमानवीय नीति हमारे शत्रु पड़ोसी देश की ही हरकत है। उसका खामियाजा गुणात्मक रूप में भुगतने के लिए भारत विरोधियों को तैयार रहना चाहिए। देश के जिम्मेदारों को चाहिए कि आतंकवाद व उसके पोषित तत्वों का नाश करने के लिए सख्त कदम उठाएं। देश बर्दास्त करने की स्थिति में नहीं है, लोगों का सोच बदला है। वह अमन तो चाहते हैं पर उसके लिए सख्त कदम उठाने को भी तैयार हैं।

युगल किशोर शर्मा, फरीदाबाद

पोस्ट

व्हाइट कालर टेरर माड्यूल पर कुछ लोग चौंक रहे हैं। चौंकिए मत, यह कोई नया माड्यूल नहीं है। पिछले साल ही रांची में इस तरह के टेरर नेटवर्क का खुलासा हुआ था। मधुरेंद्र कुमार@Madhurendra13

जब भी चुनाव होते हैं, तब आतंकी हमला हो जाता है-ऐसा बोलने वाले यह बताएं कि भारत में कब चुनाव नहीं हो रहे होते? और जब एक देश-एक चुनाव की बात होती है तो मुंह मे दही क्यों जम जाता है?

जफर@Zaffar_Nama

सभी आतंकवादी घृणित होते हैं, लेकिन जब डाक्टर आतंकवादी बन जाते हैं, तो यह और भी अधिक नीचता की पराकाष्ठा है, क्योंकि अपने करियर की शुरुआत में वे जीवन बचाने की शपथ लेते हैं, न कि उसे नष्ट करने की।

तवलीन सिंह@tavleen_singh

जब पढ़े-लिखे मुस्लिम नौजवान भी आतंकी बनने लगें, तो सिर्फ यह कहकर पल्ला झाड़ लेना सही नहीं कि यह इस्लाम नहीं है। हमें गहराई से सोचना होगा कि हम घर, मस्जिद और क्लासरूम में कौन सी जरूरी बातचीत करना भूल गए हैं? हैदर नकवी@haidarpur

जनपथ

सोते आस पड़ोस में कितने 'स्लीपर सेल',
रहो जागते है बहुत खतरनाक यह खेल।
खतरनाक यह खेल अगर वश चलता इनका,
हो जाता यह देश बिखर कर तिनका-तिनका।
बीतेंगे दिन-रात हमेशा लाशें ढोते,
रहे अगर हम- आप बेखबर होकर सोते!

- ओमप्रकाश तिवारी

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा जागरण प्रकाशन लि. के लिए डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित एवं 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित, संपादक (दिल्ली एनसीआर) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No 50755/90 समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त। वर्ष 36 अंक 118

****

एक नजर में

झलकारी बाई की जयंती मनाएगी दिल्ली सरकार

नई दिल्लीः दिल्ली सरकार की कैबिनेट ने प्रख्यात हस्तियों की जयंती और पुण्यतिथि मनाने की योजना में वीरांगना झलकारी बाई कोली का नाम भी शामिल करने का निर्णय लिया है। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता की अध्यक्षता में बुधवार को हुई कैबिनेट बैठक में इस प्रस्ताव को मंजूरी दी गई। बैठक में सरकार के कैबिनेट मंत्री व विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। इस योजना के तहत डा. अंबेडकर, संत रविदास, महर्षि वाल्मीकि, संत कबीर आदि हस्तियां पहले से ही शामिल हैं। योजना में पंजीकृत सरकारी संगठनों को इन प्रख्यात हस्तियों की जयंती या पुण्यतिथि मनाने के लिए सहायता दी जाती है। (राब्यू)

अतिक्रमित वन भूमि को घने जंगल में बदलें: एनजीटी

नई दिल्लीः एनजीटी ने दिल्ली सरकार के मुख्य सचिव समेत अन्य अधिकारियों को दक्षिण दिल्ली में अतिक्रमित वन भूमि को सुरक्षित करने और उसे घने जंगल में बदलने के लिए उचित कदम उठाने का निर्देश दिया है। न्यायिक सदस्य न्यायमूर्ति अरुण कुमार त्यागी की अध्यक्षता वाली पीठ ने कहा कि ट्रिब्यूनल के समक्ष चलाए गए वीडियो क्लिप में पाया गया है कि वन भूमि पर बाड़ और अतिक्रमणकारियों को चेतावनी देने वाले डिस्प्ले बोर्ड का अभाव है। वहां पर्याप्त पेड़ नहीं हैं और क्षेत्र ठोस व निर्माण कचरे से अटा पड़ा है। कोर्ट ने उक्त निर्देश साकेत क्षेत्र के भट्टी गांव में एक वन क्षेत्र में अनाधिकृत कब्जे और कचरा फेंकने के खिलाफ आवेदनकर्ता लक्ष्मी के आवेदन पर सुनवाई करते हुए दिया। (जासं)

युवती की हत्या के मामले में युवक को आजीवन कारावास

नई दिल्लीः 2015 में मीनाक्षी की हत्या के मामले में आरोपित जय प्रकाश को दोषी करार देते हुए तीस हजारी की सत्र कोर्ट ने आजीवन कारावास की सजा सुनाई है। अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश पूजा तलवार ने कहा कि दोषी ने मृतका को बेरहमी से चाकू मारा और अपराध की क्रूरता ने पूरे समाज को आघात पहुंचाया। जय प्रकाश ने 16 जुलाई 2015 को पीड़िता मीनाक्षी को चाकू मारा था और बाद में उसकी मौत हो गई थी। कोर्ट ने पश्चिमी दिल्ली राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण को परिवार के सदस्यों को पर्याप्त मुआवजा देने का निर्देश दिया। (जासं)

आंशिक सुधार के बावजूद लगातार दूसरे दिन भी दमघोंटू बनी रही हवा

दूसरे दिन भी सर्वाधिक प्रदूषित रही दिल्ली, दूसरे नंबर पर रहा नोएडा

राज्य ब्यूरो, जागरण ● नई दिल्लीः हवा चलने के कारण बुधवार को वायु गुणवत्ता में थोड़ा सुधार देखने को मिला। राजधानी का एक्यूआइ रहा तो 'गंभीर' श्रेणी में ही, लेकिन उसके स्तर में कुछ कमी आई। स्माग की परत कमोबेश वैसी ही बनी रही तो हवा भी दमघोंटू ही बनी हुई है। अगले दिन भी वायु गुणवत्ता की लगभग यही श्रेणी बने रहने का पूर्वानुमान है।

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के अनुसार बुधवार को दिल्ली का एक्यूआइ 418 रहा। इस स्तर की हवा को 'गंभीर' श्रेणी में रखा जाता है। एक दिन पूर्व मंगलवार को यह 428 था। यानी 24 घंटे के भीतर इसमें 10 अंकों की कमी देखने को मिली। सीपीसीबी के मुताबिक राजधानी के कुल 39 निगरानी स्टेशनों में से ज्यादातर पर वायु गुणवत्ता 'गंभीर' श्रेणी में ही दर्ज हुई। एनसीआर के शहरों में भी कमोबेश ऐसी ही स्थिति रही। हालांकि स्विस एप आइक्यू एयर ने रात लगभग नौ बजे दिल्ली का एक्यूआइ 336 यानी 'बहुत खराब' श्रेणी में दर्शाया। बुधवार को भी देश भर में सर्वाधिक प्रदूषित दिल्ली ही रही। इतने ही एक्यूआइ के साथ जींद भी दिल्ली के बराबर रहा। 408 एक्यूआइ के साथ नोएडा दूसरे और 406 के साथ रोहतक तीसरे नंबर पर रहा।

बुधवार को बहादुर शाह जफर मार्ग पर छाए स्माग में गुजरते वाहन ● जागरण

सरकार तैयार कर रही है शीत लहर कार्य योजना

दिल्ली आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (डीडीएमए) की ओर से तैयार 'दिल्ली शीत लहर कार्य योजना' का मसौदा संबंधित विभागों को भेजा गया है। उनके सुझाव के बाद इसे अंतिम रूप दिया जाएगा। मसौदा कार्य योजना में 65 वर्ष से अधिक आयु के वरिष्ठ नागरिकों, पांच वर्ष तक के बच्चों, बेघर व्यक्तियों और बीमार लोगों के स्वास्थ्य पर सर्दी का प्रभाव कम से कम पड़े इसके लिए एसओपी बनाने पर जोर दिया। बीमार लोगों के उपचार का प्रोटोकाल बनाने, अस्पतालों में पर्याप्त संख्या में स्वास्थ्य कर्मी, बेड और आवश्यक दवा की उपलब्धता सुनिश्चित करने और आपातकालीन टीम गठित करने की सिफारिश की गई है।

खबर विस्तार से पढ़ने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें।

पंजाब-हरियाणा से पराली जलाने पर की कार्रवाई का ब्योरा मांगा

- अधिवक्ता ने कहा-कुछ जगहों पर एक्यूआइ 450 पार हुआ
- पंजाब-हरियाणा में 4300 से अधिक पराली जलाने की घटनाएं

जागरण ब्यूरो, नई दिल्लीः सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली में बढ़ते वायु प्रदूषण और जहरीली होती हवा पर संज्ञान लेते हुए पंजाब और हरियाणा से पराली जलाने पर की गई कार्रवाई का ब्योरा मांगा है। मामले पर सोमवार को फिर सुनवाई होगी। सुप्रीम कोर्ट को बताया गया कि पंजाब और हरियाणा में 15 सितंबर से 10 नवंबर के बीच 4000 से अधिक और 360 पराली जलाने की घटनाएं दर्ज की गई और दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और राजस्थान में 1500 से अधिक प्रदूषणकारी औद्योगिक इकाइयां बंद की गईं, ताकि राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में गंभीर वायु प्रदूषण को नियंत्रित किया जा सके। एनसीआर में बिगड़ते वायु प्रदूषण स्तर से निपटने के लिए उठाए गए कदमों का उल्लेख वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) और केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) ने दो अलग-अलग हलफनामों में किया, जो सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों के अनुपालन में पेश किए गए।

दिल्ली के वायु प्रदूषण मामले में बुधवार को समय न होने के कारण इस मामले की सुनवाई नहीं हो सकी। मुख्य न्यायाधीश बीआर गवई की अध्यक्षता वाली पीठ ने याचिकाकर्ता के वकील गोपाल शंकर नारायण और न्यायमित्र वरिष्ठ वकील अपराजिता सिंह के अनुरोध पर मामले को सोमवार को सुनवाई के लिए लगाने का निर्देश दिया है। इससे पहले जब बुधवार को सुनवाई का समय समाप्त होने लगा और इस केस का नंबर नहीं आया तो वरिष्ठ अधिवक्ता गोपाल शंकर नारायण ने पीठ के समक्ष मामले का जिक्र करते हुए कहा कि दिल्ली में इतना वायु प्रदूषण हो गया है कि ग्रैप तीन लागू हो गया है। कुछ जगहों पर तो स्थिति इतनी खराब है कि एक्यूआइ 450 पार कर गया है। शंकर नारायण ने पीठ से कहा कि यहां सुप्रीम कोर्ट में ही कोर्ट नंबर दस के सामने निर्माण और खुदाई का काम चल रहा है, कम से कम यहां तो ऐसा नहीं होना चाहिए। सीजेआइ ने कहा कि निर्माण गतिविधियों पर कार्रवाई की जाएगी। उधर, मामले की सुनवाई में कोर्ट की मदद कर रहीं न्यायमित्र वरिष्ठ वकील अपराजिता सिंह ने हरियाणा व पंजाब में बढ़ी मात्रा में पराली जलने की बात कही थी और तब कोर्ट ने कहा था कि वह बुधवार को इस पर कुछ आदेश देगा। वायु गुणवत्ता आयोग की ओर से पेश एएसजी ऐश्वर्या भाटी ने कहा कि आयोग इस संबंध में हलफनामा दाखिल कर रिपोर्ट देगा।

परिवहन विभाग लंबित चालानों के लिए ला रहा माफी योजना

- योजना के तहत 10 साल तक के लंबित चालानों का किया जा सकेगा निपटारा
- वाहनों के लंबित चालानों पर मिल सकती है 60 प्रतिशत से 70 प्रतिशत तक की छूट

राज्य ब्यूरो, जागरण ● नई दिल्लीः दिल्ली सरकार जल बोर्ड की बिल माफी योजना की तर्ज पर परिवहन विभाग की लंबित चालानों के लिए भी एमनेस्टी स्कीम (चालान माफी योजना) बना रही है। इस योजना के तहत गैर गंभीर 10 साल तक के चालान 70% छूट देकर तक निपटाए जा सकेंगे। दिल्ली में दो करोड़ 46 लाख चालान लंबित हैं। सरकार वाहन मालिकों को एक अंतिम मौका देना चाहती है।

इसके बाद भी यदि चालान का निपटारा नहीं किया गया, तो भविष्य में किसी तरह की छूट नहीं दी जाएगी। आप सरकार के समय भी इस योजना को लागू करने का किया प्रयास गया था, मगर किन्हीं कारणों से योजना लागू नहीं हो सकी थी। बुधवार को मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट में भी इस पर चर्चा हुई, मगर अभी कोई फैसला नहीं हो सका है।

परिवहन विभाग के अनुसार, राजधानी में कुल 2,46,76,302 चालान लंबित हैं। इनमें सबसे अधिक चालान वर्चुअल कोर्ट (नोटिस ब्रांच) में लंबित हैं, जिनकी संख्या 1.84 करोड़ से अधिक है। इसके अलावा वर्चुअल कोर्ट (आन द स्पाट) चालान 58.68 लाख, डिजिटल कोर्ट में 1.66 लाख, इवनिंग कोर्ट में 43,633 और रेगुलर कोर्ट में करीब एक लाख चालान लंबित हैं।

मामले में परिवहन विभाग के अधिकारी ने बताया कि राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में बिना लाइसेंस के दो करोड़ से अधिक, बिना पीयूसीसी के 3.73 लाख से अधिक और बिना हेलमेट दोपहिया वाहनों के 2.59 लाख से अधिक चालान लंबित हैं। बगैर हेलमेट वाले वर्षों पुराने हैं। उन्होंने बताया कि बीते 10 वर्षों से लेकर इस साल अक्टूबर तक के सभी गैर-गंभीर श्रेणी के लंबित चालान इस योजना के दायरे में आएंगे।

दिल्ली सरकार ने केवल कंपाउंडेबल यानी अदालत से बाहर जमा कराये जाने वाले चालानों को ही एमनेस्टी स्कीम में शामिल किया है। ड्रंकन ड्राइविंग, गलत ड्राइविंग, बिना लाइसेंस वाहन चलाना और खतरनाक तरीके से ड्राइविंग जैसे गंभीर उल्लंघन वाले चालान इसमें शामिल नहीं है।

बार-बार याचिका दायर करने पर हाई कोर्ट ने जताई नाराजगी

जागरण संवाददाता, नई दिल्लीः भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) के कुछ प्रावधानों को चुनौती देते हुए बार-बार याचिका दायर करने पर दिल्ली हाई कोर्ट ने बुधवार को नाराजगी जताई। जनहित याचिका खारिज कर मुख्य न्यायाधीश देवेंद्र कुमार उपाध्याय व न्यायमूर्ति तुषार राव गेडेला की पीठ ने कहा, याचिकाकर्ता उपेंद्र नाथ दलाई पर जुर्माना लगाने पर भी विचार किया जाएगा। पूर्व में याचिकाएं खारिज होने के बाद भी याचिका दायर करने पर कोर्ट ने आपत्ति जाहिर की।

कोर्ट ने पुलवामा आतंकवादी हमले का संदर्भ देने के लिए, याचिकाकर्ता की भी खिंचाई की। कहा, याची ने पहले रिट याचिका दायर की, फिर पुनर्विचार याचिका की मांग की जाती है और अब जनहित याचिका दायर की जा रही है। शब्दों को बदलने मात्र से रिट याचिका दायर करने की अनुमति नहीं मिल जाएगी। अदालत ने आगे कहा कि याचिका में दिए गए तर्कों के लिए अदालत उपयुक्त मंच नहीं है। याचिकाकर्ता ने बीएनएस की धारा 147 से 158 को चुनौती दी थी, जोकि भारत के विरुद्ध युद्ध छेड़ने के अपराधों और दंडों से संबंधित हैं और वैध हिरासत से भाग रहे किसी राज्य बंदी या युद्धबंदी की सहायता करने, उसे बचाने या उसे शरण देने के लिए दंड का प्रविधान करती हैं। याची ने तर्क दिया था कि ये प्रविधान नागरिकों के मौलिक अधिकारों का उल्लंघन हैं। हालांकि, अदालत ने कहा कि लेख लिखने के लिए ये सब ठीक हैं, लेकिन याचिका में ये सब नहीं होता।

बीएनएस के प्रविधान को चुनौती देने का मामला, अदालत ने कहा - याचिकाकर्ता पर जुर्माना लगाने पर किया जाएगा विचार

एआइ से सुधरेगी यमुना नदी की दशा

राज्य ब्यूरो, जागरण ● नई दिल्लीः दिल्ली में पानी की चोरी और बर्बादी बड़ी समस्या है। उपलब्ध पेयजल का बड़ा हिस्सा आज भी वैध उपभोक्ताओं तक पहुंचता है। इससे राजधानी के कई क्षेत्रों में लोगों को पर्याप्त पेयजल उपलब्ध नहीं हो रहा है। पानी बिल में गड़बड़ी की भी शिकायत आम है। बेहतर जल प्रबंधन से इन समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। इसके लिए दिल्ली जल बोर्ड (डीजेबी) ने आइआइटी कानपुर द्वारा स्थापित ऐरावत रिसर्च फाउंडेशन (एआरएफ) के साथ समझौता किया है। एआरएफ एआइ के उपयोग से जल प्रबंधन को अधिक प्रभावी और पारदर्शी बनाने में सहयोग देगा। इससे यमुना में गिरने वाले नालों की भी निगरानी हो सकेगी।

जल मंत्री प्रवेश वर्मा की उपस्थिति में डीजेबी और एआरएफ के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया गया। दोनों संस्थान अनुसंधान, आंकड़ा एकीकरण और एआइ तकनीकों के प्रयोग से दिल्ली का जल एवं अपशिष्ट जल प्रबंधन करेंगे। इससे गैर-राजस्व जल (चोरी, रिसाव व बर्बादी और अन्य कारणों से जल बोर्ड को जिसका राजस्व नहीं मिलता है) की समस्या को कम करने, अवसंरचना के भविष्यवाणी आधारित रखरखाव और जल व सीवेज उपचार संयंत्रों की रियल टाइम निगरानी में मदद मिलेगी। डिजिटल ट्विन तकनीक से जल प्रणाली का वर्चुअल माडल तैयार होगा। इससे रिसाव, पानी के दबाव की समस्या और अन्य तकनीकी समस्याओं का समय पर पता लग सकेगा। एआइ-सक्षम जन शिकायत निवारण और राजस्व प्रबंधन प्रणाली विकसित की जाएगी।

जल बोर्ड ने आइआइटी कानपुर से किया समझौता, जल प्रबंधन सुधरने व यमुना में गिरने वाले नालों की निगरानी में मिलेगी मदद

दिल्ली सरकार तकनीकी रूप से बनेगी मजबूत

दिल्ली सरकार के सूचना प्रौद्योगिकी विभाग की बुधवार को समीक्षा बैठक हुई। इस बैठक में दिल्ली और दिल्लीवासियों के कैंद्रित डिजिटल गवर्नेंस को जन कल्याणकारी बनाने की दिशा में फुलप्रूफ रोडमैप तैयार किया गया। इससे कल्याणकारी सेवाओं की डिलीवरी बेहद सरल होने के साथ सभी सरकारी विभागों के बीच समन्वय को और बेहतर किया जा सके। बैठक में सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री डा. पंकज सिंह ने देश के अन्य राज्यों में चल रहे डिजिटल पहलों पर भी चर्चा की। बैठक में अफसरों ने बताया कि आइटी विभाग ने हरियाणा, राजस्थान व महाराष्ट्र में चल रहे आइटी सुधारों का बारीकी से अध्ययन किया है।

सांसदों वाले फ्लैट्स में लगी आग, 20 मिनट में पाया काबू

- इलेक्ट्रिक पैनल में शार्ट सर्किट के कारण लगी, बचा हादसा
- हादसे की सूचना पर पहुंची थीं दमकल की आठ गाड़ियां

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली : राजधानी के बाबा खड़क सिंह मार्ग स्थित एमपी (सांसद) फ्लैट्स में बुधवार रात आग लग गई। सूचना पर पहुंची दमकल की आठ गाड़ियों ने 20 मिनट में आग पर काबू पा लिया। शुरुआती जांच में पता चला है कि आग फ्लैट्स में लगे इलेक्ट्रिक पैनल में शार्ट सर्किट के कारण लगी थी।

दमकल विभाग के एक अधिकारी ने बताया कि बुधवार की रात आठ बजकर 54 मिनट पर दमकल विभाग को एमपी फ्लैट्स में आग लगने की सूचना मिली थी। इसके बाद दमकल विभाग ने तुरंत आठ फायर टेंडर मौके पर भेजे।

दमकल कर्मचारियों ने करीब 20 मिनट के भीतर आग पर पूरी तरह काबू पा लिया। प्रारंभिक जांच में पता चला है कि आग फ्लैट परिसर में लगे इलेक्ट्रिक पैनल में शार्ट सर्किट के कारण लगी थी। दमकल विभाग के अधिकारियों ने बताया कि आग सीमित दायरे में थी, इसलिए उसे तेजी से नियंत्रित किया जा सका।

एहतियातन पूरी बिल्डिंग को खाली कराया गया और विद्युत आपूर्ति अस्थायी रूप से बंद कर दी गई। घटना के बाद विद्युत विभाग की टीम भी मौके पर पहुंची और तकनीकी जांच शुरू कर दी है। फिलहाल, आग लगने के सही कारणों की जांच की जा रही है। बहुत गनीमत रही कि शार्ट सर्किट के बाद बड़ा हादसा नहीं हुआ। अगर आग बढ़ जाती तो हादसा विकराल रूप ले सकता था।

रिसेप्शन मंच पर दूल्हे को दोस्त ने मारा चाकू

अमरावती, प्रेट्र : महाराष्ट्र के अमरावती जिले के बडनेरा कस्बे में एक व्यक्ति को उसके शादी के रिसेप्शन मंच पर उसके दोस्त ने चाकू मार दिया। शादी की रिकार्डिंग कर रहे ड्रोन कैमरे ने भागते समय आरोपित का काफी दूरी तक पीछा किया। पुलिस उपायुक्त गणेश शिंदे के अनुसार, यह घटना मंगलवार रात बडनेरा रोड स्थित साहिल लान में हुई। उन्होंने कहा, ''सुजल समुद्रे पर उसके दोस्त राघव बख्शी ने पुराने विवाद को लेकर चाकू से हमला बोल दिया और फरार हो गया। इस हमले में सुजल घायल हो गया।'' रिकार्डिंग कर रहे ड्रोन से लिए गए फुटेज में वह शादी स्थल से भागता, जबकि एक अन्य शख्स काफी दूरी पर बाइक लेकर उसका इंतजार करता नजर आ रहा है। फुटेज में नजर आ रहा है कि आरोपित बाइक पर बैठने से पहले पीछा कर रहे व्यक्ति को धमकाता है और बाद में बाइक वाले के साथ फरार हो जाता है। शिंदे ने कहा कि आरोपित ने दो दिन पहले भी पीड़ित पर हमला किया था।

आतंकी साजिश में एनआइए ने पांच राज्यों के 10 स्थानों पर मारे छापे

हरियाणा, बंगाल, त्रिपुरा, मेघालय व गुजरात में एक साथ कार्रवाई, तलाशी के दौरान कई डिजिटल उपकरण, संदिग्ध दस्तावेज जब्त

नई दिल्ली, एएनआइः एनआइए ने बुधवार को अवैध बांग्लादेशी प्रवासियों से जुड़े अल-कायदा गुजरात आतंकी साजिश मामले में पांच राज्यों में दस स्थानों पर छापेमारी की। एजेंसी ने हरियाणा, बंगाल, त्रिपुरा, मेघालय और गुजरात में चुनिंदा स्थानों पर विभिन्न संदिग्धों व उनके सहयोगियों से जुड़े परिसरों की एक साथ तलाशी ली। एनआइए ने दावा किया है कि तलाशी के दौरान कई डिजिटल उपकरण और संदिग्ध दस्तावेज जब्त किए गए हैं। एनआइए ने मूल रूप से जून 2023 में गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम, भारतीय दंड संहिता और विदेशी अधिनियम की विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज किया था। मामले में अब तक की एनआइए जांच से पता चला है कि चार बांग्लादेशी नागरिक जाली भारतीय पहचान दस्तावेजों का उपयोग करके बांग्लादेश से अवैध रूप से भारत में घुसपैठ कर आए थे। आरोपितों की पहचान मोहम्मद सोजिबमियान, मुन्ना खालिद अंसारी उर्फ मुन्ना खान, अजरुल इस्लाम उर्फ जहांगीर उर्फ आकाश खान और अब्दुल लतीफ उर्फ मोमिनुल अंसारी के रूप में हुई है। एनआइए ने एक बयान में कहा कि वे प्रतिबंधित अल-कायदा आतंकवादी संगठन से जुड़े पाए गए। ये लोग बांग्लादेश में अल-कायदा के गुर्गों के लिए धन इकट्ठा करने और उसे स्थानांतरित करने में शामिल थे और मुस्लिम युवाओं को सक्रिय रूप से प्रेरित करने में भी शामिल पाए गए। आतंकवाद-रोधी एजेंसी ने आगे कहा कि भारत और सीमा पार सक्रिय आतंकवादी नेटवर्क की मौजूदगी, संबंधों और वित्तीय चैनलों का पता लगाने के प्रयासों के तहत मामले में उसकी जांच जारी है।

उत्तराखंड में लिव इन संबंधों की गोपनीयता बढ़ी, अभिभावकों को बताने की बाध्यता खत्म

विकास गुसाई ● जागरण

- उत्तराखंड में समान नागरिक संहिता में लिव इन संबंधों में बढ़ेगी गोपनीयता
- लिव इन संबंधों से जन्मे बच्चे की जानकारी देना नहीं होगा आवश्यक

देहरादूनः उत्तराखंड में समान नागरिक संहिता के तहत लिव इन संबंधों की गोपनीयता को बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण संशोधन किए गए हैं। अब लिव इन में रहने वाले युगल के माता-पिता को इन संबंधों की जानकारी देने की बाध्यता समाप्त कर दी गई है। पुलिस को भी इनकी सूचना केवल जानकारी के लिए दी जाएगी। लिव इन संबंधों की समाप्ति पर युवती के गर्भवती होने या बच्चे के जन्म की सूचना देना अनिवार्य नहीं होगा। लिव इन में रहने वालों को मकान मालिक से प्रमाण पत्र लेना भी आवश्यक नहीं होगा। उत्तराखंड में इस वर्ष फरवरी से समान नागरिक संहिता लागू हो चुकी है, जिसके क्रियान्वयन के लिए नियमावली भी बनाई गई थी। हालांकि, नियमावली के कई प्रविधानों में निजता के अधिकारों का उल्लंघन हो रहा था, जिसके चलते कई व्यक्तियों ने हाई कोर्ट में याचिका दायर की थी। कोर्ट के निर्देशों के अनुसार, गृह विभाग ने नियमावली में संशोधन किया है, जिसे समान नागरिक संहिता चतुर्थ संशोधन नियमावली नाम दिया गया है। लिव इन में धर्म परिवर्तन की जानकारी देना आवश्यक है।

हर परिवार को मिलेगी विशिष्ट पहचान संख्या

राज्य ब्यूरो, जागरण ● देहरादून : उत्तराखंड में निवासरत सभी परिवारों को अब विशिष्ट पहचान संख्या मिलेगी। साथ ही, राज्य में लागू विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों को इस संख्या से एकीकृत किया जाएगा। राज्य कैबिनेट की बुधवार को हुई बैठक में इसके लिए नियोजन विभाग के अंतर्गत देवभूमि परिवार योजना लागू करने को सैद्धांतिक सहमति दे दी गई। सीएम पुष्कर सिंह धामी की अध्यक्षता में सचिवालय में हुई बैठक में 12 प्रस्तावों पर मुहर लगाई गई। सचिव शैलेश बगोली ने बताया कि देवभूमि परिवार योजना के तहत राज्य के प्रत्येक परिवार का डेटा बेस तैयार कर उन्हें विशिष्ट परिवार पहचान संख्या दी जाएगी। योजनाओं के लाभार्थी परिवारों को इस संख्या से संबद्ध किया जाएगा।

ईज आफ डूइंग बिजनेस में हरियाणा को मिला 'टाप अचीवर' अवार्ड

केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल नई दिल्ली में हरियाणा के उद्योग एवं वाणिज्य महानिदेशक डा. यश गर्ग को ईज आफ डूइंग बिजनेस (इओडीबी) के लिए 'टाप अचीवर' पुरस्कार प्रदान करते हुए ● डीपीआर

राज्य ब्यूरो, जागरण ● चंडीगढ़ः भारतीय उद्योग और वाणिज्य मंत्रालय द्वारा आयोजित उद्योग समागम-2025 में हरियाणा को ईज आफ डूइंग बिजनेस के तहत 'टाप अचीवर' राज्य के रूप में सम्मानित किया गया। यह सम्मान बिजनेस रिफार्म्स एक्शन प्लान 2024 में तीन प्रमुख सुधार क्षेत्रों बिजनेस एंट्री, लैंड एडमिनिस्ट्रेशन और सेक्टर स्पेसिफिक हेल्थकेयर में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने पर दिया गया है। यह कार्यक्रम केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल की अध्यक्षता में नई दिल्ली के सुषमा स्वराज भवन में आयोजित किया गया। देशभर के राज्यों व केंद्रशासित प्रदेशों को 25 सुधार क्षेत्रों में किए प्रदर्शन के आधार पर सम्मानित किया गया। सुधार क्षेत्रों में बिजनेस एंट्री, कंस्ट्रक्शन परमिट, लेबर रेगुलेशन, लैंड एडमिनिस्ट्रेशन, एनवायरनमेंट रजिस्ट्रेशन व सर्विस सेक्टर समेत अन्य सेवाएं शामिल थीं।

नोएल टाटा का बेटा नेविल बना दोराबजी टाटा ट्रस्ट का सदस्य

- समूह के पूर्व कंपनी प्रमुख भास्कर भट भी बने सदस्य
- बावजूद इसके रतन टाटा ट्रस्ट का हिस्सा नहीं बन सके दोनों

नई दिल्ली, प्रेट्रः टाटा ट्रस्ट्स के चेयरमैन नोएल टाटा अपने बेटे नेविल को टाटा संस में बहुलांश हिस्सेदारी रखने वाले दो शक्तिशाली ट्रस्टों में से एक के बोर्ड में शामिल कराने में सफल रहे हैं। हालांकि, वे दूसरे ट्रस्ट में अपनी जगह बनाने में कामयाब नहीं हुए। पिछले साल अक्टूबर में रतन टाटा के निधन के बाद नोएल ने टाटा ट्रस्ट्स के चेयरमैन का पद संभाला था। यह परोपकारी संगठनों का एक समूह है, जिनकी टाटा संस में सामूहिक रूप से 65.4 प्रतिशत हिस्सेदारी है। यह 156 साल पुराने टाटा समूह की होल्डिंग कंपनी है, जिसमें 30 सूचीबद्ध संस्थाओं सहित लगभग 400 कंपनियां शामिल हैं। ट्रस्ट द्वारा जारी बयान के अनुसार, बुधवार को नोएल के बेटे नेविल और समूह के पूर्व कंपनी प्रमुख भास्कर भट को श्री दोराबजी टाटा ट्रस्ट (एसडीटीटी) में नियुक्त किया गया। इस ट्रस्ट की टाटा संस में 28 प्रतिशत हिस्सेदारी है। हालांकि, सूत्रों ने बताया कि वे दोनों को सर रतन टाटा ट्रस्ट (एसआरटीटी) में नियुक्त नहीं करा सके, जिसकी टाटा संस में 23.6 प्रतिशत हिस्सेदारी है। ऐसा बताया जाता है कि एसआरटीटी के ट्रस्टी और इसके वाइस चेयरमैन वेणु श्रीनिवासन द्वारा उठाई गई आपत्ति के चलते ऐसा नहीं हो सका। ट्रस्ट की बैठक में यह नाटकीय घटनाक्रम रतन टाटा के विश्वासपात्र और लंबे समय से ट्रस्टी रहे मेहली मिस्त्री को बोर्ड से निकाले जाने के कुछ सप्ताह बाद हुआ है।

टीबी के नए मामलों में 2015 से 21% गिरावट

नई दिल्ली, प्रेट्रः भारत में टीबी के नए मामलों में 2015 से उल्लेखनीय गिरावट आई है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने बुधवार को विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) की ग्लोबल टीबी रिपोर्ट 2025 के हवाले से बताया कि भारत में टीबी के मामलों (हर वर्ष सामने आने वाले नए मामलों) में 21 प्रतिशत की कमी आई है, जो 2015 में प्रति लाख जनसंख्या पर 237 से घटकर 2024 में प्रति लाख जनसंख्या पर 187 रह गई है। यह कमी वैश्विक गिरावट (12 प्रतिशत) की तुलना में लगभग दोगुनी है। स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार, नई तकनीकों को तेजी से अपनाने, सेवाओं के विकेंद्रीकरण और व्यापक कार्यक्रमों के चलते देश में उपचार कवरेज 2024 में 92 प्रतिशत से ज्यादा हो गया है। यह कवरेज 2015 में 53 प्रतिशत था। 2024 में अनुमानित 27 लाख मामलों में से 26.18 लाख टीबी मरीजों का निदान किया गया।

मासिक धर्म का प्रमाण मांगने का मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंचा

सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन ने दायर की याचिका, एमडीयू में महिला सफाई कर्मियों से कथित तौर पर मांगी गई थीं तस्वीरें

नई दिल्ली, प्रेट्र : हरियाणा के महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय (एमडीयू) में तीन महिला सफाई कर्मचारियों से कथित तौर पर उनके मासिक धर्म को तस्वीरों के जरिये साबित करने के लिए कहे जाने का मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंच गया है। सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन (एससीबीए) ने शीर्ष अदालत में एक याचिका दायर कर केंद्र और हरियाणा सरकार को कथित घटना की विस्तृत करने का निर्देश देने का अनुरोध किया है।

बार एसोसिएशन ने सुप्रीम कोर्ट से यह सुनिश्चित करने के लिए दिशा-निर्देश जारी करने का भी अनुरोध किया है कि मासिक धर्म के दौरान महिलाओं और किशोरियों के स्वास्थ्य, गरिमा, शारीरिक स्वायत्तता और निजता के अधिकार का हनन न हो। पुलिस ने बताया कि एमडीयू से जुड़े तीन लोगों पर 31 अक्टूबर को यौन उत्पीड़न का मामला दर्ज किया गया था। इन लोगों पर आरोप है कि उन्होंने महिला सफाई कर्मचारियों से तस्वीरों के जरिये यह साबित करने को कहा कि उन्हें मासिक धर्म हो रहा है। इस बीच, विश्वविद्यालय ने एक बयान में कहा कि उसने दो पर्यवेक्षकों को निलंबित कर दिया है, जिन्हें हरियाणा कौशल रोजगार निगम लिमिटेड के माध्यम से अनुबंध पर नियुक्त किया गया था। घटना की आंतरिक जांच के आदेश दिए गए हैं। कथित घटना 26 अक्टूबर को हरियाणा के राज्यपाल असीम कुमार घोष द्वारा परिसर का दौरा करने से कुछ घंटे पहले हुई।

शीर्ष कोर्ट का हाई कोर्टों को निर्देश, वेबसाइटों पर दें सुरक्षित रखे व दिए फैसलों का विवरण

नई दिल्ली, प्रेट्र : पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ाने के लिए सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को देश के सभी हाई कोर्टों को अपनी वेबसाइटों पर एक डैशबोर्ड बनाने का निर्देश दिया। इस डैशबोर्ड पर 31 जनवरी के बाद सुरक्षित रखे गए फैसलों, सुनाए गए फैसलों और उन्हें उनके प्लेटफार्म पर अपलोड करने की तिथि दी जाए। जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस जोयमाल्या बागची की पीठ ने झारखंड हाई कोर्ट सहित कई हाई कोर्टों द्वारा अंतिम दलीलें सुनने और अपने फैसले सुरक्षित रखने के बाद भी वर्षों तक आपराधिक और दीवानी मामलों में फैसले नहीं सुनाए जाने पर आलोचनात्मक रुख अपनाया। पीठ ने कहा कि ये आंकड़े सार्वजनिक होने चाहिए। जस्टिस सूर्यकांत ने कहा, ''सभी को पता होना चाहिए कि कितने फैसले सुरक्षित रखे गए, कितने मामलों में आदेश पारित किए गए और किस तिथि को फैसला हाई कोर्ट की वेबसाइट पर अपलोड किया गया।'' जस्टिस सूर्यकांत से सहमति जताते हुए जस्टिस बागची ने कहा, ''इससे न्यायपालिका की जनता के प्रति जवाबदेही का पता चलेगा।''

प्रो. को लताड़, तुम युवतियों के लिए खतरा हो

नई दिल्ली, प्रेट्र : सुप्रीम कोर्ट ने इंटरनेट मीडिया पर भारत विरोधी और अश्लील पोस्ट करने के आरोप में गिरफ्तार किए गए असम के एक प्रोफेसर को कड़ी फटकार लगाते हुए कहा कि वह युवतियों के लिए खतरा और विकृत व्यक्ति है, जिसे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। जस्टिस सूर्यकांत और जोयमाल्या बागची की पीठ ने कोकराझार जिले के गोसाईगांव कालेज में प्रोफेसर रहे मोहम्मद जोयनल आबेदीन को अंतरिम जमानत देने से इन्कार करते हुए कहा कि उसे महिलाओं का पीछा करने और उनके बारे में आनलाइन अश्लील टिप्पणियां करने की आदत है। आबेदीन ने मई में कथित तौर पर भारत विरोधी पोस्ट किया था, जिसके लिए उसे गिरफ्तार कर लिया गया।

****

हिन्दुस्तान 1936 सत्य • सार्थक • सदैव

मतदान में आगे महिलाएं

बिहार विधानसभा चुनाव में महिलाओं ने जिस तरह आगे बढ़कर मतदान किया है, वह हमारे लोकतंत्र के स्वर्णिम इतिहास में दर्ज हो गया है। पुरुष मतदाताओं में से 62.8 ने मतदान किया, जबकि महिलाओं में 71.6 प्रतिशत ने मतदान से सबको चकित कर दिया। महिलाओं की बढ़ी भागीदारी की बदौलत ही बिहार में इस बार कुल 66.91 प्रतिशत मतदान हुआ है। बिहार में इतना मतदान कभी नहीं हुआ था। एक समय था, जब आधी महिलाएं भी मतदान के लिए आगे नहीं आती थीं। साल 1962 की बात करें, तो 32.47 प्रतिशत महिलाओं ने ही मतदान किया था, इसका परिणाम यह था कि तब बिहार में कुल मतदान 45 प्रतिशत भी नहीं होता था। पहले दस में से तीन महिलाएं ही मतदान करती थीं, जबकि अब सात से ज्यादा महिलाएं मतदान करने लगी हैं। यह अध्ययन का विषय है कि बिहार राज्य में यह सकारात्मक परिवर्तन कैसे हुआ? वैसे, यह बदलाव बिहार में पहले ही हो जाना चाहिए था। यहां तक पहुंचने में छह दशक से ज्यादा समय लग गया।

यहां यह अवश्य रेखांकित करना चाहिए कि वास्तविक या निष्पक्ष मतदान के दौर में अगर देखें, तो नीतीश कुमार को जो बिहार मिला था, उसमें दस में से पांच महिलाएं भी मतदान के लिए नहीं निकलती थीं। साल 2005 के चुनाव में 44.49 प्रतिशत महिलाओं ने ही मतदान किया था। इसके अगले दस वर्ष में महिलाओं को जमीनी मजबूती मिली, तो साल 2015 के विधानसभा चुनाव में महिला मतदान का प्रतिशत बढ़कर 60.48 हो गया। पिछली बार 2020 में जब चुनाव हुआ, तब कोरोना महामारी का असर था, तो मतदान में मामूली गिरावट दर्ज हुई थी। बेशक, अब 2025 में हुए रिकॉर्ड मतदान से महिलाओं के मनोबल को बहुत मजबूती मिलेगी। साल 2006 में मुख्यमंत्री बालिका साइकिल योजना शुरू हुई थी, जिसने बड़ी संख्या में लड़कियों को स्कूल पहुंचाया। निस्संदेह, स्कूल जाने वाली पीढ़ी आज आगे बढ़कर मतदान कर रही है। अगर स्कूल जाने की बाधाएं कम हुई हैं, तो मतदान की बाधाओं का भी अंत हुआ है। एक दौर वह भी था, जब परिवार के पुरुष सदस्य महिलाओं को मतदान से रोकते थे। अब महिलाओं की ऐसी पीढ़ी आई है, जो पुरुष सदस्यों के रोके नहीं रुकने वाली। पहले पुरुष ही तय करते थे कि किसे वोट देना है, लेकिन अब बड़ी संख्या में महिलाएं स्वयं अपना उम्मीदवार चुनने लगी हैं। भय और बाधा का दूर होना लोकतंत्र की सफलता का प्रमाण है।

बिहार में पहले दस में से तीन महिलाएं ही मतदान करती थीं, जबकि अब सात से ज्यादा महिलाएं मतदान करने लगी हैं। बेशक, बिहार ने एक लंबा सफर तय किया है।

यहां यह भी रेखांकित करना चाहिए कि साल 2006 में बिहार में महिलाओं को पंचायतों में 50 प्रतिशत आरक्षण दिया गया था। इससे गांव-गांव में उनकी ताकत बढ़ी। अब बिहार की पंचायतों में 58 प्रतिशत मुखिया व उप-मुखिया महिलाएं हैं। वहां से लेकर जीविका दीदी तक, बिहार में महिलाओं ने एक लंबा सफर तय किया है। यह भी ध्यान देने की बात है कि बिहार में महिला साक्षरता भी इस सदी में दोगुनी हुई है। फिर भी खासकर ग्रामीण इलाकों में पुरुष और महिला साक्षरता के बीच करीब 20 प्रतिशत का अंतर है। निश्चित रूप से गांवों में मतदान के मामले में महिला-पुरुष के बीच इतना अंतर नहीं होगा। स्नातक स्तर पर तुलना करें, तो बिहार में जहां 18 लाख से ज्यादा पुरुष स्नातक हैं, वहीं चार लाख के करीब महिलाएं स्नातक हैं। लगभग ऐसा ही बड़ा अंतर रोजगार और आर्थिक स्वतंत्रता के मामले में है। अतः बिहार की जो महिलाएं मतदान के मामले में पुरुषों से आगे निकली हैं, उन्हें शिक्षा, रोजगार और आर्थिक मोर्चे पर भी तेजी से आगे आना चाहिए।

हिन्दुस्तान Hindustan | 75 साल पहले 13 नवम्बर, 1950

नग्न पाशविकता

सिओल दक्षिण कोरिया की राजधानी थी। उत्तरी कोरिया के साम्यवादियों ने उस पर कब्जा कर लिया था। संयुक्त राष्ट्रीय सेनाओं ने साम्यवादियों को मार भगाया और सिओल को फिर आजाद कर दिया। दक्षिण कोरिया की भगोड़ी सरकार फिर वहां कायम हो गई है। किन्तु सिओल को कैसी आजादी मिली है, उसका आंखों देखा विवरण *न्यूयार्क टाइम्स* ने प्रकाशित किया है। इस विवरण को पढ़कर हृदय कांप उठता है और प्रश्न पैदा होता है कि यह कैसी सरकार है, जिसे संयुक्त राष्ट्र संघ ने सिओल में स्थापित किया है? क्या वह जल्लादों की सरकार है? क्या उसे लोगों को मनमानी तौर पर क्रूरता और निष्ठुरता पूर्वक गोली का निशाना बनाने की छूट दे दी गई है? क्या यही है वह व्यक्तिगत स्वतंत्रता, जिसके लिए कोरिया के नगर-ग्रामों को उजाड़ा गया और अब भी हजार-हजार पौण्ड के वजनी बम गिराये जा रहे?

न्यूयार्क टाइम्स में श्री चार्ल्स सिओल से लिखते हैं, 'इस नगर के बाहर एक पहाड़ी कब्रिस्तान में 27 व्यक्तियों को, जिन्हें साम्यवादियों से सहयोग करने के अपराध में सजा दी गई थी, गोली से उड़ा दिया गया। इनमें दो स्त्रियां भी थीं। पहली स्त्री सिओल पर उत्तरी कोरियनों के अधिकार के समय सिओल के साम्यवादी मुख्य पुलिस अधिकारी की प्रेमिका थी। उसने प्रेम-गीत गाते हुए मृत्यु का आलिंगन किया। दूसरी स्त्री भी एक साम्यवादी अधिकारी की 47 वर्षीय पत्नी थी। वह स्वयं साम्यवादी पार्टी की महिला संगठन की जिला कप्तान थी। बंदियों को जेल से दो खुली ट्रकों में आठ मील दूर ले जाया गया, किन्तु उन्हें प्राकृतिक दृश्यों को देखने की इजाजत न थी। उन्हें ट्रकों के फर्श पर अपना सिर घुटनों की ओर झुकाये बैठने को बाध्य किया गया। एक बन्दी ने अपना सिर ऊंचा किया, तो कोरिया की फौजी पुलिस के जल्लादों ने तेजी से नीचे दबा दिया। बंदियों को खम्भों के साथ बांधा गया और उनकी छाती पर कागज के निशान लगा दिये गये, ताकि गोली चलाने वाले ठीक जगह निशाना मारकर उनकी यंत्रणा की अवधि को कम कर सकें। साम्यवादी पुलिस के मुख्य अधिकारी की प्रेमिका अपने आठ महीने के बालक को अपनी पीठ पर लिये हुई थी। जब उसे हाथ बांधकर ट्रक में बिठाया जा रहा था, एक अफसर के हुक्म से उसका बालक उससे छीन लिया गया। यह हृदयहीनता का एक उदाहरण था।

भारत-अमेरिका रिश्ते में नई उम्मीदें

दोनों देशों ने अगले 10 वर्षों में रक्षा सहयोग बढ़ाने के लिए एक फ्रेमवर्क पर सहमति जताई है। राष्ट्रपति ट्रंप का एच-1बी वीजा पर नया रुख सुधरते संबंधों की तस्दीक करता है।

यहां स्कैन करें

हर्ष वी पंत | प्रोफेसर, किंग्स कॉलेज, लंदन

अपने आक्रामक रुख से कूटनीतिक संबंध तक को दांव पर लगाने वाले अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप अब संभवतः नरम पड़ने लगे हैं। एच-1बी वीजा कार्यक्रम पर उनका ताजा बयान कम-से-कम यही संकेत दे रहा है। एक टीवी कार्यक्रम के दौरान उन्होंने कहा कि अमेरिका को प्रतिभाओं की जरूरत है, इसलिए 'खास भूमिकाओं' के लिए उनको बुलाया जाएगा। जाहिर है, यह भारतीय पेशेवरों के लिए एक राहत भरी खबर है, जिनकी पेशानी पर तब बल पड़ गए थे, जब ट्रंप प्रशासन द्वारा वीजा शुल्क में अप्रत्याशित वृद्धि का एलान किया गया था। जबकि, इन्हीं भारतीयों की योग्यता पर अमेरिकी टेक कंपनियां निर्भर रही हैं।

हालांकि, इससे पहले भारत और अमेरिका ने अगले 10 वर्षों में रक्षा सहयोग बढ़ाने के लिए एक फ्रेमवर्क पर भी सहमति जताई है। वास्तव में, दोनों देशों के रिश्तों का एक मजबूत स्तंभ रक्षा साझेदारी है, जो पिछले दो दशकों की हथियारों की खरीद, तकनीक के हस्तांतरण और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में बढ़ते तालमेल से पुष्ट होती है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि द्विपक्षीय संबंधों में अपेक्षा व वास्तविकता के बीच का अंतर खत्म होने लगा है, जिसकी वजह निस्संदेह राजनीतिक व सुरक्षा संबंधों का लगातार सुधरना है।

बेशक, राष्ट्रपति ट्रंप के दूसरे कार्यकाल में एक के बाद दूसरी प्रतिकूल राजनीतिक घटनाएं हुई हैं, जिनसे धारणा और तरक्की के बीच की खाई घटने के बजाय बढ़ गई है। खासतौर से ट्रंप के नाटकीय रुख से यही सोच बनी कि दोनों देशों के बीच सब कुछ ठीक नहीं है। फिर भी, उम्मीद जगाने वाली कवायदें निरंतर चलती रही हैं। रक्षा समझौते के बाद ट्रंप का एच-1बी वीजा पर यह नया रुख इसी की तस्दीक करता है।

नए 'डिफेंस फ्रेमवर्क एग्रीमेंट' को कम से कम चार कारणों से बेहद अहम माना जा रहा है। पहला, यह समझौता राजनीतिक रूप से ऐसे संवेदनशील समय में हुआ है, जब राष्ट्रपति ट्रंप ने भारत पर सबसे ज्यादा टैरिफ लाद रखा है। दूसरा, दोनों देशों के बीच सुरक्षा और व्यापार का रिश्ता चोली-दामन सा रहा है, लिहाजा रक्षा समझौता आश्वस्त करता है कि व्यापार समझौते को लेकर चल रही बातचीत भी देर-सबेर पटरी पर आ जाएगी। तीसरा, इस समझौते के बाद न सिर्फ भारत को महत्वपूर्ण रक्षा उपकरणों की तेज आपूर्ति सुनिश्चित हो सकेगी, बल्कि तकनीकी सहयोग व उसके हस्तांतरण की राह भी आसान हो सकती है।

चौथी व आखिरी वजह। यह समझौता द्विपक्षीय सहयोग के दशकों पुराने उस वायदे को आगे बढ़ाता है, जो 1995 में अमेरिका व भारत के बीच रक्षा संबंधों को लेकर 'एग्रीड मिनट' (सहमत कार्यवृत्त) पर हस्ताक्षर किए जाने के साथ शुरू हुआ था। यह शीत युद्ध के बाद के दौर में दोनों देशों के बीच पहला औपचारिक रक्षा समझौता था। साल 2005 में तत्कालीन रक्षा मंत्री प्रणब मुखर्जी और उनके अमेरिकी समकक्ष डोनाल्ड रम्सफेल्ड ने एक नया समझौता करके इसको आगे बढ़ाया था। इसके बाद, जून 2015 में भारतीय रक्षा मंत्री मनोहर पर्रिकर और अमेरिकी रक्षा मंत्री ऐश कार्टर ने भी एक डिफेंस फ्रेमवर्क एग्रीमेंट पर हस्ताक्षर किए थे।

नया डिफेंस फ्रेमवर्क भारत और अमेरिका के रक्षा व सुरक्षा संबंधों को नई दिशा देने का काम करेगा। वह भी ऐसे वक्त में, जब तकनीक ही नहीं, युद्ध का स्वरूप भी तेजी से बदल रहा है, और युद्ध-क्षेत्र की जरूरतें, प्रौद्योगिकियां और प्रकृति में तेज बदलाव नजर आ रहे हैं। इस फ्रेमवर्क से द्विपक्षीय सुरक्षा साझेदारी में एक मजबूत भरोसा बनेगा, साथ ही महत्वपूर्ण क्षेत्रों में समय-समय पर समीक्षा और उसी के अनुसार सुधार की प्रक्रिया भी हो सकेगी।

इस समझौते को क्षेत्रीय स्थिरता, प्रतिरोध, तकनीकी सहयोग और सूचनाओं के लेन-देने के लिहाज से भी अहम माना जा रहा है। रक्षा क्षेत्र में इससे फायदा तो मिल ही रहा है, इसमें हिंद-प्रशांत क्षेत्र की सुरक्षा व स्थिरता को लेकर दीर्घकालिक सामरिक नजरिये की झलक भी मिलती है। इसमें मुक्त, खुले और नियम आधारित हिंद-प्रशांत क्षेत्र पर जोर दिया गया है, जो ट्रंप के इस दूसरे शासनकाल के दौरान क्षेत्रीय सुरक्षा में घटते भरोसे को फिर से मजबूत बनाने का काम कर सकता है। हालांकि, हिंद-प्रशांत क्षेत्र में ट्रंप प्रशासन की बदलती सामरिक नीतियों और क्षेत्रीय सुरक्षा के प्रति उसकी सोच के बीच अंतर करना जरूरी है, क्योंकि इसी से हम जान सकेंगे कि हिंद-प्रशांत क्षेत्र में वह कभी-कभी अप्रतिबद्ध रवैया क्यों अपनाता है?

वास्तव में, हिंद-प्रशांत क्षेत्र की सुरक्षा को लेकर अमेरिका की घोषित प्रतिबद्धता में अंतर तब दिखता है, जब चीन के साथ आर्थिक समझौते को अंजाम तक पहुंचाने के लिए वह बेकरार नजर आता है। आसियान शिखर सम्मेलन के दौरान ही अमेरिका और चीन ने एक आर्थिक समझौते पर सहमति जताई है, जो अमेरिकी कंपनियों को राहत पहुंचा सकती है और उनकी आपूर्ति शृंखला में मदद कर सकती है। मगर इसने 'क्वाड' के तहत भारत, जापान और ऑस्ट्रेलिया जैसे क्षेत्रीय साझेदारों के साथ बनाए गए तालमेल को खतरे में भी डाल दिया है। इससे मुमकिन है कि इस क्षेत्र में अमेरिका को कुछ रणनीतिक नुकसान हो। इसी तरह, नए रक्षा ढांचे को भी क्रियान्वयन के दौरान कठिन परीक्षाओं का सामना करना पड़ सकता है।

साल 2015 के फ्रेमवर्क का यदि कोई सबक है, तो यही कि भारत-अमेरिका रक्षा साझेदारी को लेकर फैसले लेने और तालमेल बनाने में तेजी लानी चाहिए। पिछले दशक की प्रतिबद्धताएं अब तक पूरी नहीं हो सकी हैं, विशेष रूप से रक्षा व्यापार और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में संयुक्त नवाचार को प्रोत्साहित करने और साझा तकनीकी व औद्योगिक संबंध विकसित करने के मामले में। इतना ही नहीं, ट्रंप के दूसरे कार्यकाल के दौरान निवेश बढ़ाने के लिए दिए जा रहे राजनीतिक व कूटनीतिक दबावों को देखते हुए एक खतरा यह भी है कि भारत-अमेरिका रिश्ता 'क्रेता-विक्रेता मॉडल' में न ढल जाए। यह एक ऐसा मॉडल है, जिससे ऊपर उठने का फैसला दोनों देशों ने 2015 में ही कर लिया था।

लिहाजा, अब दोनों देशों को इस नए दशकीय सुरक्षा समझौते को ध्यान में रखकर आगे बढ़ना चाहिए, और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि द्विपक्षीय संबंध अब भी साझा नवाचार, आपसी विश्वास और रणनीतिक नजदीकी पर टिके रहें। शर्तों के मुताबिक, साल 2035 में इस समझौते का नवीनीकरण किया जाएगा। मगर दस वर्षों का यह रास्ता काफी लंबा है और दोनों देश इसे कैसे तय करते हैं, इसी से द्विपक्षीय रक्षा व सुरक्षा संबंधों का अगला अध्याय लिखा जाएगा।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

जहरीले प्रदूषण से दिल्ली का जीतना देश के लिए जरूरी

यहां स्कैन करें

वीरेंद्र कुमार पैन्यूली | पर्यावरणविद्

राजधानी दिल्ली के प्रदूषण का मुद्दा एक बार फिर राष्ट्रीय बहस के केंद्र में आ गया है। पिछले करीब एक महीने से यहां की वायु गुणवत्ता खराब श्रेणी में दर्ज की जा रही और अब तो नागरिक भी इसके खिलाफ सड़कों पर उतरने लगे हैं। आलम यह है कि राज्य सरकार को दिल्ली में 'ग्रैप-3' की पाबंदियां लागू करनी पड़ी हैं। निर्माण कार्यों, डीजल वाहनों और खनन कार्यों पर रोक लगा दी गई है। पांचवीं तक के बच्चों की ऑनलाइन कक्षाएं लेने और लोगों से निजी गाड़ियों के कम इस्तेमाल की अपील की गई है। दिल्ली के प्रदूषण का असर देश भर की मनःस्थिति पर पड़ता है कि आखिर राजधानी ही जब इस समस्या का निदान नहीं कर पा रही, तो फिर छोटे शहरों के वैश्विक प्रदूषण का क्या होगा?

वायु प्रदूषण एक वैश्विक समस्या है और यह मानव स्वास्थ्य के साथ इस ग्रह की सेहत व जलवायु परिवर्तन पर भी असर डालता है। सबसे पहले हमें यह समझने की जरूरत है कि स्वच्छ हवा हरेक जगह सभी सामाजिक-आर्थिक वर्ग के लोगों को उपलब्ध होनी ही चाहिए। 7 सितंबर, 2021 को आयोजित 'इंटरनेशनल डे ऑफ क्लीन एअर फॉर ब्लू स्काई' का विषय था- स्वस्थ हवा, स्वस्थ ग्रह। इस दिवस का उपयोग वायु प्रदूषण, मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण के अंतरसंबंधों पर प्रकाश डालने के लिए किया जाता है। इसके बाद ही भारत में 16 दिसंबर, 2021 को सर्वोच्च न्यायालय ने सर्वाधिक वायु प्रदूषित राष्ट्रीय राजधानी में वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग को यह दायित्व सौंपा था कि वह जन-सामान्य व विशेषज्ञों की राय से दिल्ली प्रदूषण का कोई स्थायी समाधान निकाले।

पूरे देश में यह पैगाम जाता है कि जब राजधानी तमाम उपायों के बाद इस समस्या का निदान नहीं कर पा रही, तो छोटे शहर भला क्या करें?

इस आदेश के बाद धुएं से बचाव की निगरानी के लिए लगभग 250 टीमें, निर्माण स्थलों पर नजर रखने को 75 और वाहन प्रदूषण प्रमाणपत्र की जांच में 500 टीमें लगाई गईं। भवन-निर्माण व तोड़फोड़ पर रोक लगी। जारी निर्माण कार्यों के लिए चेक लिस्ट व संहिता बनीं। ग्रीन मार्शल नियुक्त किए गए। नियमों का पालन न करने वाली निर्माण इकाइयों पर भारी जुर्माना लगता था। दिल्ली की शीतकालीन योजना में अनावश्यक सेवाओं से जुड़े वाहनों का दिल्ली में प्रवेश रोक दिया गया था। दस साल पुराने पेट्रोल और 15 साल पुराने डीजल वाहनों को स्क्रैप करने व 65 चिह्नित जाम वाली सड़कों पर जाम न होने देने की योजना बनाई गई थी। शीर्ष अदालत ने ही दिल्ली में स्मॉग टॉवर लगाने का सुझाव दिया था। फिर भी, दिल्ली प्रदूषण का अस्थायी समाधान तक नहीं निकला। यह चिंता का विषय होना चाहिए

दिल्ली को स्थायी समाधान चाहिए, तो पिछली शीतकालीन योजना की सीमाओं को परखते हुए उससे सीख लेनी चाहिए। प्रदूषण रोकथाम की योजना चाहे कितने ही विशेषज्ञों द्वारा प्रतिपादित हो, बाहर से आ रहे प्रदूषण पर रोक लगाए बिना वह सफल नहीं हो सकती है।

स्थायी समाधान के लिए प्रदूषण के मूल स्रोतों पर नियंत्रण करना होगा। पटाखे और कूड़ा जलाने पर पूर्ण रोक इस दिशा में कारगर हो सकती है। कूड़े के पहाड़ों को हर हाल में हटाना ही होगा। करीब 25-26 प्रतिशत वायु प्रदूषण घरों के ठोस ईंधन से निकला हुआ होता है। पड़ोसी राज्यों में पराली जलाने से दिल्ली की वायु गुणवत्ता प्रभावित होती है। सल्फर डाई-ऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड, अमोनिया जैसे जाने हुए प्रदूषकों के अलावा ठोस पीएम 2.5 प्रदूषकों के उत्सर्जन को भी तय सीमा में बांधना ही होगा। इसके साथ ही उन पर्यावरण नियमों, नीतियों व मानकों को लागू किया जाए, जिससे हवा में पहुंचने वाले प्रदूषणों का कम से कम उत्सर्जन हो। एक्सप्रेस-वे की दोनों तरफ पौधे लगें, तो वे प्रदूषण-शोषक का काम करेंगे। कोयला आधारित बिजली उत्पादन वाली इकाइयों और डीजल से चलने वाले जेनरेटरों का विकल्प ढूंढ़ना होगा। वायु प्रदूषण के स्थायी समाधान के लिए भ्रष्टाचार और कुशासन से लड़ाई बहुत जरूरी है, क्योंकि इनके कारण सभी उपाय सही से जमीन पर लागू नहीं हो पा रहे।

अमेरिका ने सन् 1970 में ही साफ हवा के मानक व कानून घोषित कर दिए थे, किंतु अभी भी कई क्षेत्रों में हवा की गुणवत्ता का स्तर इनसे काफी नीचे चला जाता है। अतः हताशा छोड़कर वायु प्रदूषण को कम से कम करने की राह पर हमें अपनी भूमिका निभानी पड़ेगी।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

मनसा वाचा कर्मणा

शांति पाने का रास्ता

वैदिक शास्त्रों और बौद्ध धर्म की महान शिक्षाओं में एक यह है कि व्यक्ति आत्म-जागरूकता के जरिये दुनिया में सबसे ज्यादा योगदान देता है। उच्च चेतना व्यक्तिगत और सामाजिक, हरेक स्तर पर शांति व रचनात्मकता में योगदान देती है। यह शिक्षा हर युग में इसलिए सच है, क्योंकि हर व्यक्ति को संपूर्ण, सचेत और स्वतंत्र होने के लिए बनाया गया था। हमारा सार ही चेतना है।

लेकिन आधुनिक जिंदगी संभावनाओं की इस दृष्टि को पृष्ठभूमि में धकेल देती है। हम सब रोजमर्रा के कामों, जरूरतों और दूसरी चीजों में व्यस्त रहते हैं। हमें खुशी, प्यार, शांति, दया और आत्मबोध की झलक मिलती है, जो बताती है कि हम असल में कौन हैं। इसलिए असली बदलाव मुमकिन है। अपनी चेतना को फिर से जगाएं, तो आप अपनी आत्मा को फिर से जिंदा कर सकेंगे। एक अचेतन जीवन को चेतन जीवन में बदलने से सार्थक कुछ भी नहीं है। एक चेतना रहित जिंदगी पुरानी आदतों, पुरानी सोच, छिपी हुई चिंता और निरंतर तनाव से भरी होती है। जबकि चेतन जीवन एक ऐसी स्वाभाविक अवस्था पर आधारित होता है, जो सरल, शांत होती है और आपके गहरे आत्म से प्रेम, करुणा व रचनात्मकता के आवेगों को ग्रहण करने के लिए तैयार होती है।

आपको अपने अंतर से बात करने की जरूरत है। बस उससे एक संवाद की जरूरत है और मुझे पूरा भरोसा है कि हम मिलकर वह संपर्क बना सकते हैं। वैदिक परंपरा के अनुसार, हम सत्संग का अनुभव कर सकते हैं, जो आध्यात्मिक संवाद की ही एक सभा है। बौद्ध धर्म में आध्यात्मिक समुदाय के लिए जाना-माना शब्द है 'संघ', जो एक साझा आधात्मिक रास्ते से जुड़ा है। इसमें एक व्यापक वैश्विक समुदाय गठित करने की क्षमता है, जो उन परेशान करने वाले मुद्दों के समाधान पर केंद्रित है, जिनके बारे में हम सब बहुत ज्यादा चिंतित हैं। इसका एकमात्र समाधान यही है कि चेतना को मौजूदा विभ्रम और टकराव के स्तर से ऊपर उठाया जाए।

मैं आपसे कहता हूं कि आप स्वयं यह तय करें कि क्या वह समय आ गया है? आप खुद परखें कि क्या यह वही काल्पनिक अंधेरा है, जो भोर से ठीक पहले आता है? इसका एकमात्र सटीक जवाब यही है कि हम सब अपने अंदर सुबह लाएं और फिर प्रकाश में जिएं। इस आधार पर हम जो भी काम करेंगे, वह चिंता और डर के बजाय गहरी जागरूकता पर आधारित होगा। जिंदगी में शांति, संतुलन, खुशी, प्यार, सेहत व सृजनशीलता पाने के लिए आप अपने रास्ते का इस्तेमाल कर सकते हैं, क्योंकि ये तमाम चीजें एक इंसान के तौर पर आपकी पहुंच में हैं, इसलिए ये दुनिया की पहुंच में भी हैं। कोई अन्य रास्ता नहीं है। जैसा कि एक पुरानी कहावत कहती है, शांति पाने का कोई रास्ता नहीं है। शांति ही रास्ता है।

जिंदगी में शांति, संतुलन, खुशी, प्यार, अच्छी सेहत और सृजनशीलता पाने के लिए आप अपने रास्ते का इस्तेमाल कर सकते हैं, क्योंकि ये तमाम चीजें एक इंसान के तौर पर आपकी पहुंच में हैं।

दीपक चोपड़ा

केर स्टार्मर | ब्रिटिश प्रधानमंत्री

हर बच्चे को ऐसा जुनून विकसित करने का मौका मिलना चाहिए, जो उनकी जिंदगी को बेहतर बनाए और एक सफल करियर के लिए जरूरी कौशल सिखाए। इसके लिए गणित, अंग्रेजी के साथ रचनात्मक विषयों की अहमियत भी पहचाननी होगी।

अनुलोम-विलोम

व्हाइट कॉलर आतंकवाद

व्हाइट कॉलर आतंकवाद एक नई चुनौती

दिल्ली धमाके की गूंज अब तक शांत नहीं हुई है। इस मामले में जितने भी संदिग्धों के नाम सामने आए हैं, उनमें से अधिकतर पढ़े-लिखे लोग हैं। यही कारण है कि इसे 'व्हाइट कॉलर टेरर मॉडल' कहा जा रहा है। आखिर क्या है व्हाइट कॉलर आतंकवाद? दरअसल, इसका तात्पर्य उन आतंकियों से है, जो पढ़े-लिखे और पेशेवर हैं। इनमें कोई डॉक्टर होता है, तो कोई इंजीनियर, तो कोई प्रबंधन क्षेत्र का पेशेवर। कहने को तो ये पढ़े-लिखे और डिग्रीधारक होते हैं, लेकिन इनका असली काम आतंकवाद फैलाना और आतंकी गतिविधियों में शामिल होना है। दिल्ली धमाके में जो गिरफ्तारियां हुई हैं, उनमें डॉक्टर अधिक हैं। इनके तार दिल्ली से लेकर जम्मू-कश्मीर तक हैं, जिसका मतलब है कि पूरे देश में व्हाइट कॉलर आतंकियों का नेटवर्क बढ़ रहा है।

आमतौर पर यह धारणा रही है कि गरीबी व अशिक्षा से ही आतंकवाद का जन्म होता है और आतंकी मूलतः गरीब या अशिक्षित होते हैं। व्हाइट कॉलर आतंकवाद इस धारणा को तोड़ता है। इन दहशतगर्दों को आतंकी संगठनों का 'बैकबोन' माना जाता है। हथियार उठाकर किसी हमले या आतंकी वारदात को अंजाम देने वाले आतंकियों की पहचान आसान होती है, लेकिन पीठ पीछे उनकी मदद करने वाले पढ़े-लिखे इन अराजक तत्वों की पहचान काफी मुश्किल। ये लॉजिस्टिक सपोर्ट मुहैया कराते हैं, जानकारी व संदेश एक से दूसरी जगह पहुंचाते हैं, फंड जुटाते हैं और पूरे आतंकी संगठन को चलाने में मदद करते हैं। इस तरह, जो ढांचा ये तैयार करते हैं, उसे बहुत मजबूत माना जाता है। आजकल यह प्रवृत्ति काफी बढ़ गई है, क्योंकि आतंकी संगठनों के भीतर यह धारणा होती है कि पढ़े-लिखे आतंकी दहशतगर्दी को नया आयाम दे सकते हैं। इनकी शिक्षा-दीक्षा का इस्तेमाल किसी आम इंसान को 'भ्रमित करने' में किया जा सकता है और उसके जरिये आतंकवाद फैलाया जा सकता है। ऐसा इसलिए, क्योंकि ऐसे आतंकियों का आम जनमानस पर प्रभाव पड़ता है।

एक बात तो तय है कि दिल्ली धमाके में जितने भी लोग पकड़े जाएंगे, उनमें से अधिकतर व्हाइट कॉलर ही होंगे। मुमकिन है कि इनके आका पाकिस्तान में बैठे हों और संचार के आधुनिक साधनों की मदद से इन लोगों के मन में जहर भर दिया गया हो। अब हमारी खुफिया एजेंसियों को सिर्फ आतंकवाद से नहीं लड़ना है, बल्कि उसके उन्नत रूप 'व्हाइट कॉलर आतंकवाद' से भी लड़ना है। भले ही, इन पढ़े-लिखे आतंकियों की पहचान कठिन हो, लेकिन उम्मीद यही है कि हमारी एजेंसिया इनको समय रहते पकड़ने में कामयाब होंगी।

अमित बैजनाथ गर्ग, टिप्पणीकार

पहले भी पढ़े-लिखे लोग बने आतंकी

'व्हाइट कॉलर आतंकवाद' कोई नया ट्रेंड नहीं है। यह परिपाटी वर्षों से देखी जा रही है, जिससे सुरक्षा और खुफिया बल लगातार लड़ भी रहे हैं। बीते दो-तीन दशकों में ही देश-दुनिया में न जाने कितने ऐसे युवा आतंकी पकड़े गए हैं, जो न सिर्फ उच्च शिक्षित थे, बल्कि वेश-भूषा या रहन-सहन से उनको आसानी से पहचान पाना कठिन था। माना जाता है कि इस्लामिक स्टेट ने ऐसे आतंकियों को सबसे ज्यादा आकर्षित किया। उसने विकसित देशों तक में अपने नेटवर्क इस तरह बढ़ाए कि 'पढ़े-लिखे' (हालांकि मैं इसे पढ़ा-लिखा नहीं मानता, क्योंकि शिक्षित व्यक्ति विनयशील होता है) भ्रमित नौजवान उसकी ओर खींचे चले गए। भारत में ऐसी कई कहानियां सामने आ चुकी हैं, जिनमें शिक्षित नौजवान भ्रमित होकर आतंकी संगठनों में शामिल हो गए।

हालांकि, मामला सिर्फ केरल तक सीमित नहीं है। भारतीय संसद पर हुए हमले में जिस अफजल गुरु को फांसी हुई, वह मेडिकल की पढ़ाई छोड़कर आतंकी बना था। उस पर तो कई अन्य नौजवानों को बरगलाने का भी आरोप था। इसी तरह, कंधार विमान अपहरण कांड में, जिस उमर सईद शेख को विमान अपहरणकर्ताओं ने छुड़वाया, वह लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में पढ़ाई कर चुका है। खूंखार आतंकी ओसामा बिन लादेन को कौन नहीं जानता? वह भी सिविल इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर चुका था। ये तो कुछ ऐसे उदाहरण हैं, जो देश-दुनिया में चर्चित हैं। कई नाम तो गुपचुप तरीके से अपनी नापाक मंशा में जुटे होंगे। ऐसे लोग या तो किसी धर्मगुरु के संपर्क में आने के बाद आतंकी बनते हैं या फिर इंटरनेट पर जेहादी सामग्रियों को देखकर या फिर उनमें मजहबी उन्माद इस कदर भर दी जाती है कि अच्छे और बुरे की परख उनमें खत्म हो जाती है। मेडिकल या इंजीनियरिंग या उच्च शिक्षा पाने वाले आतंकियों के बारे में यह नहीं कहा जा सकता कि वे प्रताड़ित थे और आर्थिक तंगी से जूझ रहे थे। वे चाहते, तो खुशहाल जिंदगी जी सकते थे। फिर भी, उन्होंने आतंकवादी बनना कुबूल किया, और अपना जीवन नरक बना लिया।

हमें समझना होगा कि जेहाद एक वैचारिक आंदोलन है और किसी भी विचारधारा को आगे बढ़ाने में पढ़ा-लिखा तबका ज्यादा कारगर होता है। संभवतः इसीलिए आतंकी संगठनों की नजरें काफी पहले से उच्च शिक्षित नौजवानों पर रही हैं। वे जीवन मूल्यों की मनमाफिक व्याख्या करके इनको भ्रमित कर देते हैं। ऐसे में, हमारी सरकारों के सामने दोहरी चुनौती है। उनको दहशतगर्दी भी रोकनी है और नौजवानों को भ्रमित होने से बचाना भी है।

कुणाल श्रीवास्तव, टिप्पणीकार

सिविल सेवा परीक्षा में ऐसे पाएं सफलता

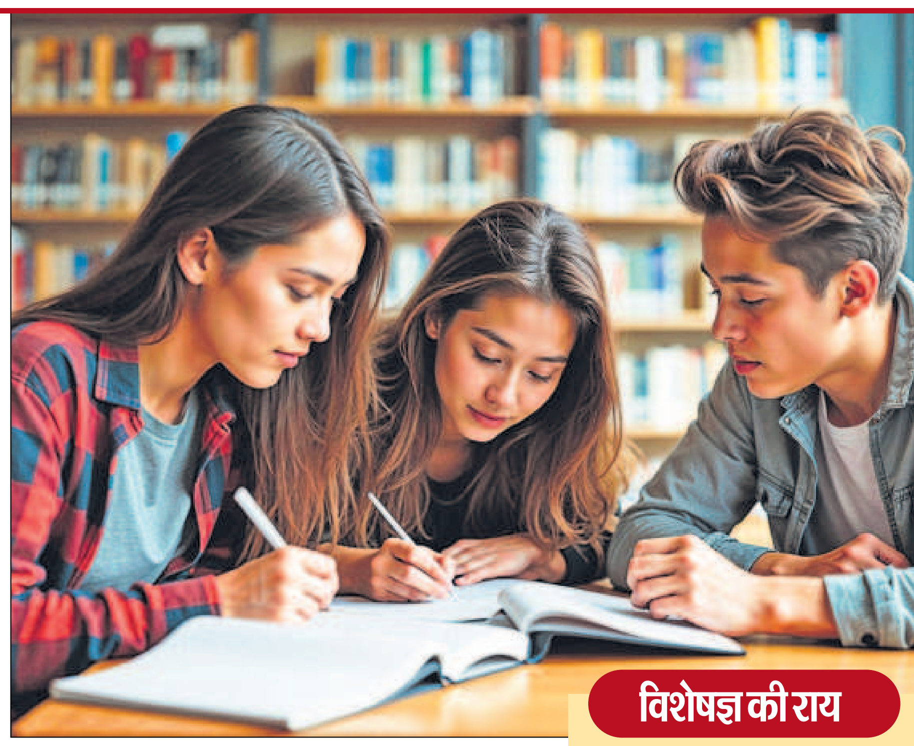

बीते वर्ष करीब 10 लाख उम्मीदवारों ने यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए आवेदन किया था। यह आंकड़ा इस परीक्षा की लोकप्रियता को दर्शाता है। आंकड़े यह भी कहते हैं कि इस परीक्षा में सफलता दर एक-दो प्रतिशत की होती है। सिर्फ ज्ञान ही नहीं, यह रणनीति और धैर्य की भी परीक्षा है। अगर यह आपका भी लक्ष्य है, तो तैयारी के जरूरी पहलू समझना मददगार होगा। सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी को कैसे बनाया जाए प्रभावी, बता रही हैं अंशु सिंह

सिविल सेवा परीक्षा के लिए कहा जाता है कि दस में से केवल एक ऐसा परीक्षार्थी होता है, जो पहले ही प्रयास में इसे उत्तीर्ण कर पाता है। चीन की गाओकाओ परीक्षा विश्व की सबसे कठिन परीक्षा मानी जाती है। भारत में यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा को कठिनता के स्तर में गाओकाओ के समकक्ष माना जाता है। इसीलिए जिनका सपना सिविल सेवा अधिकारी बनने का है, उनके लिए इसकी तैयारी को लेकर एक पुख्ता योजना होना जरूरी है।

कब से करें तैयारी

पहले प्रयास में संघ लोक सेवा आयोग में 56वां रैंक हासिल करने वाले सुयश कहते हैं, 'जब मैंने तैयारी शुरू की, तो लोगों ने कहा यह लंबी दौड़ है, तीन-चार साल लग सकते हैं। लेकिन घबराना नहीं चाहिए।' उनके अनुसार, तैयारी की शुरुआत में ऊर्जा और उत्साह होता है, पर समय के साथ बाहरी प्रभाव और गलत दिशा का खतरा बढ़ जाता है। इसलिए जितनी जल्दी हम अपनी गलतियों को पहचानकर सही रणनीति अपनाते हैं, सफलता की संभावना उतनी बढ़ जाती है। विशेषज्ञों की राय में अगर यह परीक्षा आपका लक्ष्य है, तो अपनी तैयारी की शुरुआत बारहवीं के बाद से ही कर दें। अपना रोडमैप इस तरह रखें:

तैयारी शुरू करने से पहले

विषय का चयन: बारहवीं के बाद ऐसा विषय चुनें, जो सिलेबस से जुड़ा हो, ताकि समय का बेहतर उपयोग और प्रतियोगिता में बढ़त मिले।

- सिलेबस और परीक्षा पैटर्न अच्छी तरह समझें।
- प्रारंभिक परीक्षा में दो पेपर होते हैं - जीएस1: सामान्य ज्ञान और विषय समझ पर आधारित। सीसैट (जीएस 2): तार्किक और विश्लेषणात्मक क्षमता को परखता है।
- प्रारंभिक परीक्षा में निगेटिव मार्किंग होती है। हर गलत उत्तर पर कुल अंक का 1/3 काटा जाता है। मुख्य परीक्षा में निगेटिव मार्किंग नहीं होती।

मिलेंगी ये चुनौतियां

2020 बैच की आईएएस परी बिश्नोई की एक इंस्टाग्राम पोस्ट खूब लोकप्रिय हुई थी। इसमें उनकी इस परीक्षा के प्रति जिजीविषा की कहानी थी। उनके अनुसार इस परीक्षा में असली जीत तब होती है, जब आप हार नहीं मानते और दोबारा प्रयास करते हैं। परी ने तीसरे प्रयास में शानदार रैंक हासिल की। हालांकि, इससे पहले उन्होंने खुद को एकाकी कर लिया था, वजन 45 किलो बढ़ गया था और मानसिक रूप से भी बोझिल महसूस करती थीं, पर उन्होंने हार नहीं मानी।

- इस परीक्षा की लंबी तैयारी सबसे बड़ी चुनौती है। घर से दूरी, महंगी कोचिंग का बोझ भी महसूस हो सकता है।
- करिअर काउंसलर आशीष आदर्श के अनुसार परीक्षा का स्तर हर साल कठिन होता जा रहा है। इसलिए तैयारी का एक फॉर्मूला नहीं चलता। एक चुनौती यह भी है कि परीक्षा के तीनों चरण कठिन व अहम होते हैं।

क्या कोचिंग जरूरी?

कोचिंग से आपको मदद मिलती है, लेकिन ये सफलता का एकमात्र रास्ता नहीं होती। आपको देखना होगा कि आपके लिए क्या ज्यादा सही होगा।

तैयारी की जरूरी बातें

सभी विषयों को समय दें : यूपीएससी का पाठ्यक्रम अत्यंत विस्तृत है। इसलिए, पूरी तैयारी का एक संतुलित दृष्टिकोण अपनाएं।

गणित, नीतिशास्त्र जैसे विषय बेहद स्कोरिंग : नीतिशास्त्र (जीएस-IV) भी स्कोरिंग है, क्योंकि यह आपके दृष्टिकोण और मूल्यों का आकलन करता है। निबंध लेखन में भी अच्छे अंक मिल सकते हैं, यदि प्रस्तुतिकरण स्पष्ट और तर्कसंगत हो।

करंट अफेयर्स की अहमियत : पिछले एक वर्ष के राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय घटनाक्रमों की जानकारी जरूरी है। साथ ही विज्ञान, पर्यावरण, अर्थव्यवस्था आदि से जुड़े करंट अफेयर्स पर भी नजर रखें। मासिक प्रतियोगी पुस्तकें और दैनिक अखबार तैयारी में मदद कर सकते हैं।

वैकल्पिक विषय कामयाबी के लिए अहम: हमेशा ऐसे वैकल्पिक विषय चुनें, जिसमें आप सहज हों, पर्याप्त अध्ययन सामग्री उपलब्ध हो और जो सामान्य अध्ययन (जीएस) के साथ ओवरलैप करता हो।

अपनी रुचि, शैक्षिक पृष्ठभूमि और अधिकतम अंक हासिल करने की संभावना को ध्यान में रखते हुए विषय का चयन करें।

परीक्षा का प्रारूप

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा तीन चरणों में होती है: प्रारंभिक, मुख्य और साक्षात्कार। स्नातक होना अनिवार्य है, अंतिम वर्ष के छात्र भी प्रीलिम्स दे सकते हैं। आयु सीमा 21 से 32 वर्ष है, आरक्षित वर्गों के लिए नियम अलग हैं-

- **प्रारंभिक परीक्षा (प्रीलिम्स):** यह पहला चरण है। दो पेपर होते हैं- सामान्य अध्ययन और सीसैट। क्वालिफाइंग पेपर है, अंक मेरिट में नहीं जोड़ते, लेकिन पास होना जरूरी है।
- **मुख्य परीक्षा (मेन्स):** मेन्स परीक्षा में कुल 7 पेपर होते हैं: 2 क्वालिफाइंग (भारतीय भाषा और अंग्रेजी) और 5 मेरिट-पेपर (निबंध और सामान्य अध्ययन), कुल 1750 अंक।
- **साक्षात्कार :** अंतिम चरण है, कुल 275 अंक। केवल ज्ञान की नहीं, व्यक्तित्व की भी परीक्षा।

स्टेट लेवल परीक्षा की तैयारी भी

यूपीएससी और राज्य सिविल सेवा परीक्षा की एक साथ तैयारी संभव है। बशर्ते रणनीति स्पष्ट हो:

समान विषय: इतिहास, भूगोल, अर्थव्यवस्था, राजनीति, करंट अफेयर्स। इन कॉमन विषयों को यूपीएससी स्तर की मानक पुस्तकों (एनसीईआरटी, लक्ष्मीकांत, स्पेक्ट्रम) से मजबूत करें।

राज्य-विशेष विषय: राज्य का इतिहास, भूगोल, संस्कृति, आर्थिक सर्वेक्षण आदि टॉपिक अलग से पढ़ें।

राज्य करंट अफेयर्स: स्थानीय समाचारपत्र और सरकारी वेबसाइट का उपयोग करें।

टाइम टेबल ऐसे बनाएं: 70 से 80 फीसदी समय यूपीएससी विषयों, 20 से 30 फीसदी राज्य विशेष विषयों को दें।

निरंतर अभ्यास: उत्तर लेखन और टेस्ट सीरीज दोनों स्तर पर भरपूर अभ्यास करें। सोशल मीडिया से दूर रहें।

विशेषज्ञ की राय

यूपीएससी में सिर्फ 800 -1000 पद होते हैं, जबकि औसतन 3-4 लाख प्रतिभागी परीक्षा में शामिल होते हैं। इसमें 50 हजार ही गंभीर तैयारी करते हैं। 10 से 15 हजार ही प्रारंभिक परीक्षा में चयनित होते हैं। दो साल की कड़ी तैयारी के बाद भी चयन न हो तो हिम्मत न हारें, अगले साल की तैयारी में जुट जाएं। पहला साल पाठ्यक्रम समझने, दोहराने और जानकारी इकट्ठा करने में बीतेगा। उत्तर लिखने की आवश्यकता नहीं है। पाठ्यक्रम पांच बार दोहराएं। रोजाना एक से डेढ़ घंटे अखबार पढ़ें। संपादकीय और राय वाले हिस्से पर ध्यान दें।

गौरव त्रिपाठी, आइपीएस (226वां रैंक, यूपीएससी 2022)

जॉब/करिअर

- बैंक ऑफ बड़ौदा दिल्ली, बिहार, असम, यूपी समेत विभिन्न राज्यों में अप्रेंटिस की भर्तियां करेगा। चयनित अभ्यर्थियों को एक वर्ष का प्रशिक्षण दिया जाएगा। ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया शुरू हो चुकी है।

कुल पद : 2700
अंतिम तिथि : 01 दिसंबर 2025
आवेदन प्रक्रिया: आधिकारिक वेबसाइट **bankofbaroda.bank.in** देखें।

- होम गार्ड डिपार्टमेंट, दुमका (झारखंड) में ग्रामीण एवं शहरी गृह रक्षकों की भर्तियां की जाएंगी। पदानुसार न्यूनतम सातवीं एवं दसवीं पास होना अनिवार्य होगा।

कुल पद : 737
अंतिम तिथि: 02 दिसंबर 2025
आवेदन प्रक्रिया : ऑनलाइन करना होगा। वेबसाइट है **dumka.nic.in**

- छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय में जूनियर ज्यूडिशियल असिस्टेंट के पद रिक्त हैं।

कुल पद : 133
अंतिम तिथि : 25 नवंबर 2025
आवेदन प्रक्रिया : ऑनलाइन। वेबसाइट है **vyapamcg.cgstate.gov.in**

- झारखंड कर्मचारी चयन आयोग ने वॉर्डर की भर्ती के लिए अधिसूचना जारी की है।

कुल पद : 1733
अंतिम तिथि: 08 दिसंबर 2025
आवेदन प्रक्रिया : ऑनलाइन। वेबसाइट है- **jssc.jharkhand.gov.in**

- न्यूक्लियर पावर कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड में उप-प्रबंधक एवं कनिष्ठ हिंदी अनुवादक की नियुक्तियां की जाएंगी।

कुल पद : 112
अंतिम तिथि: 27 नवंबर 2025
आवेदन प्रक्रिया : ऑनलाइन। वेबसाइट **npcil.nic.in** पर लॉगइन करें।

- इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक में जूनियर एसोसिएट एवं असिस्टेंट मैनेजर के पदों पर आवेदन करने का मौका है।

कुल पद : 309
अंतिम तिथि: 01 दिसंबर 2025
आवेदन प्रक्रिया : ऑनलाइन। इस वेबसाइट **ippbonline.bank.in** पर जाना होगा।

- पंजाब नेशनल बैंक में लोकल बैंक अधिकारी के पद रिक्त हैं। आवेदक जिस राज्य के लिए आवेदन कर रहे हों, उस राज्य की स्थानीय भाषा का ज्ञान हो।

कुल पद : 750
अंतिम तिथि: 23 नवंबर 2025
आवेदन प्रक्रिया : ऑनलाइन करें। वेबसाइट है **pnb.bank.in**

- बिहार कर्मचारी चयन आयोग में इंटर स्तरीय पदों पर ऑनलाइन आवेदन जारी है।

कुल पद : 23,175
अंतिम तिथि: 25 नवंबर 2025
आवेदन प्रक्रिया : आधिकारिक वेबसाइट **bssc.bihar.gov.in** पर जाएं।

(**नोट :** आवेदन करने से पहले आधिकारिक वेबसाइट से अपने स्तर पर जांच कर लें।)

भेजें अपना सवाल

करिअर या शैक्षिक कोर्स संबंधी आपके मन में कोई उलझन है या कोई जानकारी चाहते हैं, तो आप हमें अपने सवाल नीचे दी गई ईमेल पर भेज सकते हैं। हमारे विशेषज्ञ उसके जवाब देंगे। इस ईमेल आईडी का उपयोग करें
nayiraheincareer@gmail.com

आईआईएम के ऑनलाइन कोर्स जानें

एक्सपर्ट टिप्स

आशीष आदर्श
करिअर काउंसलर

■ मैं अभी ग्रेजुएशन फाइनल ईयर में हूं। कृपया आईआईएम के फ्री कोर्स की जानकारी दें।

प्रफुल्ल मजुमदार

युवाओं के एक बड़े वर्ग का सपना देश के सबसे उत्कृष्ट मैनेजमेंट संस्थान आईआईएम यानी इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट में दाखिला लेने का होता है, परंतु बहुत कम छात्रों को कैट प्रवेश जांच परीक्षा के आधार पर दाखिला मिल पाता है। आईआईएम अहमदाबाद द्वारा वैसे सभी छात्रों के लिए ऑनलाइन कोर्स की घोषणा की गई है, जहां आपको घर बैठे ऑनलाइन कोर्स तो मिलेगा ही, एक मामूली शुल्क पर आईआईएम का सर्टिफिकेट भी प्राप्त होगा।

इससे आप यह भी देख सकेंगे कि आईआईएम में किस तरह पढ़ाई होती है। इन कोर्स को बिगनर से लेकर प्रोफेशनल लोगों तक के लिए तैयार किया गया है। इनमें मैनेजमेंट, फाइनेंस, डिजिटल मार्केटिंग, लीडरशिप से लेकर इकोनॉमिक पॉलिसी जैसे अनेक विषय शामिल हैं। विशेष जानकारी के लिए आप वेबसाइट **online.iima.ac.in** पर लॉगइन करें और वहां '**Self Paced Courses**' विकल्प के अंतर्गत अपना मनपसंद कोर्स चुन लें।

■ मैं अभी कॉमर्स से 10+2 कर रही हूं और आगे बीएड इंटिग्रेटेड कोर्स में दाखिला लेना चाहती हूं। कृपया मार्गदर्शन करें।

रीना सिंह

भारत सरकार की संस्था नेशनल काउंसिल फॉर टेक्निकल एजुकेशन यानी एनसीटीई द्वारा 10+2 के छात्र-छात्राओं के लिए टीचिंग के इंटीग्रेटेड कोर्स की शुरुआत की गई है, जिसे आईटेप यानी इंटीग्रेटेड टीचर्स एजुकेशन प्रोग्राम कहा जाता है। जहां एक ओर बीएड में दाखिले के लिए ग्रेजुएशन का होना जरूरी है, वहीं आईटेप में आप 10+2 के बाद ही दाखिला ले सकते हैं।

चार वर्ष की अवधि वाले इस कोर्स को पायलट मोड पर चलाने के लिए अभी देश के कुछ संस्थानों को ही मान्यता दी गई है। इसमें दाखिले के लिए एक विशेष परीक्षा आयोजित की जाती है, जिसे एनसेट यानी नेशनल कॉमन एंट्रेंस टेस्ट के नाम से जाना जाता है।

इसके लिए फरवरी-मार्च में ऑनलाइन आवेदन स्वीकार किए जाते हैं, जिसके बाद अप्रैल माह में परीक्षा आयोजित की जाती है। जिन विषयों को इस परीक्षा में शामिल किया जाता है, उनमें सामान्य ज्ञान, रीजनिंग, मेंटल एबिलिटी और न्यूमेरिकल एबिलिटी शामिल हैं। बाजार में इससे संबंधित पिछले वर्ष के प्रश्न पत्र उपलब्ध हैं, जिनके आधार पर आप अपनी तैयारी का आकलन कर सकते हैं। विशेष जानकारी के लिए नेशनल टेस्टिंग एजेंसी की वेबसाइट **exams.nta.ac.in** पर नजर बनाए रखें।

टिप्स

गलतियों से बचकर बनाएं अपना रिज्यूमे

नौकरी की राह में पहला दरवाजा आपके रिज्यूमे के बल पर खुलता है। कई बार योग्य उम्मीदवार भी इसलिए पीछे रह जाते हैं, क्योंकि उनके रिज्यूमे में अनावश्यक या गलत जानकारी होती है। जानें, किन गलतियों से बचकर आप बना सकते हैं अपने रिज्यूमे को प्रभावी और पेशेवर।

कई बार उम्मीदवार नियोक्ताओं को प्रभावित करने की कोशिश में अपने रिज्यूमे में ऐसी जानकारियां जोड़ देते हैं, जो या तो अप्रासंगिक होती हैं या बढ़ा-चढ़ाकर लिखी जाती हैं। नतीजा यह होता है कि रिज्यूमे प्रभावी बनने के बजाय नकारात्मक असर छोड़ देता है। इन गलतियों से बचने के लिए कुछ बुनियादी बातों का ध्यान रखें-

जानकारी सीमित रखें : रिज्यूमे में उम्र, वैवाहिक स्थिति या धर्म जैसी निजी बातें लिखने की जरूरत नहीं होती। सिर्फ प्रोफेशनल जानकारी ही पर्याप्त है।

निजी अकाउंट साझा न करें : कई लोग अपने रिज्यूमे में फेसबुक या इंस्टाग्राम प्रोफाइल जोड़ देते हैं, जो नौकरी से संबंधित नहीं होते। यह आपकी छवि को कमजोर कर सकता है। इसके बजाय सिर्फ लिंक्डइन, पोर्टफोलियो वेबसाइट या प्रोफेशनल ब्लॉग जैसे वर्किंग लिंक ही साझा करें।

बढ़ा-चढ़ाकर न बताएं : याद रखें, नियोक्ता आपके रेफरेंस या पूर्व नियोक्ता से संपर्क कर तथ्यों की पुष्टि कर सकता है। अगर जानकारी गलत निकली तो आपकी विश्वसनीयता पर असर पड़ता है। इसलिए वही लिखें, जो सही और प्रमाणित हो।

गैर-पेशेवर ईमेल : बचकाने या अटपटे ईमेल एड्रेस आपकी पेशेवर छवि को नुकसान पहुंचा सकते हैं। नौकरी के लिए आवेदन करते समय नाम आधारित सरल और औपचारिक ईमेल आईडी ही इस्तेमाल करें।

फोटो और सजावट से बचें : अधिकांश पेशेवर रिज्यूमे में अब फोटो या डिजाइनिंग की जरूरत नहीं होती। सादगी और स्पष्टता ही सबसे प्रभावी होते हैं।

फॉन्ट और फॉर्मेट : बहुत छोटा फॉन्ट रखकर अनावश्यक जानकारी न भरें। अंग्रेजी में एरियल, कैलिब्री और टाइम्स न्यू रोमन और हिंदी में नोटो सैंस देवनागरी या हिंद जैसे फॉन्ट पढ़ने में आसान हैं। नाम 16 से 18 पॉइंट, हेडिंग 12 से 14 पॉइंट और मुख्य जानकारी 10 से 11 पॉइंट में रखें। रिज्यूमे हमेशा पीडीएफ में भेजें ताकि लेआउट और फॉन्ट बिगड़े नहीं।

नजरअंदाज न करें ये सुझाव

- एक ही रिज्यूमे हर जगह न भेजें। जॉब प्रोफाइल के अनुसार कौशल और अनुभव हाइलाइट करें।
- रिज्यूमे में रेफरेंस तभी शामिल करें, जब नियोक्ता इसकी मांग करें।
- करिअर ब्रेक में क्या नया सीखा इसकी जानकारी जरूर दें। नए कौशल या इस दौरान किए कोर्स का जिक्र करें।

श्वेता राकेश

रोजनामचा

पं. राघवेन्द्र शर्मा
ज्योतिषाचार्य

स्कैन करें
भविष्यफल और व्रत-त्योहार जानने के लिए

मेष : मन में उतार-चढ़ाव रहेंगे। कारोबार में बदलाव के योग बन रहे हैं। भागदौड़ अधिक रहेगी। कारोबार के लिए विदेश जाने के योग भी बन रहे हैं। लाभ के अवसर मिलेंगे।

वृष : मन परेशान रहेगा। कारोबार के लिए दूसरे स्थान पर जा सकते हैं। परिवार का साथ रहेगा। कारोबार में लाभ के अवसर मिलेंगे। रहन-सहन कष्टमय रहेगा।

मिथुन : आत्मसंयत रहें। धैर्य बनाए रखने का प्रयास करें। वाद-विवाद से बचें। नौकरी में कार्यक्षेत्र में बदलाव के साथ स्थान परिवर्तन हो सकता है। आय में वृद्धि होगी।

कर्क : वाणी में मधुरता रहेगी। पाठन-पाठन में रुचि बढ़ेगी। नौकरी में तरक्की के मार्ग प्रशस्त होंगे। शासन-सत्ता का सहयोग मिलेगा। आय में बढ़ोतरी होगी।

सिंह : मन प्रसन्न रहेगा, परंतु आत्मविश्वास में कमी रहेगी। परिवार में धर्मिक या मांगलिक कार्य हो सकते हैं। भवन के रख-रखाव या साज-सज्जा के कार्यों पर खर्च बढ़ेंगे।

कन्या : मन में नकारात्मक विचारों से बचें। धैर्य बनाए रखें। कारोबार में भागदौड़ तो अधिक रहेगी, परंतु कुछ सुस्ती देखने को मिलेगी। लाभ में भी कमी हो सकती है।

तुला : आत्मविश्वास तो भरपूर रहेगा, परंतु मन में उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। कारोबार में भागदौड़ बढ़ सकती है। किसी दूसरे स्थान पर भी जाना हो सकता है।

वृश्चिक : मन परेशान हो सकता है। परिवार की सेहत का ध्यान रखें। माता का साथ मिलेगा। खर्चों की अधिकता होगी। कारोबार में भागदौड़ अधिक रहेगी। लाभ में वृद्धि होगी।

धनु : मन परेशान रहेगा। मन में नकारात्मक विचारों से बचें। नौकरी में बदलाव की संभावना बन रही है, परंतु परिवार से दूर किसी दूसरे स्थान पर भी जाना हो सकता है।

मकर : किसी मित्र के सहयोग से कारोबार में सुधार होगा। लाभ में वृद्धि होगी। जीवनसाथी की सेहत का ध्यान रखें। माता-पिता का साथ मिलेगा। खर्चों मे वृद्धि होगी।

कुंभ : मन में उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। परिवार में धार्मिक कार्य हो सकते हैं। भवन की साज-सज्जा पर खर्च बढ़ सकते हैं। कारोबार में भागदौड़ बढ़ेगी।

मीन : आत्मविश्वास से लबरेज रहेंगे, परंतु मन में नकारात्मक विचारों से भी बचें। संतान की सेहत का ध्यान रखें। परिवार का साथ मिलेगा। कारोबार में वृद्धि होगी।

व्रत और त्योहार | पंचांग | पं. ऋभुकांत गोस्वामी

13 नवंबर गुरुवार, **शक संवत्:** 22 कार्तिक (सौर) 1947, **पंजाब पंचांग:** 28 कार्तिक मास प्रविष्टे 2082 **इस्लाम:** 21 जमादिउल्लावल, 1447, **विक्रमी संवत्:** मार्गशीर्ष कृष्ण नवमी तिथि रात्रि 11.35 मिनट तक, मघा नक्षत्र सायं 07.38 मिनट तक, ब्रह्म योग प्रात: 06.58 मिनट तक पश्चात ऐन्द्र रात्रि 06 बजकर (सूर्य उदय से पहले) 27 मिनट तक, चंद्रमा सिंह राशि में (दिन-रात)। **सूर्य दक्षिणायन।** दोपहर 01.30 मिनट से अपराह्न 03 बजे तक राहुकालम्। गण्डमूल सायं 07.38 मिनट तक।

वास्तु सलाह | आचार्य मुकुल रस्तोगी

मैं एक सरकारी अधिकारी हूं। मुझे जो घर मिला है, उसमें आने के बाद से मेरा स्वास्थ्य खराब रहता है तथा बच्चों का मन पढ़ाई में नहीं लगता। –यशस्वी वर्मा, भोपाल

- आपके घर में दो द्वार हैं, एक पूर्व दिशा का तथा एक साउथ वेस्ट का। आप साउथ वेस्ट वाला द्वार बंद कर दें और उसके आगे कोई अलमारी खड़ी कर दें।
- आपका पूजा घर भी दक्षिण दिशा में है। उसे पूर्व या उत्तर दिशा में करवा दें।
- आपकी रसोई ईशान कोण में है। उसमें लाल रंग किया हुआ है। लाल रंग को हटा दीजिए और उसकी जगह क्रीम कलर करवा लीजिए।
- तीन चूल्हों की जगह चार चूल्हों वाली गैस रखें, तो बेहतर रहेगा।

वर्ग पहेली : 8147

1	2		■	3	■	4	■	5
■		■	6					
7			■		■		■	
■			8				■	■
9		10	■		■	11	12	
■	■	13				■		■
14	■		■		■	15		
16						■		■
	■		■		■	17		

बाएं से दाएं

1. कपि; बंदर; मर्कट; वृक्षचर (3)
6. अधिक अच्छा हो जाना (2,1,3)
7. समूह; राशि; ढेर; खट्टे-मीठे फल वाला सदाबहार वृक्ष (3)
8. आज्ञा देने वाला; आदेश देने वाला (4)
9. रूप; आकृति; चिह्न; निशान; पता (3)
11. धन; राशि; संपत्ति (3)
13. सीपी से निकलने वाला एक बहुमूल्य रत्न; मुक्ता; मोती (4)
15. ढोल पीट कर की गई घोषणा; ढिंढोरा (3)
16. अपने आप को बलि कर देना; इष्टदेव के समक्ष समर्पित हो जाना; भारी हानि सहना (2,2,2)
17. अज; छाग (3)

ऊपर से नीचे

2. नवविवाहित पति-पत्नी (5)
3. भले के लिए कुछ करते हुए बुरा हो जाना; लेने के स्थान पर उलटे देना पड़ जाना; संकट में पड़ जाना (2,1,2,2,2)
4. वसंत; फुलवारी; बगीचा; वाटिका; छप्पय का एक भेद (5)
5. बिना मजदूरी दिए जबरदस्ती करवाया गया काम; विवशतापूर्वक किया गया काम; व्यर्थ कार्य (3)
10. कर चोर; कर न देने वाला (5)
12. कल्पना का संसार; काल्पनिक लोक; खयाली दुनिया; मनगढ़ंत दुनिया (5)
14. गड़ना; झुकना; तल नीचा होना; विवश होना (3)

हरीश चन्द्र सन्सी, विविधा विधा, दिल्ली
(उत्तर अगले अंक में)

वर्ग पहेली : 8146

■	1 आ	■	2 फ	■	3 प	4 त	वा	5 र
6 शं	का	क	र	7 ना	■	ड़	■	वा
■	र	■	8 सा	का	र	क	र	ना
9 त	■	10 स	■	म	■	भ	■	क
11 ना	रा	ज	गी	■	12 झा	ड़	दा	र
व	■	ग	■	13 बा	■	क	■	ना
14 का	फू	र	हो	जा	15 ना	■	16 अ	■
र	■	ह	■	17 र	ह	स्य	म	य
18 क	ला	ना	थ	■	क	■	न	■

सुडोकू : 8129

*मध्यम

			3	9		5		
	8						4	
9		4		8	2	1		
		9						2
6		1				8		9
7						3		
		6	2	5		7		3
	9						6	
		5		6	8			

खेलने का तरीका : दिमागी खेल और नंबरों की पहेली है यह। ऊपर नौ-नौ खानों के नौ खाने दिए गए हैं। आपको 1 से 9 की संख्याएं इस तरह लिखनी हैं कि खड़ी और पड़ी लाइनों के हरेक खाने में 1 से 9 की सभी संख्याएं आएं। साथ ही 3x3 के हरेक बक्से में भी 1 से 9 तक की संख्याएं हों। पहेली का हल हम कल देंगे।

सुडोकू : 8128

8	2	9	1	7	6	4	5	3
1	7	6	5	3	4	9	2	8
3	5	4	9	8	2	7	1	6
5	1	3	6	9	7	2	8	4
7	6	2	3	4	8	5	9	1
4	9	8	2	5	1	3	6	7
9	3	1	7	6	5	8	4	2
2	8	5	4	1	3	6	7	9
6	4	7	8	2	9	1	3	5

प्रवाह

77 साल बेमिसाल

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक

स्थापना : 18 अप्रैल 1948 • आगरा

कर्ज उस अधीरता की कीमत है, जो जरूरत के रूप में दिखाई देती है। - वेन चिरिसा

देश को झकझोर कर रख देने वाले 2006 के नृशंस निठारी कांड के मुख्य आरोपी सुरेंद्र कोली को बरी करने के शीर्ष अदालत के फैसले के बाद देश के सबसे भयावह मामलों में से एक का बेशक अंत हो गया हो, लेकिन यह सवाल अब भी जिंदा है कि क्या उन मासूमों का कोई कातिल नहीं!

कोई कातिल नहीं

है

हैवानियत की सारी हदें पार करने वाले 2006 के नृशंस निठारी कांड के, जिसमें 18 मासूमों और एक महिला से दुष्कर्म के बाद उनके शवों के टुकड़े नाले में बहा दिए गए थे, मुख्य आरोपी सुरेंद्र कोली को बरी करने के शीर्ष अदालत के फैसले के बाद देश के सबसे भयावह और विवादास्पद आपराधिक मामलों में से एक का बेशक अंत हो गया हो, लेकिन यह सवाल अब भी जिंदा है कि क्या उन मासूमों का कातिल कोई नहीं है। करीब 19 वर्ष पहले हुआ यह कोई सामान्य मामला नहीं था। निठारी में एक-एक करके बच्चे गायब हो रहे थे और पुलिस कुछ नहीं कर पा रही थी। जब झाड़ियों में कंकाल मिले, तब लोगों का गुस्सा फूटा। इस संदर्भ में जब पहला मुकदमा दर्ज किया गया था, तब लोगों को उम्मीद थी कि हैवानों को जल्द अपने किए की सजा मिलेगी। निठारी की एक कोठी के मालिक मोनिंदर सिंह पंढेर और उसके नौकर सुरेंद्र कोली पर मासूमों की हत्याओं, दुष्कर्म और अंगों के व्यापार जैसे आरोप लगे। निठारी कांड के नाम से बहुचर्चित इस मामले की जांच सीबीआई ने की थी और उसकी विशेष अदालत ने 13 फरवरी, 2009 को पंढेर और कोली को दोषी मानते हुए मौत की सजा सुनाई थी। 12 सितंबर, 2014 को कोली को फांसी भी होनी थी, लेकिन पहले अदालत में छुट्टी और फिर विशेष अदालत द्वारा मामले की दोबारा सुनवाई के वक्त फांसी पर रोक लगा दी गई। इसके बाद 2023 में उच्च न्यायालय ने अभियोजन की नाकामी पर गंभीर टिप्पणी करते हुए कोली और पंढेर, दोनों को बरी कर दिया था। और अब, जबकि शीर्ष अदालत ने भी उच्च न्यायालय के फैसले को बरकरार रखते हुए मान लिया है कि अभियोजन पक्ष मामले को संदेह से परे रखने में विफल रहा है, तो यह पूरा मामला हमारी आपराधिक न्याय प्रणाली की कमजोरियों को ही इंगित करता है। यह स्थिति मुकदमों के दशकों तक चलने पर भी गंभीर सवाल उठाती है। अगर कोली निर्दोष है, तो क्या जांच एजेंसियां, पुलिस और अदालतें इतने वर्षों तक अंधेरे में हाथ-पांव मार रही थीं? अगर ऐसा है, तो एक निर्दोष व्यक्ति को इतने वर्षों तक मौत की सजा के भय से घेरे रखना राज्य की सबसे बड़ी विफलता नहीं है? कोली के आजाद होने के बाद, यह सवाल भूत की तरह मंडराता रहेगा कि आखिर उन मासूमों को किसने मारा। पुलिस और अभियोजन विभाग की कमियों का विश्लेषण तो लंबे समय तक होता रहेगा, लेकिन इस मामले ने आमजन के भरोसे को जो चोट पहुंचाई है, उसकी भरपाई शायद ही हो सके।

भारतीय शहरों का असली संकट

भारतीय शहरों में वास्तविक संकट जीवनयापन का है। भारतीय रिजर्व बैंक की रिपोर्ट का यह कहना उतना चिंताजनक नहीं है कि देश में घरेलू ऋण 2015 की तुलना में अब काफी बढ़ गया है, बल्कि बड़ी चिंता तो यह है कि इसका ज्यादातर हिस्सा अनुत्पादक उद्देश्यों पर खर्च हो रहा है।

भारत के शहर लाखों लोगों के लिए महंगे साबित हो रहे हैं। आर्थिक तंगी के चलते गुजर-बसर करने के लिए परिवारों को धीरे-धीरे कर्ज लेने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। शहरी गरीबों का जीवन हमेशा से ही अनिश्चित रहा है, लेकिन अब निम्न मध्यवर्ग और मध्यवर्ग भी इस परेशानी को महसूस कर रहे हैं और वे तेजी से मुखर हो रहे हैं। घर का किराया, किराने का सामान, स्कूल फीस, परिवहन और इलाज में आमदनी का इतना बड़ा हिस्सा खर्च हो जाता है कि वेतनभोगी लोगों को भी गुजारा करने के लिए उधार लेना पड़ रहा है। जीवनयापन के खर्च का संकट अब भविष्य का खतरा नहीं रहा, बल्कि मौजूदा संकट बन गया है।

पत्रलेखा चटर्जी

वरिष्ठ पत्रकार

पिछले दिनों दिल्ली में एक घातक विस्फोट हुआ, जिसमें 13 लोगों की मौत हो गई है और कई अन्य घायल हो गए हैं। आतंकवाद के भय के बीच लाखों लोगों का दैनिक जीवन उसी निरंतर वित्तीय तनाव से जूझ रहा है। प्रख्यात अर्थशास्त्री अजित रानाडे ने हाल ही में एक अखबार में प्रकाशित टिप्पणी में इन आंकड़ों को बेहद स्पष्टता से प्रस्तुत किया। लंबे समय से सतर्क बचतकर्ता माने जाने वाले भारतीय परिवार चुपचाप रिकॉर्ड स्तर पर कर्ज ले रहे हैं।

भारतीय रिजर्व बैंक की *वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट* के अनुसार, भारत में घरेलू ऋण 2024 के अंत में सकल घरेलू उत्पाद का 42 प्रतिशत हो गया, जो 2015 में केवल 26 प्रतिशत था। प्रति व्यक्ति औसत ऋण केवल दो वर्षों में 23 प्रतिशत बढ़ गया है, जो राष्ट्रीय आय से दोगुनी गति से बढ़ रहा है, और 2023 में 3.9 लाख रुपये से मार्च 2025 में 4.8 लाख रुपये हो गया है। इस उधारी का आधे से अधिक, यानी लगभग 55 प्रतिशत हिस्सा गैर-आवासीय खुदरा ऋणों जैसे क्रेडिट कार्ड बकाया, व्यक्तिगत ऋण, वाहन ऋण और स्वर्ण ऋण है, जबकि पारंपरिक आवास ऋण कुल घरेलू ऋण का केवल करीब 29 प्रतिशत ही है। रानाडे बताते हैं, समस्या घरेलू कर्ज नहीं, बल्कि इन कर्जों का उद्देश्य है। शिक्षा, आवास या छोटे व्यवसायों के लिए लिए गए ऋण भावी संपत्ति का निर्माण करते हैं। लेकिन उपभोग की खातिर लिए गए ऋण उत्पादक नहीं होते। जैसे-जैसे परिवार अपनी आय का ज्यादा हिस्सा व्यक्तिगत ऋणों और क्रेडिट कार्ड बिलों के भुगतान में खर्च करते हैं, उनके पास बचत या निवेश योग्य पैसा कम बचता है। बड़ी संख्या में परिवार रोजमर्रा के खर्चों-जैसे किराना, बिजली बिल, स्कूल फीस या स्वास्थ्य देखभाल के भुगतान के लिए ऋण ले रहे हैं। जैसा कि रानाडे कहते हैं, 'शहरी जीवन की लागत बढ़ रही है, और कर्ज इससे निपटने का एक जरिया बन गया है। दूसरी चिंताजनक बात परिवारों की वित्तीय बचत में गिरावट है।' युवा, वेतनभोगी उपभोक्ता अपनी वर्तमान जीवनशैली को बनाए रखने के लिए भारी मात्रा में कर्ज ले रहे हैं।

एक आईआईटीयन ने हाल ही में एक्स पर पोस्ट किया, 'मैं धीरे-धीरे इस बात को स्वीकार कर रहा हूं कि भारत में जीवनयापन का खर्च बढ़ता जा रहा है-छोटे, टियर-3 शहरों में भी। और सच कहूं तो, मुझे इस बात की चिंता होने लगी है कि निम्न और मध्यवर्ग कैसे गुजारा कर रहा है... या अगले कुछ वर्षों में वे कैसे गुजारा करेंगे। हो सकता है कि मैं बस भ्रम में हूं, और यह इतना बुरा भी न हो। मुझे नहीं पता, लेकिन कुछ तो गड़बड़ लग रही है। बंगलूरू में भी, मेरे किराने के बिल (जिसमें सिर्फ जरूरी चीजें शामिल हैं-कुछ भी लग्जरी नहीं) असामान्य रूप से ज्यादा लगने लगे हैं। बस, सामान्य फल, सब्जियां और रोजमर्रा की जरूरत की चीजें-फिर भी लगता है कि चीजें जितनी महंगी होनी चाहिए थीं, उससे कहीं ज्यादा महंगी हो गई हैं।' तो फिर, यह संकट भारत में सबसे बड़ा राजनीतिक मुद्दा क्यों नहीं है? आम मेहनतकश भारतीयों की रोजमर्रा की चिंताओं की आवाज कौन उठा रहा है? न्यूयॉर्क शहर में, जोहरान ममदानी ने मेयर का चुनाव जीत लिया है, और उन्होंने वह काम किया है, जो सत्ता में बैठे ज्यादातर भारतीय राजनेता करने से कतराते हैं-उन्होंने इस संकट को रेखांकित किया। उनका प्रचार अभियान न्यूयॉर्क के मजदूर वर्ग की भौतिक सच्चाइयों के इर्द-गिर्द बुना गया था-स्थिर किराया, बच्चों की देखभाल की सार्वभौमिक व्यवस्था, मुफ्त सार्वजनिक बसें, शहर द्वारा संचालित किराना स्टोर, और अमीरों पर ज्यादा कर।

ममदानी की अल्पसंख्यक पहचान (युगांडा में जन्मे और भारतीय मूल के मुसलमान) उनके अभियान की सफलता का एक प्रमुख कारक थी। इसने मुसलमानों, दक्षिण एशियाई और अप्रवासियों जैसे कम प्रतिनिधित्व वाले समूहों के मतदाताओं को उनके पक्ष में मोड़ दिया, लेकिन 2025 के न्यूयॉर्क शहर के मेयर चुनाव में उनकी जीत का यही एकमात्र कारण नहीं बना। वह इसलिए जीते, क्योंकि उन्होंने अपने मतदाताओं की आर्थिक पीड़ा के बारे में बात की तथा एक स्पष्ट एजेंडा पेश करके उन्होंने बताया कि वे क्या करने की योजना बना रहे हैं। भारत में ममदानी की जीत पर जो बहस चल रही है, उसमें उनके संबंधों और पहचान पर जोर है, जबकि उनके अभियान का मूल तत्व था-जीवनयापन की लागत पर साहसिक और बेबाक चर्चा। भारत को ममदानी के फॉर्मूले की नकल करने की जरूरत नहीं है। हमारे शहरों की अपनी वास्तविकताएं, अपनी सीमाएं और अपनी राजनीतिक संस्कृतियां हैं। हमें ममदानी व उन्हें चुनने वाले मतदाताओं से जो सीखने की जरूरत है, वह है उनके अभियान की ईमानदारी। उन्होंने बचने का कोई रास्ता नहीं अपनाया। उन्होंने कोई अस्पष्ट वादे नहीं किए। उन्होंने संकट का जिक्र किया, उस पर बातचीत शुरू की और गुजारे के संकट को राजनीतिक एजेंडे का केंद्र बनाया। भारत में यही कमी है। कोई खाका नहीं, बल्कि एक हिसाब-किताब।

ममदानी को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। शासन करना चुनाव प्रचार से ज्यादा कठिन है। उन्होंने वह काम पहले ही कर दिया है, जो भारतीय शहरी राजनीति करने में नाकाम रही है: उन्होंने जीवनयापन की लागत को एक जायज, जरूरी और केंद्रीय मुद्दा बना दिया है। उन्होंने आर्थिक पीड़ा को निजी बोझ नहीं, बल्कि सार्वजनिक चिंता माना है। किराये, भोजन, ईंधन और मजदूरी के बारे में स्पष्ट बोलने वाले उम्मीदवार दुनिया भर के मतदाताओं के बीच अपनी जगह बना रहे हैं। ममदानी का अभियान इसलिए कामयाब रहा, क्योंकि उन्होंने गरिमा, निष्पक्षता और संभावना की कहानी कही। इसने जीवनयापन को एक ऐसी लड़ाई जैसा बना दिया, जिसमें शामिल होना जरूरी है। भारतीय शहरों में वास्तविक संकट पहचान का नहीं, बल्कि जीवनयापन का है।

जीवन धारा

सिसरो

मृत्यु अंत नहीं, बल्कि आत्मा की आजादी का ऐसा पल है, जब चेतना शरीर की सीमाओं से निकलकर उस सच्चाई की ओर बढ़ती है, जहां वह अनंत में मुक्त हो जाती है।

सच्चाई की लौ कभी नहीं बुझती

__सुकरात__ वह व्यक्ति थे, जिन्होंने दर्शन को स्वर्गीय कल्पनाओं से मुक्त कर धरती पर उतारा और उसे मनुष्य के जीवन, उसके नैतिक संघर्षों और आत्मा की सच्चाई के बीच स्थापित किया। उनसे पहले यूनानी विचार जगत ब्रह्मांडीय उलझनों में भटका करता था-जैसे संसार किससे बना है, वह ऊपर क्यों टिका है, देवताओं की संरचना कैसी है। लेकिन युद्ध और अराजकता के बीच भी सुकरात ने मानव जीवन के सार पर प्रश्न उठाए कि वह श्रेष्ठ जीवन क्या है, जिसे जीने योग्य कहा जा सके? जब अन्यायी व्यक्ति अधिक लाभ पाता है, तब भी मनुष्य को नैतिक क्यों बने रहना चाहिए? सुख क्या केवल इच्छाओं की तृप्ति है, या फिर वह पुण्य है, जो आत्मा को निर्मल करता है? हालांकि, सुकरात उत्तर नहीं देते, बल्कि वह प्रश्नों के माध्यम से आत्मा को उत्तर की ओर ले जाते हैं। यही है उनकी 'सुकरात पद्धति', यानी संवाद की वह ज्योति, जो अज्ञानता के अंधकार को उजागर करती है। वह स्वयं स्वीकारते हैं कि मैं यह जानता हूं कि मैं कुछ नहीं जानता। और इसी स्वीकार में उनके भीतर वह बुद्धिमत्ता जन्म लेती है, जो मनुष्यों में विरल है। वह एक ऐसे इन्सान थे, जो अहंकार से रहित, पूर्वाग्रहों से मुक्त, जो प्रत्येक सत्य के स्रोत से ज्ञान का रस ग्रहण करने को तत्पर रहते थे। पर जब उन्होंने समाज को समीप से देखा, तो पाया कि अधिकतर मनुष्य अपने ही दंभ और मिथ्या ज्ञान से इतने भरे हैं कि सत्य के लिए स्थान ही नहीं बचा। सुकरात उन सभी भ्रमों को तोड़ते हैं, जिन पर मनुष्य अपना अस्तित्व टिका मानता है-प्रतिष्ठा, मान्यताओं और असत्य विचारों का महल। और जब उन्होंने जनता के सामने यही सत्य रखा, तो वही समाज, जो अंधकार में रहने का अभ्यस्त था, उसकी रोशनी से झुंझला उठा। परिणामस्वरूप, सत्य की अपनी निष्ठा की कीमत सुकरात ने मृत्यु के रूप में चुकाई। उन्हें युवाओं को भ्रमित करने का अपराधी कहा गया, और विषपान का आदेश दिया गया। किंतु जिस शांति और गरिमा से उन्होंने अपने अंत को स्वीकार किया, वही उनकी शिक्षाओं का अंतिम प्रमाण थी। जहां सामान्य मनुष्य मृत्यु से भयभीत होता है, वह मुस्कराते हुए अपने मित्रों के बीच दर्शन पर चर्चा कर रहे थे। सुकरात के लिए मृत्यु अंत नहीं थी, बल्कि आत्मा की आजादी का वह पल था, जब चेतना शरीर की सीमाओं से निकलकर उस सच्चाई की ओर बढ़ती है, जहां वह अनंत में मुक्त हो जाती है। सुकरात सिखाते हैं कि जब तक मनुष्य में प्रश्न पूछने का साहस, सत्य को खोजने की ईमानदारी, और अपनी अज्ञानता को स्वीकार करने की विनम्रता बनी रहती है, तब तक उसका मन भटकेगा नहीं और आत्मा के भीतर एक ऐसी प्रसन्नता उत्पन्न होगी, जो समय, मृत्यु और भ्रम से परे है।

अंत:करण की आवाज पहचानें

सूत्र

सच्चा ज्ञान अज्ञानता को स्वीकार करने से शुरू होता है। जीवन का उद्देश्य सुख नहीं, बल्कि आत्मा की शुद्धि और सत्य की खोज है। प्रश्न पूछना ही चेतना को जाग्रत रखता है, और नैतिकता ही मनुष्य को ऊंचा बनाती है। इन्सान को प्रतिष्ठा या मिथ्या ज्ञान के पीछे नहीं, बल्कि अपने अंत:करण की आवाज के पीछे चलना चाहिए।

दूसरा पहलू

कहा जाता है कि कुरुक्षेत्र के पास मिर्जापुर गांव के एक कुएं में छिपे कर्ण के खजाने की पहरेदारी इच्छाधारी सर्प करते हैं।

दानवीर कर्ण का टीला और खजाने की तलाश

विश्व को गीता का ज्ञान देने वाली कुरुक्षेत्र की पावन धरा न केवल पौराणिक तीर्थस्थलों की धनी है, बल्कि मानव सभ्यता के इतिहास के अनमोल खजाने से भी समृद्ध है। 48 कोस में फैली धर्मनगरी में पुरातत्वविद धरती के सीने में जहां भी हाथ डालते हैं, वहीं प्राचीन भारत का नया अध्याय खुलकर सामने आ जाता है।

इतिहासकारों की गहरी दिलचस्पी की ऐसी ही एक खास जगह कर्ण का टीला भी है। मान्यता है कि यहीं पर महाभारत काल में दानवीर राजा कर्ण का किला हुआ करता था। कुरुक्षेत्र के पास मिर्जापुर गांव में स्थित इस टीले के घने दरख्तों और कंटीली झाड़ियों के बीच एक प्राचीन कुआं है। किंवदंती है कि कुएं में कर्ण का खजाना छिपा है, जिसकी पहरेदारी इच्छाधारी सर्प करते हैं।

चंद्रमोहन शर्मा

खजाना खोजते समय कई लोगों की सर्पदंश से आंखों की रोशनी चले जाने के किस्से भी यहां सुनने को मिल जाते हैं।

यहां 400 ईसा पूर्व से 100 ईसा पूर्व काल के मिट्टी के चित्रित धूसर मृदभांड, मनके, मिट्टी व हड्डियों से बनी कलाकृतियां, स्वास्तिक और अर्धचंद्र के विशिष्ट चिह्नों वाली मिट्टी की मुहरें आदि मिली हैं।

खजाने का मोह ऐसा है कि जहरीले सर्पों के भय के बावजूद रोज सैकड़ों लोग यहां आते हैं। खजाना खोजते समय कई लोगों की सर्पदंश से आंखों की रोशनी चले जाने के किस्से भी यहां सुनने को मिल जाते हैं। भारतीय पुरातत्व विभाग (एएसआई) के पहले महानिदेशक अलेक्जेंडर कनिंघम ने इस टीले का सर्वेक्षण करवाया था। पुरातत्वविद डी बी स्पूनर ने 1921-1923 के बीच उत्खनन करवाया। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के पुरातत्व विभाग के प्रोफेसर व शोधार्थी भी समय-समय पर खोदाई करते रहते हैं। सर्वे से लेकर उत्खनन तक सोने-चांदी और हीरे-मोती की तलाश में तो निराशा ही मिली, लेकिन हर बार इतिहास का अनमोल खजाना अवश्य मिला।

टीले से चौथी शताब्दी ईसा पूर्व से तीसरी शताब्दी ईसा तक के तीन सांस्कृतिक काल के अवशेष मिले। इनमें 400 ईसा पूर्व से 100 ईसा पूर्व काल के मिट्टी के चित्रित धूसर मृदभांड, कीमती पत्थरों के मनके, मिट्टी और हड्डियों से बनी कलाकृतियां, स्वास्तिक, नाग, नंदी और अर्धचंद्र के विशिष्ट चिह्नों वाली मिट्टी की मुहरें शामिल हैं। उत्तर मध्यकाल (विशेषकर 16वीं से 17वीं शताब्दी) के मकान, प्राचीर और चूने के प्लास्टर वाली ईंटें भी निकलीं। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के अध्यक्ष डॉ. धर्मबीर कहते हैं कि कुरुक्षेत्र में और भी टीले हैं-जैसे हर्ष का टीला और विश्वामित्र का टीला। हर्ष के टीले पर अब तक छह सांस्कृतिक और ऐतिहासिक कालखंड से संबंधित पुरावशेषों का पता चला है। उत्खनन के दौरान राजपूत, गुप्त, कुषाण, गुप्त काल, बर्धमान, और मुगल काल के अवशेष मिले हैं। कुरुक्षेत्र से अलग राखीगढ़ी, बनावली और कुणाल में तो हड़प्पा और पूर्व हड़प्पा सभ्यता के साक्ष्य भी मिले हैं। अगर और उत्खनन करवाया जाए, तो कर्ण के टीले से भी हर्ष के टीले की तरह कई और कालखंड के पुरावशेष मिल सकते हैं।

आंकड़े

स्वच्छ ऊर्जा में निवेश

2025 में चीन स्वच्छ ऊर्जा में सर्वाधिक खर्च करेगा, जो कुल वैश्विक निवेश का 29 फीसदी होगा। भारत का योगदान पांच प्रतिशत रहेगा।

अमेरिका	19
यूरोपीय संघ	18
जापान	05
कोरिया	05
अफ्रीका-प. एशिया	04

स्वच्छ ऊर्जा में निवेश का अनुमानित वितरण, प्रतिशत में। | स्रोत : विश्व ऊर्जा निवेश रिपोर्ट (आईईए)

'कुल्हाड़ी से मारने' की धमकी से देव की चंचलता खत्म हो गई व मन स्थिर हो गया। बाबा ने उनके मन को भटकाव से निकालकर एकाग्रता का पाठ पढ़ाया।

मन को न भटकाओ

बीवी देव नामक एक वृद्ध भक्त के मन में मराठी में लिखी गई 'ज्ञानेश्वरी', यानी *भगवद्गीता* के दिव्य अनुवाद को पढ़ने की तीव्र इच्छा थी। वह उसका पारायण (पढ़ना) करना चाहते थे, पर हर बार कोई न कोई बाधा आ जाती थी। वह उसके गूढ़ अर्थों को समझ नहीं पाते थे। अंततः उन्होंने शिरडी जाकर साईं बाबा की कृपा से ग्रंथ पूरा करने का निश्चय किया।

जब वह बाबा के दर्शन को पहुंचे, तो बाबा ने बिना किसी प्रश्न के कहा, 'देव, पच्चीस रुपये दक्षिणा दो।' देव ने श्रद्धा से धन अर्पित किया, किंतु अपना उद्देश्य नहीं बताया। अगले दिन वह साठेवाड़ा गए, जहां उनको बाबा के भक्त बालकराम मानकर मिले। देव उनसे बाबा की लीलाएं सुन रहे थे, तभी संदेश आया कि बाबा बुला रहे हैं।

द्वारकामाई में प्रवेश करते ही बाबा ने क्रोधित होकर देव से कहा, 'बूढ़े हो गए, फिर भी चोरी करते हो! मैं तुम्हें कुल्हाड़ी से मार डालूंगा!' देव सहम गए। लेकिन, कुछ क्षण बाद बाबा मुस्कराए और बोले, 'जब मैं तुम्हें जरी की शॉल ओढ़ाने को तैयार हूं, तो फिर तुम चिथड़े क्यों चुरा रहे हो? यहीं बैठकर ज्ञानेश्वरी का पाठ करो।'

अंतर्यात्रा

संकलित

देव ने आज्ञा मानकर पाठ शुरू किया। उनका मन पूर्ण एकाग्र हो गया और उन्होंने ग्रंथ पूरा किया। उन्हें बाद में समझ में आया कि बाबा की 'कुल्हाड़ी से मारने' की धमकी से उनके भीतर की चंचलता खत्म हो गई और मन स्थिर हो गया। बाबा ने उनके मन को भटकाव से निकालकर, एकाग्रता का जरी का शॉल ओढ़ा दिया।

अमर उजाला

पुराने पन्नों से — 13 नवंबर, 1949

पाकिस्तान में दो बड़े नेताओं की टैक्स चोरी

इस्लामी देश में इस्लाम के ठेकेदारों की टैक्स चोरी

पाकिस्तान के पंजाब प्रांत की सरकार ने कृषि आयकर लगाया है। वहां के दो बड़े मुस्लिम लीग के जमींदारों ने पटवारियों पर दबाव डालकर अपनी आमदनी कम दिखाई, इससे सरकार को 60 लाख रुपये की चपत लग गई।

यह सिर्फ पहाड़ी राज्यों की जिम्मेदारी नहीं

पर्वतों और हिमनदों का संरक्षण केवल हिमालयी राज्यों की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि पूरे राष्ट्र की प्राथमिकता होना चाहिए।

कुमार सिद्धार्थ

मुद्दा

जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और अस्थिर मानव हस्तक्षेप ने पर्वतीय जलस्रोतों के अस्तित्व को डगमगा दिया है। संयुक्त राष्ट्र की *विश्व जल विकास रिपोर्ट 2025* गहरी चिंता जताती है कि पर्वतीय जलस्रोत, जो दुनिया के ताजे पानी का 60 फीसदी तक उपलब्ध कराते हैं, हमारी आंखों के सामने पिघल रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र (यूएन) की यह रिपोर्ट अक्सर नजरों से ओझल रहने वाले सच से रूबरू कराती है। विश्व की जल सुरक्षा, पारिस्थितिकी और खाद्य आपूर्ति का बड़ा हिस्सा उन ऊंचे इलाकों पर निर्भर है, जिन्हें हम आमतौर पर हिमालय या आल्प्स जैसे नामों से जानते हैं। इन्हीं को वैज्ञानिक अब 'वाटर टावर्स' कहते हैं। ऐसे जलस्तंभ, जो पृथ्वी को जीवन देते हैं।

रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2000 से 2021 के बीच विश्व में ताजे पानी की खपत में 14 फीसदी की वृद्धि हुई है। कृषि क्षेत्र सबसे बड़ा उपभोक्ता बना हुआ है, जो कुल खपत का लगभग 72 फीसदी पानी इस्तेमाल करता है। औद्योगिक खपत 15 फीसदी व घरेलू खपत 13 फीसदी है। विकसित देशों में औद्योगिक खपत अधिक है, जबकि गरीब देशों में 90 फीसदी तक पानी खेती के काम आता है। बढ़ती मांग के बीच चिंता यह है कि आल्प्स, एंडीज, किलिमंजारो से लेकर हिमालय तक, लगभग हर पर्वतीय क्षेत्र के ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं। 'थर्ड पोल' के नाम से मशहूर हिंदूकुश-काराकोरम-हिमालय में सदी के अंत तक बर्फ की मात्रा आधी रह जाने की आशंका है। यही क्षेत्र लगभग 1.65 अरब लोगों को पानी उपलब्ध कराता है।

भारतीय हिमालय में 9,500 से अधिक ग्लेशियर हैं। वाडिया इंस्टीट्यूट ऑफ हिमालयन जियोलॉजी और आईआईटी, कानपुर के अध्ययन बताते हैं कि पिछले तीन दशकों में ये ग्लेशियर औसतन 15 से 20 मीटर सालाना पीछे हटे हैं। गंगोत्री ग्लेशियर 1935 से अब तक लगभग तीन किलोमीटर पीछे हट चुका है। रिपोर्ट चेतावनी देती है कि निकट भविष्य में नदियों का प्रवाह कुछ वर्षों के लिए तो बढ़ सकता है, लेकिन दीर्घकाल में उसमें भारी कमी आएगी। ग्लेशियर झील फटने से आने वाली अचानक बाढ़ की समस्या भी बढ़ रही है। 2023 में सिक्किम की दक्षिण लोनक झील फटने से आई बाढ़ ने कई गांवों और हाइड्रो प्रोजेक्टों को तबाह कर दिया था। रिपोर्ट सुझाव देती है कि इन आपदाओं की निगरानी, प्रारंभिक चेतावनी व्यवस्था व आपदा पूर्व तैयारी को पर्वतीय नीति का जरूरी हिस्सा बनाया जाए।

भारत के गंगा-ब्रह्मपुत्र बेसिन में 40 प्रतिशत से अधिक कृषि क्षेत्र है, जहां धान, गेहूं और गन्ने जैसी जल-गहन फसलें उगाई जाती हैं। ग्लेशियर पिघलाव में बदलाव से इनकी उत्पादकता पर सीधा असर पड़ना तय है। यूएन की रिपोर्ट के अनुसार, जल संकट से निपटने के लिए केवल तकनीकी समाधानों पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं होगा। स्थानीय और पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों को भी समान महत्व देना होगा। भारत के उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश में 'खाल', 'गुल' और 'कुल्ह' जैसी पारंपरिक जलसिंचन व्यवस्थाएं सदियों से पानी के संरक्षण और संतुलन का उदाहरण रही हैं। इसी तरह उत्तर-पूर्व के अरुणाचल प्रदेश में अपतानी जनजाति की सीढ़ीदार खेती जल उपयोग की दक्षता का एक आदर्श मॉडल है। इन प्रणालियों को आधुनिक विज्ञान से जोड़कर जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों का सामना प्रभावी ढंग से किया जा सकता है।

भारत ने राष्ट्रीय जल नीति, हिमालयन ग्लेशियर मॉनिटरिंग प्रोग्राम और जलवायु अनुकूलन योजनाओं में पर्वतीय जलस्रोतों के संरक्षण पर बल दिया है, लेकिन रिपोर्ट कहती है कि ये प्रयास अभी सीमित हैं और इन्हें अधिक व्यापक, क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के स्तर पर विस्तारित करने की आवश्यकता है। ब्रह्मपुत्र और सिंधु बेसिन जैसे साझा जलस्रोतों के संदर्भ में भारत, नेपाल, भूटान, चीन और बांग्लादेश को डाटा साझा करने, संयुक्त निगरानी और साझा अनुकूलन रणनीतियों पर मिलकर काम करना होगा। रिपोर्ट इस पूरी चुनौती को सतत विकास लक्ष्य छह से भी जोड़ती है। रिपोर्ट का अंतिम वाक्य एक चेतावनी की तरह सुनाई देता है। भारत के लिए यह भविष्य की नीति और आज के निर्णय, दोनों को तय करने वाली होनी चाहिए।

हकीकत यह है कि पर्वतों और हिमनदों का संरक्षण केवल हिमालयी राज्यों की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि पूरे राष्ट्र की प्राथमिकता होना चाहिए। यदि हमने समय रहते इस चेतावनी पर ध्यान नहीं दिया, तो आने वाले दशकों में नदियों का प्रवाह और जीवन का संतुलन, दोनों अस्थिर हो जाएंगे। तब शायद हमारी आने वाली पीढ़ियां न तो बर्फ से ढकी चोटियों को वैसे देख पाएंगी, जैसे हम देखते हैं, और न ही उन नदियों का मीठा पानी पी पाएंगी, जिनसे हमारी सभ्यता ने जन्म लिया था। यह चेतावनी अब केवल वैज्ञानिक रिपोर्टों तक सीमित नहीं रहनी चाहिए, बल्कि नीति, समाज और जनचेतना का हिस्सा बननी चाहिए, क्योंकि पहाड़ों का भविष्य ही हमारे जीवन का भविष्य है।

edit@amarujala.com

न्यूज डायरी

उत्तर प्रदेश में बनेंगे चार निजी टेक्सटाइल पार्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में चार निजी टेक्सटाइल पार्कों की स्थापना की जाएगी। उन्नाव, कानपुर देहात, शामली व अमरोहा में 25-25 एकड़ जमीन पर स्थापित किए जाने वाले टेक्सटाइल पार्कों की स्थापना की तैयारी हथकरघा एवं वस्त्रोद्योग विभाग ने शुरू कर दी है। वस्त्र एवं परिधान उद्योग को बढ़ावा देने के लिए संत कबीर के नाम पर 10 टेक्सटाइल पार्कों की स्थापना की योजना पर काम हो रहा है। ब्यूरो

ग्रीन पार्क स्टेडियम में खेलते समय खिलाड़ी की मौत

कानपुर। ग्रीन पार्क स्टेडियम स्थित बैडमिंटन कोर्ट में प्रशांत गुप्ता (56) की तबीयत अचानक बिगड़ने से मौत हो गई। वह बुधवार सुबह आधे घंटे खेलने के बाद आराम करने बैठे और बेहोश होकर गिर पड़े। डॉ. प्रदीप टंडन ने उन्हें करीब 10 मिनट तक सीपीआर दिया। सोबिट्रिट की गोली भी दी गई। उन्हें एंबुलेंस से कार्डियोलॉजी संस्थान भेजा गया, लेकिन रास्ते में ही दम तोड़ दिया। प्रशांत कई वर्षों से कोर्ट पर अभ्यास करने आते थे। संवाद

पीलीभीत में बाघ ने किसान को मार डाला

पीलीभीत। बंदरों से खेत की रखवाली कर रहे किसान छोटेलाल (40) को बाघ ने मार डाला। उसका अधखाया शव दूसरे दिन खेत और जंगल किनारे की झाड़ियों में मिला। पीटीआर के एसडीओ रमेश चौहान का कहना है कि घटना के बाद स्वयं टीम के साथ मौके पर पहुंचकर जांच की। शव जंगल से करीब 50 से 100 मीटर अंदर बरामद हुआ। संवाद

पत्रकार ओमप्रकाश तिवारी को पितृ शोक

कानपुर। अमर उजाला में समाचार संपादक ओमप्रकाश तिवारी के पिता ठाकुर प्रसाद तिवारी का 12 नवंबर को तड़के तीन बजे निधन हो गया। वह 85 वर्ष के थे। कुछ दिन पहले उन्हें अटैक पड़ा था। सुल्तानपुर जिला अस्पताल में उनका इलाज चल रहा था। सुल्तानपुर जिले के लंभुआ बेदूपारा निवासी ठाकुर प्रसाद तिवारी अपने पीछे तीन पुत्र और छह पुत्रियों के साथ भरा पूरा परिवार छोड़कर गए हैं। तेरहवीं 24 नवंबर को होगी। संवाद

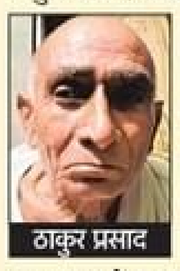
ठाकुर प्रसाद

बच्ची की पिटाई, शिकायत करने पर नाना की हत्या

एटा। गांव कलवरिया में ननिहाल आई बच्ची को गांव के ही युवक ने शराब के नशे में पीट दिया। नाना ने आरोपी के घर जाकर शिकायत की तो लाठी-डंडों से पीटकर उनकी हत्या कर दी। पुष्पेंद्र ने बताया कि मंगलवार को शाम के समय भांजी (5) गली में खेल रही थी। सौरभ शराब के नशे में धुत्त होकर निकला तो भांजी ने शराबी बोल दिया। सौरभ ने भांजी की पिटाई कर दी। ओमकार सिंह (50) सौरभ के घर पर शिकायत करने गए थे। संवाद

भविष्य के युद्ध में ड्रोन, एआई और साइबर टूल होंगे निर्णायक हथियार : सेना प्रमुख

कहा, यूक्रेन युद्ध जीवंत प्रयोगशाला की तरह, बहुत कुछ सीख रहा है भारत

नई दिल्ली। सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने कहा है कि भविष्य के युद्ध पारंपरिक नहीं रह गए हैं, बल्कि अब उनका स्वरूप तकनीक आधारित हो चुका है। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में ड्रोन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और साइबर टूल जैसे आधुनिक हथियार युद्ध के परिणाम तय करेंगे।

'दिल्ली डिफेंस डायलॉग 2025' को संबोधित करते हुए जनरल द्विवेदी ने कहा कि भारतीय सेना यूक्रेन युद्ध को बारीकी से देख रही है क्योंकि यह एक जीवंत प्रयोगशाला है, जो हमारे सीमाई हालात से काफी मिलती-जुलती है। उन्होंने कहा कि आज युद्ध का स्वरूप लोकतांत्रिक और जनसंख्या आधारित हो गया है, जिसमें नागरिक भी अप्रत्यक्ष रूप से भागीदार बन रहे हैं। सेना प्रमुख ने कहा, अब ड्रोन बख्तरबंद टुकड़ियों का पीछा कर रहे हैं, इलेक्ट्रॉनिक वॉरफेयर रेडियो को जाम कर रही है और प्रिसीजन फायर 100 किलोमीटर से अधिक दूरी तक सटीक निशाना साध रही है। एजेंसी

सेना एआई आधारित चैटबॉट जिज्ञासा लॉन्च करेगी : उन्होंने बताया कि भारतीय सेना भी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डिजिटल तकनीक को अपनाने की दिशा में तेजी से काम कर रही है। जल्द ही सेना 'जिज्ञासा' नामक एआई-आधारित चैटबॉट लॉन्च करेगी, जो सैन्य प्रक्रियाओं को और सशक्त बनाएगा। जनरल द्विवेदी ने कहा कि भारत के लिए भूमि अब भी विजय की करेंसी बनी हुई है, लेकिन भविष्य के युद्ध में तकनीक ही निर्णायक हथियार साबित होगी।

स्टार्टअप्स को आरएंडडी फंड देना होगा आसान, फंडिंग के लिए बनेंगे नए नियम

नई दिल्ली। रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) के प्रमुख समीर वी. कामत ने रक्षा क्षेत्र में इनोवेशन को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण बदलाव का संकेत दिया है। उन्होंने बुधवार को दिल्ली डिफेंस डायलॉग 2025 में कहा कि डीआरडीओ और स्टार्टअप्स, एमएसएमई और बड़ी इंडस्ट्रीज में रिसर्च और डेवलपमेंट (आरएंडडी) के लिए फंडिंग को आसान बनाने हेतु जनरल फाइनेंशियल रूल्स (जीएफआर) में एक नया अध्याय जोड़ने पर विचार कर रहा है।

कामत ने इस बात पर जोर दिया कि भारत को अमेरिका की डीएआरपीए जैसी स्वायत्तता की

आवश्यकता है, ताकि आरएंडडी प्रोजेक्ट्स की विफलता के लिए जवाबदेही का डर कम हो सके। उन्होंने कहा, आरएंडडी को खर्च के बजाय निवेश के तौर पर देखा जाना चाहिए। प्रोजेक्ट विफल होने पर भी मिलने वाले सबक दूसरे प्रोजेक्ट्स में काम आते हैं। इस नए चैप्टर से अत्याधुनिक अनुसंधान के लिए अनुदान तेज होगा। एजेंसी

शिवसेना के चुनाव चिह्न पर सुप्रीम कोर्ट में अंतिम सुनवाई 21 जनवरी से

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को शिवसेना के 'तीर-धनुष' चुनाव चिह्न विवाद से जुड़ी याचिकाओं पर सुनवाई के लिए 21 जनवरी की तारीख तय की। यह याचिकाएं उद्धव ठाकरे गुट ने चुनाव आयोग के उस आदेश के खिलाफ दायर की हैं, जिसमें 'शिवसेना' नाम और चिह्न महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे गुट को आवंटित किए गए थे।

जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस जॉयमाल्य बागची की पीठ ने कहा कि शिवसेना प्रतीक विवाद पर सुनवाई 21 जनवरी से शुरू होगी। अदालत ने यह भी बताया कि अगले दिन यानी 22 जनवरी को राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) के प्रतीक विवाद पर सुनवाई होगी, क्योंकि दोनों मामलों में कई समान कानूनी मुद्दे हैं। शीर्ष अदालत ने दोनों दलों के पक्षों को अपने तर्क रखने के लिए तीन-तीन घंटे का समय निर्धारित किया है। उद्धव ठाकरे गुट की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता देवदत्त कामत ने कहा कि राज्य में स्थानीय निकाय चुनाव निकट हैं, इसलिए मामले की जल्द सुनवाई जरूरी है। एजेंसी

एकजुट रहें, तो दुनिया फिर भारत को सभ्यता की रोशनी के रूप में देखेगी : डॉ. सुब्रोकमल

व्याख्यान में शामिल डॉ. सुब्रोकमल दत्ता व अन्य विशिष्ट अतिथि। - अमर उजाला

ऑरोविल (तमिलनाडु)। ऑरोविल फाउंडेशन ने श्री अरविंदो अंतरराष्ट्रीय शिक्षण संस्थान (एसएआईआईईआर) के साथ मिलकर यूनिटी पवेलियन में प्रेरक व्याख्यान आयोजित किया। इस मौके पर राजनीतिक चिंतक, अर्थशास्त्री और विदेश के नीति विशेषज्ञ डॉ. सुब्रोकमल दत्ता ने प्राचीन भारत से आधुनिक विकसित भारत-आगे का रोडमैप विषय पर संबोधित किया। कार्यक्रम में स्कूलों के 200 से अधिक छात्र, शिक्षक और समुदाय के सदस्य शामिल हुए।

डॉ. दत्ता ने कहा कि अगर हम एकजुट रहें, तो दुनिया फिर से भारत को सभ्यता की रोशनी के रूप में देखेगी। उन्होंने कहा कि रामायण दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में एक राष्ट्रीय महाकाव्य है, और संस्कृत का प्रभाव थाईलैंड से फिलीपींस तक की भाषाओं पर है। डॉ. दत्ता ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का विकसित भारत का विजन सनातन संस्कृति और साझा सभ्यता मूल्यों में निहित एकता के जरिये ही पूरा हो सकता है।

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथियों में एसएआईआईईआर के कार्यकारी और एसटीईएम लैंड के संस्थापक डॉ. संजीव रंगनाथन, ऑरोविल फाउंडेशन के विशेष कार्याधिकारी डॉ. सीतारामन, ऑरोविल फाउंडेशन के वरिष्ठ सलाहकार डॉ. वेणुगोपालन आदि शामिल थे।

हैदराबाद एयरपोर्ट पर 1.4 करोड़ रुपये के इलेक्ट्रॉनिक सामान जब्त

हैदराबाद। केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) ने हैदराबाद अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डे पर करीब 1.4 करोड़ रुपये मूल्य के इलेक्ट्रॉनिक सामान जब्त किए हैं।

बरामद सामान में कई प्रतिबंधित ड्रोन, महंगे स्मार्टफोन, लैपटॉप और अन्य उपकरण शामिल हैं। अधिकारियों के अनुसार, अबू धाबी से आए दो यात्रियों के संदिग्ध व्यवहार पर नजर रखी गई। जांच में उनके बैग से बिना घोषित किए गए कीमती इलेक्ट्रॉनिक सामान मिले। सामान को तस्करी के लिए ले जाया जा रहा था। एजेंसी

संसदीय समिति की बैठक में उठा मुद्दा, अध्यक्ष का चर्चा से इन्कार

बैठक के एजेंडे में नहीं था विस्फोट का मुद्दा

नई दिल्ली। संसद की गृह मामलों की स्थायी समिति की बुधवार को हुई बैठक में लाल किले के पास हुए धमाके का मुद्दा उठाया गया। हालांकि समिति के अध्यक्ष ने इस पर चर्चा से इन्कार कर दिया। सूत्रों ने यह जानकारी दी।

बैठक में मौजूद एक सदस्य के अनुसार, धमाके का मुद्दा तृणमूल कांग्रेस के एक सांसद ने उठाया। सांसद ने कथित खुफिया विफलता पर भी चिंता जताई। सूत्र ने बताया कि समिति के अध्यक्ष राधा मोहन दास अग्रवाल ने चर्चा करने से इन्कार कर दिया और इस मुद्दे पर किसी भी स्वप्रेरित बयान की इजाजत नहीं दी। गृह मामलों की संसदीय स्थायी समिति की बुधवार को बैठक हुई। इसके एजेंडे में आपदा प्रबंधन विषय शामिल हैं।

समिति इस मसले पर गृह मंत्रालय, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए), राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान (एनआईडीएम), राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ) और महानिदेशालय (अग्निशमन सेवा, नागरिक सुरक्षा एवं गृह रक्षक) के विचार सुनेगी। ब्यूरो

11 तस्करों से 15 करोड़ का सोना जब्त, गिरफ्तार

मुंबई। राजस्व खुफिया निदेशालय (डीआरआई) ने मुंबई में एक सोना तस्करी सिंडिकेट का भंडाफोड़ करते हुए 15 करोड़ रुपये मूल्य का सोना जब्त किया है। इस सिलसिले में मास्टरमाइंड समेत 11 लोगों को गिरफ्तार किया गया है। अधिकारियों ने बुधवार को यह जानकारी दी।

डीआरआई की मुंबई जोनल यूनिट को सोना तस्करी की गुप्त सूचना मिली थी। इस पर डीआरआई टीमों ने सोमवार को शहर में एक साथ चार ठिकानों पर छापे मारे, जिनमें दो अवैध मेल्टिंग यूनिट शामिल थीं। अधिकारियों ने बताया कि मेल्टिंग यूनिटों से 6.35 किग्रा सोना जब्त हुआ। मास्टरमाइंड से जुड़ी दो दुकानों से 5.53 किग्रा सोने के बार बरामद हुए। कुल मिलाकर 11.88 किग्रा f 24-कैरेट सोना जब्त किया गया। एजेंसी

भारत दे सकता है मॉरीशस के विकास में अहम योगदान

मॉरिशस के प्रतिनिधिमंडल से मिले जितेंद्र सिंह

नई दिल्ली। समुद्री संसाधन प्रबंधन और महासागरआधारित प्रौद्योगिकियों में भारत का व्यापक अनुभव मॉरीशस के विकास लक्ष्यों को हासिल करने में अहम भूमिका निभा सकता है। यह बात कार्मिक, अंतरिक्ष और अन्य मंत्रालयों के मंत्री जितेंद्र सिंह ने बुधवार को मॉरीशस के अधिकारियों के एक प्रतिनिधि मंडल से कहीं। मॉरीशस के 14 मंत्रालयों के 17 वरिष्ठ अधिकारियों का यह प्रतिनिधि मंडल वरिष्ठ सिविल सेवकों के लिए दूसरे क्षमता निर्माण कार्यक्रम में शिरकत करने भारत आया है।

इस दौरान केंद्रीय मंत्री ने ब्लू इकोनॉमी में दोनों देशों की साझा रुचि के बारे में भी जानकारी दी। उन्होंने मत्स्य पालन, समुद्री प्रौद्योगिकियों और विलवणीकरण जैसे उभरते क्षेत्रों में भारत और मॉरीशस के बीच गहन सहयोग का आह्वान किया। उन्होंने इन क्षेत्रों को दोनों समुद्री देशों के लिए सतत विकास और पारस्परिक समृद्धि के नए आयाम कहा। उन्होंने कहा कि भारत और मॉरीशस के बीच इतिहास, संस्कृति और लोगों के आपसी संबंधों में निहित एक अनूठा बंधन है और लगभग 70% मॉरीशसवासी भारत से अपने पूर्वजों के संबंध को जोड़ते हैं और यह दोनों देशों के बीच सहयोग बुनियादी ढांचे, शिक्षा, समुद्री सुरक्षा और कौशल विकास तक फैला है। सिंह ने कहा कि दोनों देशों के बीच सिविल सेवा क्षमता निर्माण में चल रहा सहयोग भविष्य के शासन में उपयोगी निवेश का प्रतिनिधित्व करता है। एजेंसी

सरकारी बैंक कृषि और छोटे-मझोले उद्योगों को कर्ज देने में लाएं तेजी

नई दिल्ली। वित्त मंत्रालय ने बुधवार को सरकारी बैंकों से कृषि और छोटे एवं मझोले उद्योगों (एमएसएमई) क्षेत्र को ऋण देने में तेजी लाने पर जोर देने का आदेश दिया है।

साथ ही कम लागत वाली जमाओं में वृद्धि को बनाए रखने और जोखिम प्रबंधन को मजबूत करने को भी कहा है। वित्तीय सेवा विभाग (डीएफएस) के सचिव एम नागराजू ने समीक्षा बैठक में बैंकों से जोखिम प्रबंधन और परिचालन को और मजबूत करने को कहा, ताकि बदलते वित्तीय माहौल में लाभप्रदता बनाए रखी जा सके।

मंत्रालय के एक बयान में कहा गया है कि सरकारी बैंकों के मुख्य कार्यकारी अधिकारियों (सीईओ) के साथ सचिव ने बैठक की। ब्यूरो

तीन साल तक मौसम की मार से सुरक्षित रहेगा रामध्वज

अयोध्या। श्रीराम जन्मभूमि परिसर में प्रस्तावित राम ध्वज के निर्माण में तकनीकी मंथन और वैज्ञानिक परीक्षणों के बाद अंतिम रूप तय कर लिया गया है। ध्वज का कपड़ा इस तरह तैयार किया गया है कि वह तीन वर्षों तक तेज धूप, वर्षा और धूल के असर से प्रभावित नहीं होगा। केवल सफाई और सामान्य रखरखाव से इसकी गुणवत्ता बरकरार रहेगी।

ट्रस्ट सूत्रों के अनुसार, ध्वज निर्माण के लिए देश के प्रमुख वस्त्र अनुसंधान केंद्रों से परामर्श लिया गया। विभिन्न जलवायु परिस्थितियों में टिकाऊपन, वजन, रंग स्थायित्व और हवा में फड़फड़ाने की क्षमता को ध्यान में रखते हुए कई नमूनों पर वायुगतिकीय और रासायनिक स्थायित्व के परीक्षण

किए गए। पहले प्रस्तावित ध्वज का कपड़ा लगभग 11 किलोग्राम वजन का था, जो हवा और नमी के असर से जल्दी भारी हो जाता। अब नॉयलान फैब्रिक से ध्वज का निर्माण होगा। इस कपड़े का वजन दो से ढाई किलोग्राम होगा। यह उच्च-गुणवत्ता वाले माइक्रो फाइबर और नायलॉन मिश्रित पॉलिमर से निर्मित होगा, जो सामान्य धातु-युक्त कपड़े की तुलना में कहीं अधिक टिकाऊ और लचीला होता है। संवाद

राम समेत चारों भाइयों के नाम पर बसेंगे नगर

श्रीरामजन्मभूमि परिसर में प्रस्तावित ध्वजारोहण समारोह में आने वाले खास मेहमानों और श्रद्धालुओं के ठहराव की व्यवस्था को लेकर तैयारियां अंतिम चरण में पहुंच चुकी हैं। अयोध्या धाम के तीर्थ क्षेत्र पुरम बाग बिजेशी और कारसेवकपुरम में दो विशाल टेंट सिटी बसाई जा रही हैं, जो आधुनिक सुविधाओं और पारंपरिक सौंदर्य का अनूठा संगम होंगी। टेंट सिटी में लगभग 5,500 मेहमानों के ठहरने की व्यवस्था की जा रही है। हर टेंट परिसर में बिजली, जलापूर्ति, सुरक्षा व भोजनालय की व्यवस्था होगी। पूरी टेंट सिटी को इस तरह डिजाइन किया गया है कि यह तीर्थ की पवित्रता और तकनीकी उत्कृष्टता दोनों का प्रतीक बने।

छात्र की मोबाइल गेमिंग की लत से परेशान मां ने फंदा लगाकर दी जान

झांसी। रक्सा के आरएस रेजीडेंसी कॉलोनी निवासी शीला देवी (38) ने आठवीं में पढ़ने वाले इकलौते बेटे की गेमिंग की लत से परेशान होकर खुदकुशी कर ली।

बुधवार आधी रात उसे फंदे से लटका देख पति ने फंदे से उतारकर मेडिकल अस्पताल पहुंचाया। यहां कुछ देर बाद डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। मूल रूप से चित्रकूट के हरदौली गांव की शीला देवी आरएस रेजीडेंसी में पति रविंद्र सिंह के साथ रहती थीं। एजेंसी

समाज की सतर्कता और महिला आंदोलन ने न्यायपालिका को जवाबदेह बनाए रखा : सीजेआई

नई दिल्ली। सीजेआई जस्टिस बीआर गवई ने कहा कि नागरिक समाज की सतर्कता, महिला आंदोलनों की दृढ़ता और आम नागरिकों के साहस ने मिलकर न्यायपालिका को समानता के सांविधानिक वादे के प्रति जवाबदेह बनाए रखा है। 30वें जस्टिस सुनंदा भंडारे स्मृति व्याख्यान में सीजेआई जस्टिस गवई ने कहा कि पिछले 75 वर्षों में, भारत ने महिलाओं के अधिकारों को आगे बढ़ाने और एक समावेशी समाज के दृष्टिकोण को आकार देने में एक असाधारण यात्रा तय की है। एजेंसी

पश्चिम मध्य रेल

खुली निविदा दिनांक 07.11.2025

निम्नलिखित कार्य के ई–निविदा भारत संघ के राष्ट्रपति के पक्ष में मुख्य परियोजना प्रबंधक, गति शक्ति यूनिट, पश्चिम मध्य रेल्वे जबलपुर के द्वारा आमंत्रित की जाती है। **निविदा सूचना कमांक :** सी.पी.एम.–जी.एस. यू. जबल–09–2025 दिनांक 07.11.2025, **कार्य का नाम लोकेशन सहित :** कैमा में दोहरी निकासी के साथ नई शंटिंग नैक एवं 2 अतिरिक्त लोडिंग लाइन का प्रावधान (रेल पथ क्रियान्वयन का कार्य), **कार्य का अनुमानित लागत मूल्य रुपये :** 7,93,47,864/-, **बयाना राशि रुपये :** 5,46,700/-, **समापन अवधि :** 18 माह, **निविदा प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि एवं समय 15.00 बजे तक :** 01.12.2025, **निविदा खुलने का समय 15.15 बजे तिथि:** 01.12.2025, उपरोक्त ई–निविदा के संपूर्ण जानकारी वेबसाइट "http://ireps.gov.in" उपलब्ध है एवं इसकी पूरी जानकारी मुख्य परियोजना प्रबंधक, गति शक्ति यूनिट, पश्चिम मध्य रेलवे, जबलपुर के नोटिस बोर्ड पर रखी गई है। ई–निविदा के अलावा उपरोक्त कार्य के लिए कोई भी निविदा स्वीकार नही की जायेगी।

हस्ता.
सहायक मंडल अभियंता, गति शक्ति यूनिट
पश्चिम मध्य रेलवे, जबलपुर

स्वच्छ भारत अभियान
एक कदम स्वच्छता की ओर

हरियाणा सरकार — निविदा सूचना

क्र. सं.	बोर्ड/निगम/प्राधि. का नाम	कार्य सूचना निविदा का नाम	आरंभिक तिथि अंतिम तिथि (समय)	राशि/ईएमडी (अनुमानित) रु. में	बोर्ड/निगम प्राधि. की वेबसाईट	नोडल अधिकारी/संपर्क जानकारी/ईमेल
1	एचवीपीएनएल	एसएलडीसी एससीएडीए पानीपत के साथ 220 केवी सब-स्टेशन हकमावली पर मौजूदा एसएएस I एवं II के साथ 220/33 केवी, 100 एमवीए टी/एफ टी-3 के सम्बद्ध बेय का एकीकरण।	10.11.2025 21.11.2025	RS. 8,45,000/- +18% GST EXTRA i.e. 1,52,100/- = RS. 9,97,100/-	www.hvpn.org.in	0172-2583789 pro@hvpn.org.in
2	एचवीपीएनएल	टीएस मंडल मानेसर के तहत 220 केवी सब स्टेशन पंचगांव में स्विचयार्ड एवं सब स्टेशन परिसर में हाई डेफीनीशन कैमरा का प्रावधान एवं संस्थापन हेतु कार्य।	11.11.2025 19.11.2025	RS. 4,56,250/-	www.hvpn.org.in	0172-2583789 pro@hvpn.org.in
3	एचवीपीएनएल	132 केवी सब स्टेशन बियाना से 132 केवी सब-स्टेशन नवल तक 132 केवीडी/सी लाईन के सृजन हेतु रूट सर्वे/एलाईनमेंट।	11.11.2025 18.11.2025	RS. 1,94,592/-	www.hvpn.org.in	0172-2583789 pro@hvpn.org.in

अग्रिम जानकारी हेतु कृपया वेबसाईट www.haryanaeprocurement.gov.in तथा www.etenders.hry.nic.in पर जाएं।
SAMVAD:- 13/2026/60/40257/I/1/7 Dt. 12/11/2025

कार्यालय कृषि उत्पादन मण्डी समिति, गाजियाबाद

पत्रांक: कृ०उ०म०स०/दु0आ0/2025-1334 दिनांक- 12/11/2025

आवश्यक सूचना

कृषि उत्पादन मण्डी समिति, गाजियाबाद के नवीन फल-सब्जी मण्डी स्थल, साहिबाबाद में अवशेष "ब" श्रेणी (डबल स्टोरी) 01 नग एवं "स" श्रेणी (डबल स्टोरी) 21 नग रिक्त दुकानों का आवंटन ऑन लाईन ई-नीलमी के द्वारा कराये जाने हेतु ई-नीलामी की तिथि 20.11.2025 नियत करते हुए दिनांक 31.10.2025 से दिनांक 12.11.2025 तक आवेदन पत्र समिति कार्यालय पत्रांक : 1306 दिनांक 29.10.2025 के द्वारा आमंत्रित किये गये है। उक्त दिनांक तक पर्याप्त आवेदन पत्र प्राप्त न होने के कारण आवेदन पत्र बेवसाईट पर अपलोड करने की अंतिम तिथि को दिनांक 14.11.2025 की सांय 5:00 बजे तक बढ़ाया जाता है। दुकान आवंटन से सम्बन्धित नियम व शर्ते पूर्ववत रहेगी।

सचिव
कृषि उत्पादन मण्डी समिति,
गाजियाबाद

पूर्व रेलवे

निविदा सं.: ईएल–एमएलडीटी–टीआरडी–ई–निविदा–092, दिनांक 10.11.2025, वरिष्ठ मंडल विद्युत अभियंता (टीआरडी)/पूर्व रेलवे, मालदा, मंडल रेल प्रबंधक/पूर्व रेलवे/मालदा टाउन ऑफिस बिल्डिंग, पी.ओ. झलझलिया, जिला–मालदा, पिन–732102 (पश्चिम बंगाल) द्वारा निम्नलिखित कार्यों के लिए अनुभवी एवं वित्तीय संपन्न ख्यातिप्राप्त फर्मों/एजेंसियों/ठेकेदारों से खुली ई-निविदा आमंत्रित की जाती है: **कार्य का नाम :** पूर्व रेलवे के मालदा मंडल में मौजूदा घाट लाइन के नवीनीकरण एवं साफ-सफाई के साथ सकरीगली घाट साइडिंग में एक अतिरिक्त पूर्ण लंबाई के गुड्स लोडिंग लाइन के प्रावधान के संबंध में ओएचई कार्य। **निविदा मूल्य:** रु.1,73,65,539.50, **बयाना राशि :** रु. 2,36,800/–, **निविदा कागजात का मूल्य :** शून्य। **समापन अवधि:** 12 माह। **प्रस्ताव की वैधता :** 60 दिन। **बोली प्रणाली :** एकल पैकेट। **निविदा अपलोड करने की तिथि और समय:** दिनांक 10.11.2025 को 17.09 बजे। **बोली प्रारंभ होने की तिथि:** दिनांक 18.11.2025, **निविदा की अंतिम तिथि और समय:** दिनांक 02.12.2025 को 15.00 बजे। **ई–निविदा जमा देने की तिथि एवं समय:** दिनांक 18.11.2025 से 02.12.2025 को 15.00 बजे तक। **वेबसाइट का विवरण एवं सूचना पट :** वेबसाइट: www. ireps.gov.in एवं सूचना पट: वरिष्ठ मंडल विद्युत अभियंता/टीआरडी/पूर्व रेलवे/ मालदा टाउन का कार्यालय। निविदाकारों से अनुरोध है कि वेबसाइट www.ireps.gov.in में विस्तृत निविदा सूचना एवं कागजात देखें। किसी भी परिस्थिति में किसी मैनुअल प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया जाएगा।

MLD-225/2025-26

निविदा सूचना वेबसाइट: www.er.indianrailways.gov.in/www.ireps.gov.in पर भी उपलब्ध है

हमें यहाँ देखें: @EasternRailway
@easternrailwayheadquarter

कार्यालय पुलिस अधीक्षक, जनपद हापुड़

पत्र संख्या:-भ-03/2025, दिनाँक:-12 नवम्बर, 2025

विज्ञप्ति

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है जनपद-हापुड़ में विशेष मरम्मत कार्यों से सम्बन्धित निविदा दिनाँकः- 15.11.2025 को समयः - 12:00 बजे कतिपय शर्तों के अधीन आमन्त्रित की जाती है। निविदा फार्म दिनाँकः-14.11.2025 तक पुलिस कार्यालय, जनपद-हापुड़ की प्रधान लिपिक शाखा में प्राप्त किया जा सकता है।

पुलिस अधीक्षक
जनपद-हापुड़।

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे

ई-निविदा सूचना

निविदा सूचना क्रमांक: M/PPBIA/Tender/25-26/Bahubali fencing/02
दिनांक: 07.11.2025
कार्य का नाम: एफएम यार्ड में बाहुबली फेंसिंग और पीपी यार्ड भिलाई में आरओएच शेड का प्रावधान।
निविदा मूल्य: ₹ 41,22,330/-, **ईएमडी:** ₹ 82,500/-, **निविदा प्रपत्र का मूल्य**: 0/-, **निविदा बंद होने की अंतिम तिथि**: दिनांक **05.12.2025** को **15:00** बजे।
मैनुअल ऑफर स्वीकार्य नहीं होगा तथा उसे यथावत निरस्त माना जावेगा। निविदा से संबंधित विस्तृत जानकारी, पात्रता मापदंड एवं सम्पूर्ण जानकारी वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर / फ्रेट / भिलाई के कार्यालय से प्राप्त किया जा सकता है एवं निविदा दस्तावेज़ वेबसाईट **www.ireps.gov.in** से डाउनलोड किया जा सकता है।

वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर-फ्रेट
दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे,
भिलाई

PR/R/SR.DME(Frt)/BIA/MS/212
South East Central Railway @secrail

कर्मचारी भविष्य निधि संगठन
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' Provident Fund Organisation
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)
क्षेत्रीय कार्यालय, नोएडा/Regional Office, Noida
भविष्य निधि भवन ए–2 सी सेक्टर–24 नोएडा उ.प्र.–201301
Bhavishya Nidhi Bhawan,A-2C, Sector-24, Noida, UP-201301
दूरभाष/Phone : 0120-2412058, ई–मेल/E-mail : ro.noida@epfindia.gov.in

सार्वजनिक सूचना

राष्ट्रव्यापी डिजिटल जीवन प्रमाणपत्र अभियान 4.0
"Promotion of Face Authentication Technology"

सभी ईपीएफओ–पेंशनभोगियों को यह सूचित किया जाता है कि अबाधित पेंशन के भुगतान की सुविधा को ध्यान में रखते हुए जीवन प्रमाण पत्र को अपडेट करने के लिए विशेष अभियान के तहत जीवन प्रमाण मेला का आयोजन क्षेत्रीय कार्यालय, नोएडा में दिनांक 15–11–2025 से 15–12–2025 (कार्यालय कार्य दिवस में) तक किया जाएगा।

ईपीएफओ के ऐसे पेंशनधारक जिनकी मृत्यु हो गयी है उनके सम्बन्धी एवं रिश्तेदारों से आग्रह किया जाता है की उनका मृत्यु प्रमाण पत्र ईपीएफओ कार्यालय में शीघ्र जमा कराये। एवम पेंशनर के परिवार से पेंशन दावेदार अपना बैंक खाता अपडेट/अघतन करायें।

पेंशनभोगियों के लिए सुविधापूर्ण जीवन सुनिश्चित करने के लिए, पेंशन एवं पेंशनभोगी कल्याण विभाग के तत्वावधान में राष्ट्रव्यापी डिजिटल जीवन प्रमाणपत्र अभियान 4.0 के अंतर्गत, चेहरा प्रमाणीकरण ऐप (Face Authentication App) अपने मोबाइल में डाउनलोड करके घर/ऑफिस इत्यादि से आसानी से जीवन प्रमाण पत्र को अपडेट/अघतन कर सकते है अधिक जानकारी के लिए आप ईपीएफओ की वेबसाइट के होमपेज पर जा सकते हैं। इसके अलावा पेंशनभोगी अपने जीवन प्रमाण पत्र को डिजिटल तरीके से पेंशन जारी करने वाले बैंक, कॉमन सर्विस सेंटर, पोस्ट ऑफिस, उमंग ऐप और नजदीकी ईपीएफओ ऑफिस में अपडेट/अघतन भी कराया जा सकता हैं।

डिजिटल जीवन प्रमाण पत्र (जीवन प्रमाण) पेंशनभोगियों के लिए एक बायोमेट्रिक सक्षम डिजिटल सेवा है। कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (EPFO) के वे संगठन जिनकी पेंशन वितरण एजेंसी डीएलसी के लिए सक्रिय है, इस सुविधा का लाभ उठा सकते हैं। पेंशनभोगी अपने नजदीकी डाकघर या आईपीपीबी टोल–फ्री नंबर 155299 या पोस्ट इन्फो मोबाइल ऐप के जरिए घर बैठे सेवा बुक कर सकते हैं। कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (EPFO) के पेंशनभोगियों को जीवन प्रमाण पत्र करने हेतु सेवा निःशुल्क है, उन्हें जीवन प्रमाण पत्र भौतिक रूप से जमा करने के लिए वितरण एजेंसी के कार्यालय जाने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि वे डीएलसी बनाने के लिए आधार सक्षम बायोमेट्रिक प्रमाणीकरण प्रणाली का उपयोग कर सकते हैं।

Digital Life certificate
WhatsApp group

कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (EPFO) के पेंशनर इस QR कोड को स्कैन कर सीधे ही अपनी जीवन प्रमाण पत्र से सम्बंधित Whatsapp 7599345188 ग्रुप के माध्यम से दर्ज करा सकते है तथा सम्बंधित जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

(मुकेश सारस्वत)
क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त ।। (पेंशन)

हरियाणा सरकार — निविदा सूचना

क्र. सं.	विभाग का नाम	कार्य सूचना निविदा का नाम	आरंभिक तिथि अंतिम तिथि	राशि/ईएमडी (अनुमानित) रु. में	विभाग की वेबसाईट	नोडल अधिकारी/संपर्क जानकारी/ईमेल
1	लोनिवि भवमा, हिसार	जिला फतेहाबाद में सैक्टर-9 में 200 बिस्तर वाले सिविल अस्पताल का निर्माण (केवल 11 केवी सब स्टेशन, डीजी सेट एवं स्ट्रीट/सिक्योटी लाइटों का प्रावधान) + 1 कार्य।	11.11.2025 17.11.2025	610.28 LACS	https://etenders.hry.nic.in	01662225651 pwd-eeed- hissar @hry.nic.in
2	सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग, हरियाणा रोहतक	अपस्ट्रीम एवं डाऊनस्ट्रीम में रोड क्रॉसिंग पर भलौट सब-शाखा के आरडी-140740 एवं 148961 पर तर से घेराबंदी का प्रावधान एवं फिक्सिंग+2 कार्य।	CLOSING DATE 18.11.2025	7.94 LACS	https://etenders.hry.nic.in	9812111077 xenwsdnrtk@gmail.com
3	पंचायती राज, फरीदाबाद	गांव अटाली ब्लॉक बल्लबगढ़ जिला फरीदाबाद में बेकार पानी (जीडब्ल्यूएम) ट्रीटमेंट प्रक्रिया तथा ड्रेन का निर्माण + 9 कार्य।	10.11.2025 17.11.2025	350.51 LACS	https://etenders.hry.nic.in	0-9467905067 prexeeng.fbd@hry.nic.in
4	पंचायती राज, अम्बाला	पंचायती राज सर्कल, रोहतक एवं फरीदाबाद हेतु विभिन्न विकास कार्यों हेतु थर्ड पार्टी निरीक्षण एजेंसी का सूचीकरण।	11.11.2025 20.11.2025	EMD 4 LACS	https://etenders.hry.nic.in	0171-2551368 prexeeng.amb@hry.nic.in

अग्रिम जानकारी हेतु कृपया वेबसाईट www.etenders.hry.nic.in पर जाएं।
SAMVAD:-11/2026/80/40265/I/1/7 Dt.12/11/2025

हरियाणा सरकार — शुद्धिपत्र

क्रम सं.	विभाग का नाम	पुराना संदर्भ/ निआसू सं.	शुद्धिपत्र का स्वरूप	विभाग की वेबसाईट	नोडल अधिकारी/सम्पर्क विवरण/ई-मेल
1	बागवानी विभाग सीओई, पियांगवा, नूंह	TENDER NO 2025_HRY_470332_1	सीओई, पियांगवा (नूंह) में जॉब रोल आधार पर प्याज की पौध उत्पादन हेतु मेनियल कार्यों हेतु दर अनुबंध तथा अन्य सेंटर कार्य हेतु (गुड्स एंड सर्विसिज) ई-निविदा की अंतिम तिथि को विस्तारित किया गया है अर्थात 27.11.2025 को पूर्वा. 11.00 बजे तक	http://etenders.hry.nic.in	9354801351 coepinangawa0@gmail.com

अग्रिम जानकारी हेतु कृपया www.etenders.hry.nic.in पर जाएं।
PRDH:- 11/2026/40/40260/I/1/7 Dt. 12/11/2025

हरियाणा सरकार — निविदा सूचना

क्र. सं.	बोर्ड/निगम/प्राधि. का नाम	कार्य सूचना निविदा का नाम	आरंभिक तिथि अंतिम तिथि (समय)	राशि/ईएमडी (अनुमानित) रु. में	बोर्ड/निगम प्राधि. की वेबसाईट	नोडल अधिकारी/संपर्क जानकारी/ईमेल
1	नगर निगम रोहतक	एमसी रोहतक में सेक्टर-4, वार्ड नं. 09 में तिकोना पार्क के गिर्द रोड पर बिटूमिन रोड का निर्माण (पुनः आमंत्रण) + 1 कार्य।	11.11.2025 18.11.2025	Rs. 232.77 LACS	https://etenders.hry.nic.in	9467283967 xenmcrohtak@gmail.com

अग्रिम जानकारी हेतु कृपया वेबसाईट www.haryanaeprocurement.gov.in तथा www.etenders.hry.nic.in पर जाएं।
SAMVAD:- 13/2026/40/40239/I/1/7 Dt. 12/11/2025

एजुकेशन & कॅरिअर

कामयाब लोग अपने फैसले से दुनिया बदलने की हिम्मत रखते हैं।

अमर उजाला Job Alert

Real-time job alerts
amarujala.com/jobs

बिहार कर्मचारी चयन आयोग

योजना सहायक, अंकेक्षक व अन्य पदों पर निकली भर्ती

1541 पद

आवेदन की अंतिम तिथि : 21 नवंबर, 2025
पात्रताएं : स्नातक व अन्य निर्धारित योग्यताएं
यहां आवेदन करें : bssc.bihar.gov.in

एनपीसीआईएल में संभावनाएं ■ 122 पद

उप-प्रबंधक व कनिष्ठ हिंदी अनुवादक के पदों पर रिक्तियां

आवेदन की अंतिम तिथि
27 नवंबर, 2025
पात्रताएं
स्नातक व अन्य निर्धारित योग्यताएं
यहां आवेदन करें
npcil.nic.in

सेबी में आवेदन आमंत्रित ■ 110 पद

असिस्टेंट मैनेजर के पदों पर रोजगार की संभावनाएं

आवेदन की अंतिम तिथि
28 नवंबर, 2025
वेतनमान
रुपये 62,500 से लेकर रुपये 1,26,100 प्रतिमाह
यहां आवेदन करें
sebi.gov.in

DRRMLIMS, लखनऊ में मौके ■ 422 पद

नर्सिंग ऑफिसर के पदों पर आवेदन आमंत्रित

आवेदन की अंतिम तिथि : 15 दिसंबर, 2025
योग्यताएं : बीएससी नर्सिंग, डिप्लोमा व अन्य निर्धारित पात्रताएं
यहां आवेदन करें : drrmlims.ac.in

ईएसआईसी में रोजगार की संभावनाएं ■ 45 पद

प्रोफेसर, असिस्टेंट प्रोफेसर आदि शैक्षणिक पद रिक्त

वॉक-इन-इंटरव्यू की तिथि
24 नवंबर, 2025
वेतनमान
रुपये 67,700 से लेकर रुपये 1,23,100 प्रतिमाह
यहां आवेदन करें
esic.gov.in

ईसीजीसी लिमिटेड में मौके ■ 30 पद

प्रोबेशनरी ऑफिसर के पदों पर नौकरी के अवसर

आवेदन की अंतिम तिथि
02 दिसंबर, 2025
आयु-सीमा
न्यूनतम उम्र 21 वर्ष व अधिकतम 30 वर्ष निर्धारित
यहां आवेदन करें
www.ecgc.in

योग्य उम्मीदवार करें आवेदन ...

- आचार्य नरेंद्र देव कॉलेज, नई दिल्ली : प्रचार के पदों पर नियुक्ति हेतु आवेदन करें।
  आवेदन की अंतिम तिथि : 22 नवंबर, 2025
- rec.uod.ac.in
- भारतीय संसद : क्षेत्रीय भाषा के लिए परामर्शदाता दुभाषियों के लिए आवेदन आमंत्रित।
  आवेदन की अंतिम तिथि : 28 नवंबर, 2025
- sansad.in

अपनी प्रतिक्रियाओं और सुझावों के लिए हमें udaan@amarujala.com पर ई-मेल करें।

जब ऑफिस में तनाव सताए

जब आप अपने साथियों तथा वरिष्ठों से खुलकर बात कर पाते हैं, तो काम से ज्यादा जुड़ाव महसूस करते हैं

एंड्रिया कार्टर
प्रोफेसर,
एडलर विश्वविद्यालय, कनाडा

कार्यस्थल पर छोटे-मोटे मनमुटाव होने सामान्य हैं, लेकिन अगर किसी जगह पर लगातार गलत व्यवहार और गैर-पेशेवर माहौल बन जाए, तो काम करना मुश्किल हो जाता है। ऐसी स्थिति में कई पेशेवर तनाव में आकर नौकरी छोड़ देते हैं। इसे रिवेंज क्विटिंग कहा जाता है, जहां कर्मचारी सिर्फ नया मौका पाने के लिए नहीं, बल्कि गलत व्यवहार का विरोध करने के लिए भी नौकरी छोड़ते हैं। ऐसी परिस्थितियां चुनौतीपूर्ण जरूर होती हैं, लेकिन इन्हें संभालना मुश्किल नहीं है। अगर आप अपनी बात साफ और सम्मानजनक तरीके से रखने का अभ्यास करें, तो हालात काफी हद तक सुधर सकते हैं। इन छोटे-छोटे कदमों से आप अपने काम का अनुभव बेहतर बना सकते हैं और अचानक, भावनात्मक रूप से नौकरी छोड़ने जैसी स्थिति से बच सकते हैं।

■ शांत होकर स्थिति का मूल्यांकन करें
अचानक इस्तीफा देने के बाद नई नौकरी ढूंढने और नए माहौल में ढलने में समय और खर्च, दोनों बढ़ जाते हैं, और शुरुआत में आपकी उत्पादकता भी कम हो सकती है। साथ ही, ऐसे कदम से प्रबंधन को लगता है कि आप भावनाओं में आकर फैसले लेते हैं, जिससे विश्वास और आपकी पेशेवर छवि प्रभावित हो सकती है। इसलिए, किसी भी निर्णय से पहले शांत होकर स्थिति का मूल्यांकन करें और जरूरत पड़ने पर सलाह लें।

■ खुलकर बात करें
अगर आपको ऑफिस में अकेलापन और तनाव महसूस होता है, तो सहकर्मियों से बातचीत बढ़ाना और अच्छे संबंध बनाना मददगार होता है। जब आप अपने साथियों तथा वरिष्ठों से खुलकर बात कर पाते हैं, तो आप काम से ज्यादा जुड़ाव महसूस करते हैं। अपनापन होने से काम में रुचि बढ़ती है, रचनात्मकता आती है और तनाव भी कम होता है। इससे बर्नआउट की स्थितियां भी काफी हद तक टल जाती हैं।

■ वर्चुअली टीम से जुड़े
असली जुड़ाव तब बनता है जब कर्मचारी और संगठन दोनों एक-दूसरे को समझें और सहयोग करें। ऑफिस में मजबूत रिश्ते तनाव से बचाते हैं, और इसे सहयोग और अनौपचारिक नेटवर्किंग से बढ़ाया जा सकता है। अगर आप हाइब्रिड मॉडल में काम करते हैं, तो नियमित चेक-इन और वर्चुअल मीटिंग्स के जरिये टीम से जुड़े रहें। इससे अपनापन बढ़ता है। अगर फिर भी कोई मनमुटाव हो जाए, तो समय रहते बात करके हल निकालना बेहतर है, क्योंकि इससे विश्वास बना रहता है।

■ खुद को कमतर न आंकें
जब आपको लगता है कि आपकी मेहनत की कद्र नहीं हो रही, तो भीतर गुस्सा और निराशा बढ़ने लगती है। इससे नौकरी छोड़ने की इच्छा पैदा हो सकती है। लेकिन जब कार्यस्थल पर खुलकर फीडबैक देना और लेना प्रोत्साहित किया जाता है, तो आप खुद को सुरक्षित और सम्मानित महसूस करते हैं। ऐसे माहौल में आपके नौकरी छोड़ने की संभावना कम होती है। -द कन्वर्सेशन

खुद को परखें

1. कोणार्क सूर्य मंदिर किस राज्य में स्थित है?
   (a) ओडिशा (b) बिहार
   (c) तमिलनाडु (d) केरल
2. कौन-सा भारतीय नौसेना पोत बहुपक्षीय अभ्यास मालाबार-2025 में भारत का प्रतिनिधित्व कर रहा है?
   (a) आईएनएस, कोलकाता
   (b) आईएनएस, चेन्नई
   (c) आईएनएस, सह्याद्रि
   (d) आईएनएस, विक्रमादित्य
3. दृश्य उत्सर्जन रेखा कोरोनाग्राफ किस भारतीय अंतरिक्ष मिशन का प्राथमिक पेलोड है?
   (a) चंद्रयान-3
   (b) चंद्रयान-2
   (c) मंगलयान-2
   (d) आदित्य-एल1

उत्तर : 1.a, 2.c, 3.d

भारत सरकार की पहल

प्रोफेशनल राइटिंग ऑनलाइन कोर्स

यदि आपको लिखने का शौक है और आप इसे अपने कॅरिअर में बदलना चाहते हैं, लेकिन यह समझ नहीं पा रहे कि शुरुआत कहां से करें, तो कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय (एमएसएमडी) द्वारा स्किल इंडिया प्लेटफॉर्म पर शुरू किया गया प्रोफेशनल राइटिंग कोर्स आपके लिए एक बेहतरीन अवसर है।

इस कोर्स में आप प्रिंट, सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म के लिए स्पष्ट, सुव्यवस्थित और आकर्षक कंटेंट लिखने की पेशेवर तकनीकें सीखेंगे। इसके साथ ही, व्यावसायिक लेखन में आने वाली सामान्य नैतिक चुनौतियों से बचने के तरीके तथा दस्तावेजों को संशोधित और बेहतर बनाने के लिए आवश्यक संपादकीय रणनीतियां भी सिखाई जाएंगी। इस कोर्स के लिए अंग्रेजी भाषा की बुनियादी समझ आवश्यक है। कोर्स पूरा करने पर आपको प्रमाणपत्र प्रदान किया जाएगा। आप आधिकारिक लिंक tinyurl.com/ys5djn3w पर जाकर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

फेलोशिप अलर्ट

पोस्ट-डॉक्टरल फेलोशिप प्रोग्राम

स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय के शोरेंस्टीन एशिया-पैसिफिक रिसर्च सेंटर में स्टैनफोर्ड नेक्स्ट एशिया पॉलिसी लैब (एसएनएपीएल) की पोस्ट-डॉक्टरल फेलोशिप 2026-28 के लिए आवेदन आमंत्रित किए जा रहे हैं। यह फेलोशिप उन नए शोधकर्ताओं के लिए है, जो एशिया की वर्तमान चुनौतियों पर काम करना चाहते हैं और नीति-संबंधित, समस्या-उन्मुख शोध में रुचि रखते हैं। उम्मीदवारों का चयन उनके शैक्षणिक प्रदर्शन, शोध प्रस्ताव की गुणवत्ता, एसएनएपीएल के शोध विषयों से प्रासंगिकता और विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग की संभावना के आधार पर होगा। चयनित उम्मीदवारों को दो साल के लिए प्रति वर्ष 80,000 अमेरिकी डॉलर का वेतन और स्टैनफोर्ड की रिसर्च सुविधाओं तक पहुंच मिलेगी। आवेदन करने की अंतिम तिथि 01 दिसंबर, 2025 निर्धारित की गई है। इच्छुक उम्मीदवार आधिकारिक लिंक tinyurl.com/4s6dajea पर जाकर ऑनलाइन माध्यम से आवेदन कर सकते हैं।

अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता

एनुअल फोटो कॉन्टेस्ट-2025

स्मिथसोनियन मैगजीन ने एनुअल फोटो कॉन्टेस्ट-2025 के लिए आवेदन आमंत्रित किए हैं। इस प्रतियोगिता में वन्यजीव, यात्रा, कलात्मक तस्वीरें, ड्रोन/एरियल फोटो और अन्य श्रेणियां शामिल हैं। भेजी जाने वाली सभी तस्वीरें एक जनवरी, 2023 के बाद ली गई होनी चाहिए, ताकि प्रतिभागी दुनिया का ताजा और आधुनिक दृष्टिकोण दिखा सकें। इस कॉन्टेस्ट में कुल आठ पुरस्कार दिए जाएंगे, जिसमें एक ग्रैंड पुरस्कार के विजेता को 2,500 अमेरिकी डॉलर, छह श्रेणी विजेताओं को 500-500 अमेरिकी डॉलर और रीडर्स चॉइस विजेता को 500 अमेरिकी डॉलर और साथ ही कुछ गैर-नकद पुरस्कार भी मिल सकते हैं। प्रतिभागी अपनी तस्वीरें 01 दिसंबर, 2025 तक आधिकारिक लिंक photocontest.smithsonianmag.com/photocontest पर जाकर जमा कर सकते हैं।

सामान्य ज्ञान

रिफ्ट वैली बुखार

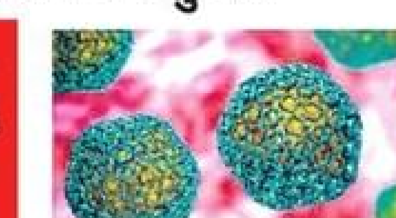

■ क्या है
यह वायरस फेनुइविरिडे परिवार के फ्लेबोवायरस समूह से संबंधित है।

■ चर्चा में क्यों
डब्ल्यूएचओ ने हाल ही में पश्चिमी अफ्रीका के मॉरिटानिया और सेनेगल में रिफ्ट वैली बुखार (आरवीएफ) के प्रकोप की पुष्टि की है।

■ संरचना व उत्पत्ति
इससे मनुष्य संक्रमित जानवरों या मच्छरों के काटने से संक्रमित होते हैं। यह व्यक्ति से व्यक्ति में नहीं फैलता है। इसका नाम केन्या की रिफ्ट वैली से लिया गया है, जहां 1930 के दशक में यह बीमारी पहली बार पाई गई।

■ इसके लक्षण
यह आमतौर पर एक हल्की, फ्लू जैसी बीमारी होती है, जो संक्रमण के दो से छह दिन बाद शुरू होती है। लक्षणों में बुखार, सिरदर्द, थकान व कभी-कभी उल्टी शामिल हैं। कुछ मामलों में यह आंख, दिमाग या लीवर को प्रभावित करता है। हालांकि इसका कोई विशेष इलाज नहीं है, सिर्फ सहायक उपचार दिए जाते हैं।

कल्पवृक्ष — FAITH & WISDOM

पापों से मुक्ति और मन की शांति

उत्पन्ना एकादशी का व्रत न केवल पापों से मुक्ति, बल्कि मन की शांति, आत्मबल और आध्यात्मिक जागृति भी प्रदान करता है। इस एकादशी व्रत को करने वाले व्यक्ति को सहस्र अश्वमेध यज्ञ के समान पुण्य प्राप्त होता है।

श्रीनारायण की पराशक्ति एकादशी का प्राकट्यपर्व मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष की एकादशी तिथि को मनाया जाता है। इस वर्ष यह पर्व 15 नवंबर शनिवार को है। सभी एकादशियों में प्रथमा होने के फलस्वरूप इन्हें उत्पन्ना एकादशी भी कहा जाता है। इसी तिथि को श्रीनारायण ने महादैत्य मूर का वध करने के लिए इन्हें अपने शरीर से प्रकट किया था। इससे संबंधित एक पौराणिक कथा इस प्रकार है, सतयुग में चंद्रावती नाम की नगरी में तालजंघ नाम का असुर रहता था। उसका पुत्र मूर दानव के नाम से विख्यात हुआ, जो बड़ा ही अद्भुत, महापराक्रमी, अत्यंत रौद्र तथा संपूर्ण देवताओं के लिए भयंकर था। उस महादुरात्मा ने इंद्र को भी जीत लिया और सभी देवताओं को स्वर्ग से निकाल दिया। तब सभी देवता महादेव जी के पास गए और उन्हें अपना दुःख सुनाया। महादेव जी ने उन सभी को श्रीमहाविष्णु जी के पास जाने के लिए कहा। उस समय श्रीहरि क्षीर सागर में विश्राम कर रहे थे। देवों ने उन्हें प्रणाम किया और अपना दुःख सुनाकर उनकी स्तुति की। इंद्र की कष्टप्रद वृथा सुनकर भगवान जनार्दन को अत्यंत क्रोध हुआ। वे दानव सेना का वध करने के लिए चल पड़े और अपने चक्र सुदर्शन से उस मुर सेना का संहार करके बद्रिकाश्रम चले गए। वहां सिंहावती नाम की लंबी गुफा में विश्राम करने लगे। इधर दानव मूर भी भगवान को मार डालने के उद्देश्य से उनके पीछे-पीछे गया और गुफा में प्रवेश किया। वहां भगवान श्रीहरि को सोते देख उसे बड़ा हर्ष हुआ। उसने सोचा यह दानवों को भय देने वाला है अतः निस्संदेह इसे मार डालूंगा। उसके मन में ऐसा विचार आते ही भगवान विष्णु के शरीर से एक महातेजस्विनी परम दिव्यास्त्रों से युक्त कन्या उत्पन्न हुई। उसका बल और पराक्रम महान था। मूर ने उस कन्या से युद्ध आरंभ कर दिया। युद्ध कला में निपुण उस कन्या ने मूर को हुंकार मात्र से भस्म कर राख का ढेर बना दिया। उसके मारे जाने पर भगवान विश्राम से जाग उठे और बोले, मेरे इस भयंकर दानव का वध किसने किया है? वह कन्या बोली, स्वामी! आपके प्रसाद से मैंने इस महादैत्य का वध किया है। श्रीनारायण उस कन्या से बहुत प्रसन्न हुए और बोले, हे कल्याणी! तुम्हारे इस कर्म से तीनों लोकों के मुनि और देवता आनंदित हुए हैं, जो चाहो वरदान मांग लो। देवदुर्लभ होने पर भी वह वर मैं तुम्हें दूंगा, इसमें तनिक भी संदेह नहीं है। उसने कहा, 'प्रभो'! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो मैं आपकी कृपा से सब तीर्थों में प्रधान, सभी विघ्नों का नाश करने वाली तथा सब प्रकार की सिद्धि देने वाली होऊं। जो लोग आपकी भक्ति करते हुए इस दिन उपवास करेंगे, उन्हें सब प्रकार की सिद्धि प्राप्त हो। श्रीविष्णु जी बोले, कल्याणी! तुम जो कुछ कहती हो वह सब पूर्ण होगा। वह कन्या साक्षात एकादशी ही थी।

पं. जयगोविंद शास्त्री
ज्योतिषाचार्य

चावल खाने से बचें
सभी शास्त्रों-पुराणों ने एकादशी तिथि को चारों पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) देने वाली सब व्रतों में श्रेष्ठ बतलाया है। यह व्रत सभी चारों वर्णों वाले प्राणी भी कर सकते हैं। इस व्रत को यती, वैष्णव तथा ब्राह्मणों को विशेष रूप से करना चाहिए। इस दिन सभी पाप, ब्रह्महत्या आदि पके चावल में ही निवास करते हैं, अतः जो प्राणी इस तिथि के दिन पका हुआ चावल (भात) खाता है, वह सर्वपातकभागी होकर मरने के पश्चात नरकगामी होता है। ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार ऐसा प्राणी उन्नीस युग पर्यंत घोरतम कुंभीपाक में रहकर तदनंतर चांडाल योनि में जन्म लेता है।

अटूट भक्ति और पराक्रम का पर्व

श्रीबालाजी जन्मोत्सव (19 नवंबर) पर विशेष

श्रीबालाजी (हनुमान) जयंती या जन्मोत्सव का मतलब भगवान हनुमान के जन्म का उत्सव है और इसे साल में दो बार मनाया जाता है। चैत्र माह की पूर्णिमा को उत्तर भारत में और कार्तिक माह की कृष्ण चतुर्दशी को दक्षिण भारत में मनाया जाता है, क्योंकि वहां यह दिन देवी सीता द्वारा हनुमान जी को अमरता का वरदान देने से संबंधित है। एक मान्यता यह भी है कि बचपन में जब हनुमान जी ने सूर्य को फल समझकर खाने का प्रयास किया तो इंद्रदेव ने उनपर प्रहार किया, जिससे वे मूर्छित हो गए। बाद में सभी देवताओं की प्रार्थना के बाद उन्हें दूसरा जीवन मिला, इसलिए भी यह उत्सव मनाया जाता है। इस दिन भक्त हनुमान जी की विशेष पूजा-अर्चना करते हैं। मंदिरों में विशेष आयोजन होते हैं, जैसे कि अभिषेक, आरती और भक्तों पर पुष्प वर्षा। हनुमान चालीसा, बजरंग बाण आदि का पाठ किया जाता है। हनुमानजी के साथ-साथ श्रीराम और माता सीता की पूजा भी की जाती है। श्री बालाजी जन्मोत्सव न केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक है, बल्कि यह हमें साहस, निष्ठा और सेवा भाव का संदेश भी देता है, जो हनुमान जी के जीवन का सार है।

सप्ताह का मंत्र

नमोऽस्तु ते शाश्वत सर्वयोने ब्रह्माधिपं त्वामृषयो वदन्ति।
तपश्च सत्त्वं च रजस्तमश्च त्वामेव सर्वं प्रवदन्ति सन्तः॥
त्वं ब्रह्मा हरिरथ विश्वयोनिरग्निः संहर्ता दिनकरमण्डलाधिवासः।
प्राणस्त्वं हुतवहवासवादिभेद-स्त्वामेकं शरणमुपैमि देवमीशम्॥
सांख्यास्त्वां विगुणमथाहुरेकरूपं योगास्त्वां सततमुपासते हृदिस्थम्।
वेदास्त्वामभिदधतीह रुद्रमग्निं त्वामेकं शरणमुपैमि देवमीशम् ॥
त्वत्पादे कुसुममथापि पत्रमेकं दत्त्वासौ भवति विमुक्तविश्वबन्धः।
सर्वाघं प्रणुदति सिद्धयोगिजुष्टं स्मृत्वा ते पदयुगलं भवत्प्रसादात् ॥

स्रोत : कूर्म पुराण

श्रीकृष्ण को पुत्र प्राप्ति का वरदान

संकेत : प्रस्तुत मंत्र कूर्म पुराण के चौबीसवें अध्याय से लिया गया है, जिनमें भगवान श्रीकृष्ण उत्तम पुत्र प्राप्ति के लिए देवाधिदेव श्रीशिव और माता पार्वती की इन मंत्रों द्वारा स्तुति करते हैं। श्रीशिव और मां पार्वती इस स्तुति से प्रसन्न होकर उन्हें उत्तम पुत्र प्राप्ति के साथ-साथ और भी कई वरदान देते हैं।

मंत्रार्थ : भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे शाश्वत! सबके मूलकारण! आपको नमस्कार है। ऋषि लोग आपको ब्रह्मा का भी अधिपति कहते हैं। संतजन तप, सत्त्व, रज एवं तमोगुण और सब कुछ आपको ही बतलाते हैं। आप ब्रह्मा, विष्णु, विश्वयोनि, अग्नि, संहर्ता और सूर्यमंडल में निवास करने वाले हैं। प्राण, हुतवह (अग्नि) तथा इन्द्रादि विविध देव आप ही हैं। मैं अद्वितीय देव ईश की शरण में आया हूं। सांख्यशास्त्र वाले आपको एकरूप और गुणातीत कहते हैं। योगिजन हृदय में रहने वाले आपकी सतत उपासना करते हैं। वेद आपको रुद्र, अग्नि नाम से कहते हैं। मैं आप ईश देव की शरण में आया हूं। मनुष्य आपके चरण में मात्र एक पुष्प अथवा एक बिल्वपत्र ही चढ़ाकर संसार-बंधन से विमुक्त हो जाता है। सिद्धों तथा योगियों द्वारा सेवित आपके चरण कमलों का स्मरण कर आपकी कृपा से मनुष्य सभी पापों को विनष्ट कर डालता है।

तात्पर्य : श्रीकृष्ण कहते हैं कि- तत्त्वज्ञ लोग जिन्हें सभी प्रकार के विभाग से रहित, निर्मल, अन्तर्हृदय में अवस्थित, ज्योति, अनंत, अद्वितीय, अचल, सत्य, सर्वव्यापी तथा आदि, मध्य और अंत से रहित स्थानरूप कहते हैं, ऐसे आप सत्यविभव, सनातन विश्वेश्वर शिव की शरण में मैं आया हूं। प्रणवरूप नीलकंठ, त्रिलोचन और शक्तिरूप हे महादेव! आप मेरी मनोकामना पूर्ण करें आप शरणागतवत्सल हैं।

आज का दिन

13 नवंबर, 1982

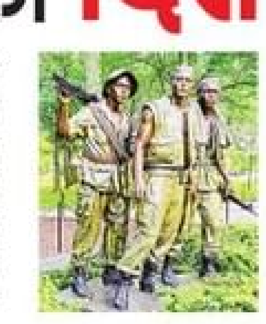

वाशिंगटन, डीसी में वियतनाम वेटरन्स मेमोरियल का उद्घाटन हुआ था। इसमें वियतनाम युद्ध में मारे गए या लापता हुए 58,000 से ज्यादा सैनिकों के नाम अंकित हैं।

- 1770 : ब्रिटिश राजनीतिज्ञ जॉर्ज ग्रेनविल का लंदन में निधन हुआ था।
- 1780 : महाराजा रणजीत सिंह का जन्म हुआ था।
- 1850 : स्कॉटिश कवि रॉबर्ट लुई स्टीवेंसन का जन्म हुआ था।
- 1940 : डिज्नी की एनिमेटेड फिल्म फैंटेसिया का पहला सार्वजनिक प्रदर्शन हुआ था।

व्रत त्योहार

आज : मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष नवमी
कल : हेमंत ऋतु, सूर्य दक्षिणायने, दक्षिण गोले।
राहुकाल : प्रातः 10.30 से 12.00 तक

■ सूर्योदय : 06.47
■ सूर्यास्त : 17.24
(भारतीय मानक समयानुसार)

कल का पंचांग

विक्रमी संवत 2082, 23 कार्तिक मास शक 1947, कार्तिक मास 29 प्रविष्टे, 22 जमादिउलअवल हिजरी 1447, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष दशमी 24.49 तक उपरांत एकादशी, पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र 21.20 तक उपरांत उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र, वैधृति योग 30.25 तक उपरांत विष्कुम्भ योग, वणिज करण 12.11 तक उपरांत विष्टि (भद्रा) करण, चंद्रमा कन्या राशि में 27.53 बजे।

amarujala.com/astrology

राशिफल

■ पं. विनोद त्यागी

मेष : पूर्व निर्धारित कार्यों में अवरोध आएंगे। नौकरी में सहकर्मियों से मतभेद रहेंगे। होगा। संतान से निराशा होगी।

वृष : मानसिक तनाव बना रहेगा। नौकरी में कार्य भार बढ़ सकता है। व्यवसाय में धन लाभ कम होगा।

मिथुन : सामाजिक मान-सम्मान बढ़ेगा। नई योजना में व्यस्त रहेंगे। नौकरी में दबदबा बना रहेगा।

कर्क : आत्मविश्वास में कमी रहेगी। कार्य क्षेत्र में परेशानी होगी। अजनबी से सावधानी बरतें।

सिंह : भाग्य सहायक रहेगा। नौकरी में पद प्रतिष्ठा का लाभ संभव है। उपहार सम्मान की प्राप्ति होगी।

कन्या : दिनमान प्रतिकूल रहेगा। कानूनी मामले में परेशानी होगी। व्यय की अधिकता रहेगी।

तुला : मानसिक तनाव बना रहेगा पूर्व निर्धारित कार्यों में निराशा होगी। सहकर्मियों से मतभेद रहेगा।

वृश्चिक : मनोत्साह बना रहेगा। किसी समस्या से मुक्ति मिलेगी। राजनीतिक संबंध सहायक रहेंगे।

धनु : व्यक्तिगत संबंध सहायक रहेंगे। सरकारी क्षेत्र में अटके कार्य बनेंगे। विरोधी से सावधानी बरतें।

मकर : आत्मविश्वास में कमी रहेगी। कार्य क्षेत्र में कुछ परेशानी होगी। नौकरी में कार्य का दबाव बना रहेगा।

कुंभ : दिनमान अनुकूल रहेगा। नौकरी प्राप्ति के अवसर मिलेंगे। कार्य क्षेत्र में प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

मीन : मनोत्साह बना रहेगा। विरोधी परास्त होंगे। नौकरी में अधिकारी अनुकूल रहेंगे। राजकाज में सफलता मिलेगी।

जन्मदिन

जूही चावला, अभिनेत्री

इस वर्ष आत्मविश्वास बनाए रखें। योजनाओं में सफलता विलंब से मिलेगी। साल के शुरू में समय प्रतिकूल रहेगा। विश्वासपात्रों से निराशा होगी। सामाजिक मान-सम्मान में कमी आ सकती है। आर्थिक दबाव बढ़ेगा। वर्ष उत्तरार्द्ध में समय अनुकूल रहेगा। न्याय क्षेत्र में विजय मिलेगी।

सुडोकू

				6			4	
	8						1	
5		6				3		8
7				8	6	4		
	5			4			7	
		8	2	7				9
8		2				7		4
	1						3	
	7			9				

सुडोकू 81 वर्गों का ग्रिड है, जो 9 वर्गों के ब्लॉक में बंटा हुआ होता है। कुछ वर्गों के अंक लिखे हैं और खाली वर्गों में 1 से लेकर 9 तक के अंक लिखने होते हैं। कोई नंबर 1 पंक्ति, कॉलम या 9 वर्ग वाले छोटे ब्लॉक में दोबारा नहीं आ सकता है।

उत्तर

1	9	3	8	6	2	5	4	7
2	8	7	4	5	3	9	1	6
5	4	6	9	1	7	3	2	8
7	2	9	1	8	6	4	5	3
6	5	1	3	4	9	8	7	2
4	3	8	2	7	5	1	6	9
8	6	2	5	3	1	7	9	4
9	1	4	7	2	8	6	3	5
3	7	5	6	9	4	2	8	1

डेली हेल्थ कैप्सूल

निमोनिया में नीलगिरी-मेथी की चाय

निमोनिया के मरीजों के लिए दूध की चाय नुकसानदेह है। इसमें पुदीना, नीलगिरी और मेथी की चाय लाभकारी है।

सर्दी में निमोनिया होने का खतरा रहता है। बच्चे और बुजुर्ग आसानी से इसकी चपेट में आ जाते हैं। यह एक ऐसी बीमारी है, जिसमें फेफड़ों में सूजन आ जाती है और लंबे समय तक खांसी तथा सांस लेने में दिक्कत हो सकती है। निमोनिया में फेफड़े बैक्टीरियल, वायरस या फंगल इंफेक्शन का शिकार हो जाते हैं। इस स्थिति में दूध की

चाय फेफड़ों की सूजन की परेशानी और बढ़ा सकती है। ऐसे में आयुर्वेदिक चाय फायदेमंद है। निमोनिया के मरीजों के लिए दूध की चाय कफ और कंजेशन बढ़ाती है। चाय में कैफीन होता है, जिससे इम्यून सिस्टम प्रभावित होता है। डिहाइड्रेशन भी हो सकता है। ऐसे में पुदीना, नीलगिरी और मेथी से बनी हर्बल टी ले सकते हैं। यह चाय गले की सूजन में कमी और कफ को ढीला करती है। पेपरमिंट में मौजूद मेंथॉल कफ को पतला करता है और खांसी में आराम पहुंचाता है। मेथी में एंटी इंफ्लेमेटरी और इम्यूनिटी बूस्टर जैसे गुण होते हैं। नीलगिरी में पाया जाने वाला यूकेलिप्टाल यौगिक सांस की नली को खोलकर सांस लेने आसान बनाता है। यह चाय बहुत गरम नहीं पीनी चाहिए।

क्या कहते हैं विशेषज्ञ

निमोनिया में दूध की चाय कफ और कंजेशन बढ़ा सकती है। कैफीन इम्यून क्षमता को प्रभावित करता है। मेथी में एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण होते हैं। हर्बल चाय पीना अधिक लाभकारी है।
-डॉ. नवीन चंद्र जोशी
वरिष्ठ आयुर्वेद चिकित्सक

ITO पुल से गिरकर युवक की मौत

■ **NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली:** यूपी के बरेली के रहने वाले 25 वर्षीय लक्की मखानी की 4 नवंबर को संदिग्ध हालात में आईटीओ पुल से गिरने से मौत हो गई। उनका शव करीब एक सप्ताह तक एलएनजेपी अस्पताल की मोर्च्यूरी में रखा गया था। दूसरी तरफ नोएडा पुलिस लक्की की तलाश कर रही थी। हादसे के करीब 6 दिन बाद नोएडा पुलिस को पता चला कि लक्की का शव एलएनजेपी अस्पताल की मोर्च्यूरी में रखा गया है। तब लक्की के परिवार को सूचना दी गई

साथ में था दोस्त, जो बाइक लेकर मौके से चला गया था

रिटायर्ड टीचर से 37.75 लाख रुपये की ठगी

■ **NBT न्यूज, नई दिल्ली:** साउथ डिस्ट्रिक्ट के मालवीय नगर इलाके में 68 वर्षीय एक रिटायर्ड टीचर से जालसाजों ने शेयर मार्केट में निवेश का झांसा देकर करीब 37.75 लाख रुपये ऐंठ लिए। साइबर थाना पुलिस ने पीड़िता की शिकायत पर केस दर्ज कर लिया है। फिलहाल पुलिस पूरे मामले की जांच कर रही है। पुलिस को दी शिकायत में पार्वती (68) ने बताया कि 9 जून 2024 को उनके वॉट्सऐप नंबर पर कॉल आई। उन्हें चार शेयर ट्रेडिंग ग्रुप में जोड़ लिया। इन ग्रुप्स में अलग-अलग मेंबर शेयर मार्केट में मुनाफा होने का मैसेज शेयर करते थे।

निवेश के बाद मोटे मुनाफे का झांसा देकर फंसाया

सरकारी स्कूलों में तैयार होंगे भविष्य के ओलिंपियन: CM

■ NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने बुधवार को शिक्षा विभाग के साथ हुई बैठक में यह निर्णय लिया

दिल्ली सरकार ने स्कूलों में खेलों को बढ़ावा देने के लिए आधुनिक सुविधाओं से युक्त स्पोर्ट्स ग्राउंड और ऑडिटोरियम बनाने का फैसला किया है। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने बुधवार को शिक्षा विभाग के साथ हुई बैठक में यह निर्णय लिया। सीएम ने कहा कि अब सरकारी स्कूल खेल प्रतिभाओं की नर्सरी बनेंगे। सरकार ने बताया कि ये स्पोर्ट्स ग्राउंड विभिन्न खेल एकेडमियों के सहयोग से विकसित किए जाएंगे। बच्चों को शुरुआती उम्र से ही पेशेवर खेल प्रशिक्षकों से प्रशिक्षण दिलाया जाएगा।

मुख्यमंत्री ने स्कूलों में स्पोर्ट्स ग्राउंड विकसित करने के लिए शिक्षा विभाग के अधिकारियों को रूपरेखा तैयार करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि सरकार का लक्ष्य है कि दिल्ली के सरकारी स्कूलों से खेल प्रतिभाओं को आगे बढ़ने का मौका मिले और यहां से भविष्य के ओलिंपियन तैयार हों। दिल्ली सरकार विभिन्न खेल एकेडमियों के साथ साझेदारी करेगी। क्रिकेट, बॉक्सिंग, फुटबॉल, तैराकी और ताइक्वांडो जैसे खेलों के लिए समझौते किए जाएंगे। खेल एकेडमियों को प्रशिक्षण सुविधाओं के उपयोग की अनुमति दी जाएगी और बच्चों को कोचिंग उपलब्ध कराई जाएगी।

अधिकारियों ने बताया कि वर्तमान में दिल्ली में एक हजार से अधिक सरकारी स्कूल हैं, जिनमें से 799 स्कूलों के पास अपना कैंपस है। इन स्कूलों का सर्वे कर यह पता लगाया जाएगा कि कहां स्पोर्ट्स ग्राउंड और कहां ऑडिटोरियम बनाए जा सकते हैं। जहां बड़े मैदान उपलब्ध हैं, वहां आधुनिक स्पोर्ट्स ग्राउंड विकसित किए जाएंगे और जहां स्थान सीमित है, वहां बहुउद्देशीय ऑडिटोरियम या मिनी स्पोर्ट्स एरीना बनाए जाएंगे। सरकार ने ग्रामीण इलाकों के स्कूलों को प्राथमिकता देने का निर्णय लिया है।

सरकार के अनुसार, कुछ चुनिंदा स्कूलों में स्विमिंग पूल के निर्माण की योजना पर भी विचार किया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों से कहा कि इस योजना के लिए बजट की कोई कमी नहीं होगी और इसे जल्द से जल्द लागू किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि वर्तमान में सरकार ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेताओं को 7 करोड़ रुपये, रजत पदक विजेताओं को 5 करोड़ रुपये और कांस्य पदक विजेताओं को 3 करोड़ रुपये की पुरस्कार राशि देती है।

एक्सटॉर्शन मनी के लिए फायरिंग करने वाले तीन आरोपी अरेस्ट

Shanker.Singh@timesofindia.com

पुलिस का दावा
- रिमांड पर आया एक बदमाश भागने लगा, जिसके पैर पर मारी गोली
- गुड्डू को मंगलवार सुबह पिस्टल रिकवर करने ले लिए ले जाया जा रहा था

■ **नई दिल्ली:** फर्श बाजार में 30 लाख रुपये की रंगदारी के लिए 2 नवंबर की रात कथित बुकी (सट्टा ऑपरेटर) के घर पर फायरिंग करने वाले शूटरों को दबोच लिया गया है। विश्वास नगर के एनएसए कॉलोनी के जहीर उर्फ गुड्डू (30), चौहान बांगर के सलमान उर्फ लड्डन (29) और जाफराबाद के फारूक (26) को पुलिस रिमांड पर लिया गया था। पुलिस का दावा है कि गुड्डू को मंगलवार सुबह पिस्टल रिकवर करने ले लिए ले जाया जा रहा था। भागने के लिए एक पुलिसकर्मी की सर्विस पिस्टल छीनने लगा तो पैर में गोली मारकर काबू किया गया।

जेल में बंद गैंगस्टर हाशिम बाबा का गुर्गा सचिन उर्फ मुकेश उर्फ गोलू दुबई से गिरोह को ऑपरेट कर रहा है। वह फर्श बाजार में 7 दिसंबर 2024 को हुए बर्तन कारोबारी मर्डर में वॉन्टेड है। गोलू ने बिहारी कॉलोनी निवासी कथित बुकी बंटी को 17 अक्टूबर को कॉल कर 30 लाख की रंगदारी मांगी थी। यह कॉल थाईलैंड के नंबर से आई थी। पीड़ित ने पुलिस में कंप्लेंट नहीं की थी। तीन बदमाशों ने 2 नवंबर की रात करीब 11:05 बजे फायरिंग की, जिनमें से एक ने विडियो बनाई थी।

पुलिस सूत्रों ने बताया कि इस विडियो को गोलू को भेजा गया था, ताकि भरोसा हो जाए कि काम हो चुका है। फर्श बाजार के एसएचओ अजय करण शर्मा और स्पेशल स्टाफ के इंचार्ज इंस्पेक्टर अर्जुन सिंह की लीडरशिप में एसआई धीरज, एएसआई नजीर, प्रमोद, एचसी नितिन, राजीव, योगेश, अमित, मिथलेश, सिपाही रुद्र, अमन और लवप्रीत की एक टीम बनाई गई। जांच में पता चला कि बदमाश देहरादून में हैं। पुलिस ने संडे रात छापेमारी कर तीनों को वहां से दबोच लिया।

सिगार फायरिंग में भी गोलू के गुर्गे

पुलिस सूत्रों ने बताया कि झिलमिल स्थित सिगार रेस्टोरेंट पर संडे रात फायरिंग करने वाले भी गोलू के गुर्गे थे। इनकी पहचान इमरान और शावेज के तौर पर हुई, जो वेलकम के रहने वाले हैं। अभी इसका खुलासा नहीं हो सका है कि गोलीबारी रंगदारी के लिए हुई थी या दहशत फैलाना मकसद था।

साइबर ठगी में अकाउंट से निकले 2.92 लाख

■ **NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली:** ईस्ट दिल्ली में रहने वाली एक महिला से साइबर ठगी का मामला सामने आया है। महिला का आरोप है कि उनके पास न कोई ओटीपी आया न ही कहीं से कोई कॉल आया। अचानक उनके अकाउंट से पैसे कटने लगे और करीब 2 लाख 92 हजार रुपये उनके अकाउंट से निकल गए। महिला की शिकायत पर ईस्ट जिले की साइबर थाना पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है। फिलहाल पुलिस यह पता कर रही है कि आखिर अकाउंट से कटे पैसे किस अकाउंट में ट्रांसफर हुए हैं।

न ओटीपी आया, न ही कोई कॉल, फिर भी निकले पैसे

PCA ने 77% शिकायतों का किया निपटारा

■ **NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली :** पुलिस कंप्लेंट अथॉरिटी (PCA) ने वर्ष 2024-25 के दौरान कुल 1,645 शिकायतों का निपटारा किया है। अथॉरिटी को मिली कुल शिकायतों में से लगभग 77 प्रतिशत शिकायतों का निपटारा हो गया। दिल्ली एलजी वीके सक्सेना ने कहा कि पुलिस शिकायत प्राधिकरण की कार्य कुशलता में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। बुधवार को राजनिवास में आयोजित कार्यक्रम के दौरान वर्ष 2024-25 की छठी वार्षिक रिपोर्ट एलजी को सौंपी गई।

कुल 1,645 शिकायतों का निपटारा किया है

विधानसभा ने अरविंद केजरीवाल और सिसोदिया की याचिका का विरोध किया

■ NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली

दिल्ली विधानसभा ने बुधवार को दिल्ली हाई कोर्ट में आम आदमी पार्टी के नेताओं अरविंद केजरीवाल और मनीष सिसोदिया की उस याचिका का विरोध किया, जिसमें उन्होंने 'फांसी घर' विवाद पर विधानसभा की विशेषाधिकार समिति द्वारा उन्हें जारी किए गए समन को चुनौती दी है।

जस्टिस सचिन दत्ता के सामने विधानसभा की ओर से सीनियर एडवोकेट जयंत मेहता ने कहा कि याचिका बेहद गलत है। यह नोटिस केवल फांसी घर की प्रामाणिकता का पता लगाने में समिति की सहायता के लिए जारी किया गया है। दूसरी ओर, आप नेताओं की ओर से पेश सीनियर एडवोकेट शादान फरासत ने कई फैसलों का हवाला देते हुए याचिका को विचार के लायक बताया। उन्होंने कहा, यह समिति द्वारा ताकत का जबरन इस्तेमाल है। फरासत ने दलील दी कि इस तरह के समन जारी करने में समस्या यह है कि विधानसभा के विधायी कामकाज के लिए इसकी जरूरत होनी चाहिए। दूसरी ओर, मेहता ने कहा कि यह नोटिस विशेषाधिकार हनन के लिए नहीं, बल्कि केवल फांसी घर की प्रामाणिकता का पता लगाने में समिति की सहायता के लिए है। उन्होंने कहा कि समिति केवल तथ्यों की जांच कर रही है। जांच पूरी तरह से तथ्यात्मक है। इसलिए उन्हें नोटिस दिया गया है। सुनवाई 24 नवंबर को जारी रहेगी। केजरीवाल और सिसोदिया को गुरुवार को पेश होने के लिए बुलाया गया है।

केजरीवाल-सिसोदिया के खिलाफ मुकदमे की मंज़ूरी की होगी जांच

■ **NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली:** दिल्ली हाई कोर्ट ने बुधवार को ईडी से उस फाइल के बारे में पूछा, जिसमें दिल्ली शराब नीति मामले से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग मामले में पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया पर मुकदमा चलाने के लिए दी गई मंजूरी के बारे में पूरी जानकारी हो। जस्टिस रविंदर डुडेजा ने आम आदमी पार्टी नेताओं की याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए ईडी को मंजूरी से जुड़ी ओरिजनल फाइल पेश करने को कहा। आप नेताओं ने निचली अदालत द्वारा अभियोजन पक्ष की शिकायत पर संज्ञान लेने के आदेश को चुनौती दी थी, जिसमें उन्हें प्रिवेंशन ऑफ मनी लॉन्ड्रिंग एक्ट (पीएमएलए) के तहत आरोपी बनाया गया।

'समय जीवन का सर्वश्रेष्ठ शिक्षक है'

■ **NBT न्यूज, नई दिल्ली:** सिद्धपीठ कालकाजी मंदिर में सत्संग के अवसर पर महंत सुरेंद्रनाथ ने कहा कि जिस प्रकार माता-पिता जिस बालक पर ज्यादा स्नेह रखते हैं तो उसको अपनी पूंजी बता देते हैं, कि बेटा इसे संभाल कर रख लेना समय पर काम आएगी। ठीक उसी प्रकार जब भगवान अपने भक्तों पर कृपा करते हैं तो अपनी कीमती बातें उन्हे बता देते हैं कि उचित अवसर पर इनका सदुपयोग करना।

स्पीकिंग ट्री धर्म कर्म

वहीं श्री दुर्गा मंदिर, डी ब्लाक, साकेत में सत्संग के समय पंडित राजकांत झा ने कहा कि समय जीवन का सर्वश्रेष्ठ शिक्षक होता है, क्योंकि समय जब विपरीत होता है तो अपने भी दूर हो जाते हैं। वहीं जब समय अनुकूल होता है तो पराए भी अपने बन जाते हैं। ऐसे समय पर ही अपने- पराए का ज्ञान होता है। शिव नवग्रह मंदिर धाम चांदनी चौक में महंत शिव शंकर महाराज ने कहा कि आत्मा, गुरू, संत और शास्त्र ये चार प्रकार की कृपा होती हैं, इन्हे प्राप्त करने के प्रयास सदा करने ही चाहिए। यदि सच्चे दिल से प्रयास करोगे तो कोई न कोई कृपा अवश्य प्राप्त हो जाएगी।

वॉटर सप्लाई, लीकेज और बिलिंग पर नज़र रखेगा AI

■ NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली

बेहतर वॉटर सप्लाई, बिलिंग सिस्टम में सुधार और वॉटर लीकेज की मॉनिटरिंग अब एआई से की जाएगी। इसके लिए जल बोर्ड ने बुधवार को आईआईटी कानपुर के तहत स्थापित ऐरावत रिसर्च फाउंडेशन (एआरएफ) के साथ समझौता किया। इस दौरान जल मंत्री प्रवेश साहिब सिंह और कई वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे।

इस समझौते के तहत दोनों संस्थान अनुसंधान, डेटा यूनिफिकेशन और एआई के प्रयोग से वॉटर इन्फ्रास्ट्रक्चर, बिलिंग सिस्टम और वॉटर सप्लाई सिस्टम में सुधार करेंगे। प्रवेश साहिब सिंह के अनुसार, जल बोर्ड और एआरएफ मिलकर एआई आधारित डेटा संचालित समाधान तैयार करेंगे, ताकि पाइपलाइनों में लीकेज को समय रहते ठीक किया जा सके और नॉन-रेवेन्यू वॉटर का गैप कम हो। बेहतर वॉटर इन्फ्रास्ट्रक्चर के लिए कौन-से कार्य किए जाने चाहिए, इस पर फ्यूचर प्लानिंग भी की जाएगी। एआई के जरिए वॉटर सिस्टम का वर्चुअल मॉडल तैयार करने की दिशा में भी काम चल रहा है। जिन इलाकों में वॉटर प्रेशर कम है, उन्हें भी इसकी मदद से सुधारा जाएगा। बिलिंग से जुड़ी जो परेशानियां हैं, उनके सटीक समाधान भी एआई के माध्यम से खोजा जाएगा। यह पहल क्लीन यमुना मिशन को भी सशक्त करेगी।

जल बोर्ड और IIT कानपुर की एआरएफ फाउंडेशन में समझौता

मंत्री के अनुसार, भूजल निगरानी में भी एआई तकनीक का प्रयोग करने की योजना है। इसके तहत बोरवेल सेंसर और सैटलाइट इमेजरी से प्राप्त डेटा को एकीकृत कर यह पता लगाया जाएगा कि किस इलाके में भूजल स्तर कितना है। वॉटर स्टोरेज कैपेसिटी की वास्तविकता और उसकी निगरानी भी भविष्य में एआई से करने का प्लान है।

अमर कटारिया के परिवार से मिले सचदेवा

■ **NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली:** दिल्ली बीजेपी अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने बुधवार को लाल किला ब्लास्ट में मारे गए श्रीनिवासपुरी निवासी अमर कटारिया के घर जाकर संवेदना प्रकट की।

सचदेवा ने अमर के पिता जगदीश कटारिया और अन्य परिजनों से मिलकर अपनी और बीजेपी परिवार की ओर से शोक संवेदना प्रकट करते हुए कहा कि दुख की इस घड़ी में पूरी बीजेपी उनके साथ खड़ी है। सचदेवा ने एक बयान में कहा कि दिल्ली पुलिस की सकारात्मक प्रारंभिक जांच के बाद एनआईए अब दिल्ली धमाके की जांच कर रही है और हर सूरत में भारत सरकार इस धमाके के मास्टरमाइंड को भी बेनकाब करके सजा देगी। उन्होंने कहा कि दिल्ली के लाल किला में हुआ धमाका देश को आतंकवाद की चुनौती है और मैं इस घटना में मारे गए और घायल हुए हर व्यक्ति को देश की ओर से सलाम करता हूं, क्योंकि वे देश के दुश्मनों के द्वारा किए गए हमले की चपेट में आए हैं।

TIMES interact — Connecting People, Connecting Needs.
To book your ad — Logon to: ads.timesofindia.com or Call: 18001205474 (Toll Free) — Scan QR Code

भर्ती

भर्ती-रिक्त पदों की स्थिति

लेखा

लेखा और वित्त

SAGARMALA Finance Corporation Limited invites applications for 02 post of Consultant(Banking, Finance & Accounts) on Contract basis. For detailed information please visit www.sdclindia.com /vacancies.

अन्य रिक्तियां

सामान्य

आवश्यकता 10 रिटायर्ड बुजुर्ग और 10 ग्रेजुएट लड़के लड़कियों जो फ़ोन अटेंड कर उपभोक्ता से बात कर पाए साथ ही उन्हें कंप्यूटर की बेसिक समझ हो। दिल्ली पीतम पूरा और शालीमार बाग़ में 9990694682.

व्यक्तिगत

नाम परिवर्तन

I, Poonam Gupta, R/o H. No. 20, Gali No. 07, Madan Park, Punjabi Bagh, West Delhi – 110026, hereby declare that my husband's correct name is Hari Kishan Gupta. In some Government documents, his name has been written as H K Gupta. Both names refer to the same person.

I, Anubhav Ghosh, S/o Badal Chandra Ghosh, R/o H No. SB-270, NTPC Sahkari Awas Samiti, Anandam, P-6, Greater Noida, Kasana, PO: Kasna, DIST: Gautam Buddha Nagar, Uttar Pradesh, 201310, have changed my name from Anubhav Ghosh to Anubhav for all future purposes.

I, Dharmender Kumar Khatri R/O C-239, Millennium Apart ment, Sector-18,Rohini, Delhi -110089, hereby declare that I have changed my daughter's name from Srishti to Srishti Khatri vide affidavit dated 12.11.2025 sworn before notary Sandeep Sharma, New Delhi. Henceforth, she shall be known as Srishti Khatri for all purposes. Her date of birth is 07.12.2010.

मैं रोहित लोहिया पुत्र स्वर्गीय श्री राजिंदर कुमार, निवासी मकान संख्या 576, सेक्टर 51, गुड़गांव। मैं यह घोषणा करना चाहता हूँ कि मैंने भविष्य के लिए अपना नाम रोहित से बदलकर रोहित लोहिया कर लिया है।

मैं, जगदीश प्रसाद चौरसिया पुत्र छोटे लाल निवासी डब्ल्यू-167, प्रेम नगर-2, किरारी सुलेमान नगर, दिल्ली-86 ने अपना नाम बदलकर जगदीश प्रसाद रख लिया है।

I, Shamim Ahmad S/o Shabbir, residing at A-719, 720, JJ Colony, Camp No-2, Nangloi, West Delhi, Delhi, have changed my name to Shamim affidavit Dated 08/11/2025 notary by Gurdeep Singh DUA.

I, Sagar S/O Vijender Singh, R/O A-1/48 3rd floor, Sec-6 Rohini, Delhi-110085 have changed my name to Sagar Singh for all future purposes.

MISSION / ADMISSION

RAO RANJEET SINGH COLLEGE OF EDUCATION
Recognized by NCTE and Affiliated to I.G.U. Meerpur, Rewari
BODIA KAMALPUR, REWARI (HARYANA)
ADMISSION (2025-27)
B.Ed.
ELIGIBILATY 50% IN GRADUATION OR P.G
Last Date 14-11-2025
CONTACT DIRECT IN COLLEGE CAMPUS
9813223370

बिजनेस

बिजनेस प्रस्ताव

CARBON BLACK FROM EUROPE
We can offer quality stocks at low prices on a monthly basis as below:
CARBON BLACK N-220 100 MT
Please contact
Euro Exim Ltd
Manchester (UK)
Email:exports@euroeximltd.co.uk

टेंडर और नोटिस

सार्वजनिक सूचना (नोटिस)

सार्वजनिक सूचना

यह द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि **एम/एस. कैम्ब्रोज़**, एक पंजीकृत साझेदारी फर्म है, जिसका पंजीकरण संख्या **1055/1999** है तथा जिसका पंजीकृत कार्यालय **D-6, उद्योग नगर औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली – 110041** में स्थित है।
उक्त फर्म का संचालन निम्नलिखित तीन साझेदारों द्वारा किया जाता था –
1. **श्री रजिन्दर प्रसाद अरोड़ा,** पुत्र स्वर्गीय श्री शिव दयाल अरोड़ा, निवासी – मकान संख्या 10(A), रोड संख्या 78, पंजाबी बाग पश्चिम, नई दिल्ली – 110026।
2. **श्री दीपांशु अरोड़ा,** पुत्र स्वर्गीय श्री कमल कृष्ण अरोड़ा, निवासी – मकान संख्या 10(A), रोड संख्या 78, पंजाबी बाग पश्चिम, नई दिल्ली – 110026।
3. **श्रीमती उषा अरोड़ा,** पत्नी स्वर्गीय श्री कमल कृष्ण अरोड़ा, निवासी – मकान संख्या 10(A), रोड संख्या 78, पंजाबी बाग पश्चिम, नई दिल्ली – 110026।

यह सूचित किया जाता है कि **श्री रजिन्दर प्रसाद अरोड़ा,** पुत्र स्वर्गीय श्री शिव दयाल अरोड़ा, **दिनांक 31 जुलाई, 2025** से उक्त साझेदारी फर्म से सेवानिवृत्त (Retired Partner) हो गए हैं। सेवानिवृत्ति के उपरांत, फर्म का संचालन शेष साझेदार - **श्री दीपांशु अरोड़ा** एवं **श्रीमती उषा अरोड़ा,** उपर्युक्त पते पर निवासरत- द्वारा संयुक्त रूप से जारी रहेगा।
यह भी घोषित किया जाता है कि सेवानिवृत्त साझेदार **श्री रजिन्दर प्रसाद अरोड़ा** से संबंधित फर्म का **कोई विवाद, देय राशि** अथवा बकाया भुगतान उनकी सेवानिवृत्ति की तिथि तक लंबित नहीं है।

Public Notice

hereby, it is informed to the public that my client M/s Vishesh Infrastructure Pvt Ltd, thru its Authorised Director entered into an agreement to sell dated **13.05.2025,** With Legal Heir(s)/successors/ of Sheikh Mohammad Ellias s/o Hafiz Mohammad Ishag Saudagar Namely (1) (i) Mumtaz Ibrahim (wife) (1)(ii)Tanveer Ibrahim (son) (1)(iii)Muneer Ibrahim (son) (1) (iv) Irfan Ibrahim (son)(1)(v) Rehan Ibrahim(son),; (1)(vi) Hina Masoud(daughter), ;(1) (vii) Uzma Rehman (daughter),.All (1)(i) To (1)(vii) are the legal heirs of Late Sheikh Mohammad Ibrahim S/o Lt. Sheikh Mohd. Ellias. (2) (i) Parveen Rehman(wife)(2)(ii) Tahir Rehman (son),(2)(iii) Seema Haroon (daughter),(2)(iv)Sameena Saleem (daughter) All (2)(i) to (2)(iv) are the legal heirs of Late Sheikh Abdul Rehman, s/o Late Sheikh Mohd.Ellias.(3) (i)Anas Iqbal (son) (3)(ii) Urusa Athar(daughter).(3) (iii) Asiya Mumtaz (daughter) (3)(iv) Nazneen Amir (daughter) all (3)(I) to (3) (iv) are the legal heirs of late Iqbal Ahmed,S/o Late Sheikh Mohd.Ellias. (4) Sheikh Mohammad Swaleh, (5) Aftab Ahmed, (6) Mohammed Daood, (7)Sheikh Mohammad Zaffar &(8) Mohammad Mohsin (through GPA Sheikh Mohammad Zaffar)are all (4)to(8)s/o Late Sheikh Mohd.Ellias,forintend to purchase the residential property bearing no.6 (old no.8-F),area measuring 3504 sqyds,situated at Ataur Rehman Lane, Civil Lines, Delhi-54,hereby, it is informed to the general public that the joint owners/legal heirs /successors/of Sheikh Mohammad Ellias s/o Hafiz Mohammad Ishaq Saudagar are the present owners by the law of succession & legally occupiers of the residential property bearing no.6(old no.8-F),area measuring 3504 sqyds,situated at Ataur Rehman Lane,Civil Lines,Delhi-110054, with its roof/terrace rights over & above mentioned property was purchased by their father/grand father namely Sheikh Mohammad Ellias s/o Hafiz Mohammad Ishaq Saudagar from Sheikh Ataur Rehman s/o Haji Karam Elahi Saudagar, Vide Sale Deed Dated 19.03.36, duly registered as document no1062,in addl book no.i,volume no.1848,on pages 256 to 263, on 19.03.1936,in the office of the subregistrar,Delhi.It is hereby notified that any person or entity,firm/company,bank, huf/member of huf, financial institution having any claim,any charge,interest or lien/claim in the above said property on the basis of orginal documents and / or objection to thereof,he/she/they may lodge/notify the same to the undersigned with documentary proof / court judgment within 15days from the day of publication of this public notice,failing which any further/future claim/objection(s) shall be rejected & my client/prospective buyer(s) as a bona-fide purchaser conclude the title/sale deed proposed to be executed in favour of my clients) or in the name of his/her/their nominees shall be deemed to be clear & marketable without any defect, encumbrance, flaw and impediment.
Anshu Shukla (Advocate),Ch.No-1121, Rohini Courts, Delhi-85, 9210043774
E: advocateanshu@gmail.com

PUBLIC NOTICE

It is Publicly informed that My client intends to purchase Entire Property/ Shop Bearing No.C-39, area 636 sq. ft., bottom to top, situated at New Subzi Mandi, Azadpur, Delhi and Basement, Ground Floor, First Floor and Third Floor with Roof of Property / Shop Bearing No. C-40, area 636 sq. ft., situated at New Subzi Mandi, Azadpur, Delhi, from its recorded owners. Any person / companies / financial institution etc. have any objection and/or claim in the said properties then he/she/they shall file his/her/ their objection and/or claim in writing at my e-mail address i.e. advocatemanish.chawla@gmail.com within fifteen days from the date of this Notice. After expiry of such time period any sort of objection or claim shall be treated as null and void.
Manish Chawla (Advocate)
Office 4, RU-Block Ground Floor, C.S.C. Pitampura, Delhi., Mob: 9811139896

निविदाएं (टेंडर्स)

OMAXE Forest Spa, Faridabad RWA invites reputed Facility Management Agencies to participate in an RFQ process. Interested parties may write to OmaxeForestSpaRWA2025@gmail.com for details

DELHI PUBLIC SCHOOL
Mathura Road, New Dehi-110003
Ph: 011-43399200, 011-43399229
Tender Notice
Offer is invited for Cleaning of **Lawns / Playfields Services** in the School Campus. Application Form along with detailed terms and conditions can be downloaded from School website: **www.dpsmathuraroad.org.** Last date for submission of form is 24th November, 2025
Principal

न्यायालय सूचना

IN THE HIGH COURT OF DELHI AT NEW DELHI
(TESTAMENT INTESTATE, JURISDICTION)
CITATION U/s 283, INDIAN SUCCESSION ACT, 1925
In the matter of TEST. CAS. No. 91/2025.
ANITA CHOPRA ....PETITIONER
Versus
STATE OF NCT OF DELHI & ORS. ....RESPONDENTS
To,
All Concerned.
In the matter of estate of Late Sh. Jatin Luthra S/o. Shri Late Pardeep Luthra, R/o. A-1/27D, Maa Shakti Apartment, Janta Flat, Paschim Vihar, West Delhi, Delhi-110063.
Whereas Smt. Anita Chopra W/o. Sh. Satish Chopra, R/o. 36A, AVL Society, Gurugram, Haryana-122004, have filed a Petition U/s 276 of the Indian Succession Act, 1925 for grant of Probate of the Will dated 17.11.2023 in respect of estate of Sh. Jatin Luthra, Deceased.
And whereas the aforesaid case is fixed for hearing on 19.11.2025 at 11:00 a.m. before Joint Registrar (Judicial) of this Court and 05.02.2026 at 10:30 a.m. before the Hon'ble Court. This Citation is issued in terms of Section 283 of the said Act to all persons claiming to have any interest in the property/properties of the said deceased to come to this Court, file objections, if any, and take part in the proceedings on the date specified above for the grant of Probate.
Given under my hand and the seal of this Court, in terms of the orders dated 22.09.2025.
Assistant Registrar (O) For REGISTRAR GENERAL

PUBLICATION NOTICE DEFENDANTS
(Order 5, Rule 20 of the Code of Civil Procedure)
IN THE COURT OF SH. VAIBHAV CHAURASIA, LD JSCC-CUM ASCJ-GDN JUDGE, ROOM NO.209 DWARKA COURTS, NEW DELHI
EX/203/2024
MADAN LAL DUGGAL ....Decree Holder
VS.
SHARDA AGGARWAL & ORS. ....Judgement Debtor
To
1. SH. J.P. GUPTA (since deceased)
2. SMT. MANJU GUPTA (since deceased) W/O SH. J.P. GUPTA (since deceased) THROUGH THEIR LEGAL HEIR SH. MANISH R/O RZ-85, DASHRATH PURI, NEW DELHI
Whereas you are intentionally avoiding services of summons. It is hereby notified that if you shall not defend the case on the day of **12.12.2025 at 10.00 A.M.** i.e. the day fixed in the matter, it will be heard and determined ex-parte.
Given under my hand and seal of the Court on this **06th day of November, 2025.**
JSCC-cum-ASCJ-Guardian Judge Dwarka Court Complex, New Delhi

BOOK YOUR TENDER & NOTICE ADS
For booking please contact Aman : 9312633518

HEALTH & WELLNESS — TIMES interact

SEX PROBLEM
बचपन की गलतियों के कारण आयी सभी सेक्स समस्याओं के समाधान के लिए हमारी सलाह द्वारा दवा का सेवन करें और 15 ही दिन में फर्क देखें
सिर्फ ₹955 महीना
घर बैठे दवा मंगवायें
सन्यासी आयुर्वेदा
2284,कोड़िया पुल चौक,पुरानी दिल्ली • मंगोलपुरी • कालकाजी
फ्री सलाह: 8527001155

बचपन की गलतियों से बने गुप्त रोगों के लिए
चेतन आयुर्वेदा
बदरपुर, दरियागंज, भजनपुरा, छतरपुर
E-2, Opp Petrol Pump Bhajanpura
9817469817

विवाहित जीवन में पायें नई खुशियाँ नया जोश नई उमंग
SEX समस्या आयुर्वेदिक सलाह लें
समय 10 – 7 तक
आकाश दवाखाना
एक्सप्रेस टावर आकाश सिनेमा के पीछे आजादपुर दिल्ली
9953396533
8860003863

SEX PROBLEMS?
सैक्स समस्याऐं कैसी भी स्त्री-पुरूष (सफेद पानी) (कमजोरी)
बे–औलाद? मिलें–सलाह लें
Since-1986
कौशिक क्लिनिक
मैट्रो पोल नं. 671, उत्तमनगर, दिल्ली-59
9810-272-172

BOOK YOUR EDUCATION ADS
TO BOOK ONLINE LOG ON TO
Ads.timesofindia.com

Readers are recommended to make appropriate enquires and seek appropriate advice before sending money, incurring any expenses, acting on medical recommendations or entering into any commitment in relation to any advertisement published in this publication. The Times of India Group doesn't vouch for any claims made by the Advertisers of the products and services. The Printer, Publisher, Editor, and the owners of The Times of India Group publications shall not be held liable for any consequences, in the event such claims are not honoured by the Advertisers.

TIMES interact — Connecting People, Connecting Needs.
TO ADVERTISE IN THE CLASSIFIEDS SECTION, FOR ANY OF THE BELOW MENTIONED CATEGORIES
MATRIMONIAL | BUSINESS | PROPERTY
RECRUITMENT, EDUCATION | SHOPPING | SERVICES, VEHICLES, TRAVEL
TENDER, PUBLIC NOTICE | CHANGE OF NAME, LOST & FOUND | BIRTHDAY/ ANNIVERSARY ADS
Please call us at the below mentioned nos.

Area / Zone	Contact Person	Mobile No.	Area / Zone	Contact Person	Mobile No.
Central Delhi1 + North Delhi	Amit Ghosh	98117 90649	South Delhi + Faridabad + Noida	Raghav Arora	99999 95460
Central Delhi2 + Ghaziabad + East Delhi	Sunil Srivastava	99994 99496	West Delhi + Dwarka + Gurgaon	Aman Pasricha	93126 33518

CCI NG 3.7 Product: NBTDelhiBS PubDate: 13-11-2025 Zone: Mahanagar Edition: 1 Page: NBTMAH15 User: cci Time: 11-12-2025 22:05 Color:

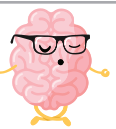

संविधान केवल दस्तावेज नहीं, यह जीवन का एक साधन है, और इसका उद्देश्य समाज में न्याय की स्थापना करना है।
-डॉ. बी.आर. आंबेडकर

टकराव ग़ैरज़रूरी

उत्तराखंड के एक केस की वजह से सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्ट के अधिकार क्षेत्रों से जुड़ा मसला फिर चर्चा में है। सुप्रीम कोर्ट को कहना पड़ा कि हालांकि हाईकोर्ट उससे कमतर नहीं है, लेकिन फिर भी उसे उन मामलों पर विचार नहीं करना चाहिए, जो शीर्ष अदालत में लंबित हैं। न्यायिक अधिकार क्षेत्र के स्पष्ट बंटवारे के बावजूद अगर इस तरह का मसला बार-बार उठ रहा है, तो उस पर गंभीरता से विचार करने की जरूरत है।

उत्तराखंड का केस । मौजूदा मामला जिम कॉर्बेट टाइगर रिजर्व में अवैध निर्माण की जांच से जुड़ा है। सुप्रीम कोर्ट इस जांच की निगरानी कर रहा है और उसने प्रॉसिक्यूशन शुरू करने की अनुमति नहीं देने पर उत्तराखंड सरकार से सवाल किया था। इसके बाद राज्य सरकार ने एक अफसर के खिलाफ मुकदमे की इजाजत दे दी। अफसर ने इसके खिलाफ उत्तराखंड हाईकोर्ट में रिट याचिका दायर की, तो उसे स्वीकार कर लिया गया।

सुप्रीम कोर्ट बनाम हाईकोर्ट

पुराना टकराव । इसी साल अगस्त में सुप्रीम कोर्ट ने इलाहाबाद हाईकोर्ट के एक जस्टिस के फैसले को पलटते हुए उन पर कुछ टिप्पणियां की थीं। साथ ही, हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस से कहा था कि उस जज को पूरे सेवाकाल में किसी भी आपराधिक मामले की सुनवाई न करने दी जाए। तब इस पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए इसे हाईकोर्ट की स्वायत्तता में घुसपैठ कहा गया था। आखिरकार सुप्रीम कोर्ट ने टिप्पणी हटाई और यह स्पष्ट किया कि हाईकोर्ट उसके अधीन नहीं हैं।

संविधान में रास्ता । सुप्रीम कोर्ट को जो बात बार-बार कहनी पड़ रही है, वह संविधान के जरिये स्थापित है। दोनों ही अदालतें संवैधानिक हैं और दोनों को कानून की व्याख्या व मौलिक अधिकारों की रक्षा के लिए असीमित अधिकार मिले हैं। सुप्रीम कोर्ट को यह शक्ति आर्टिकल 32 से मिलती है, जबकि हाईकोर्ट को 226 से।

बराबरी का दर्जा । न्यायिक वरीयता में सुप्रीम कोर्ट भले ऊपर हो, लेकिन हाईकोर्ट उसके अधीन नहीं हैं। पिछले ही महीने राज्य न्यायिक अधिकारियों के सेवा नियमों से जुड़े मामले में इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा था कि सुप्रीम कोर्ट को इसमें दखल नहीं देना चाहिए। दरअसल लोअर जुडिशरी का एडमिनिस्ट्रेटिव हेड हाईकोर्ट है, पर हाईकोर्ट का एडमिनिस्ट्रेटिव हेड सुप्रीम कोर्ट नहीं है। दोनों बराबर हैं।

सही संदेश । भारतीय संविधान में देश की व्यवस्था से जुड़े सारे सवालों के जवाब हैं। इसलिए समय-समय पर उठने वाले ऐसे सवाल संविधान की रोशनी में हल किए जाते रहे हैं। मौजूदा मामले में सुप्रीम कोर्ट की व्यवस्था भी यही संदेश देती है।

गुस्ताखी माफ़

पलूशन का मायोपिया

अखिलेश प्रताप सिंह

प्रदूषण ने दिल्ली की बुरी गत बना दी है। फिर भी कुछ लोग जान हथेली पर लेकर सुबह की सैर के लिए निकल ही जाते हैं। हम भी चल पड़ते हैं, बस जरा इंतजार करते हैं कि भगवान भास्कर की रोशनी से इंद्रप्रस्थ की पावन धरा आलोकित हो जाए और बदमाश AQI कुछ पीछे हट जाए। चाहे जितनी पहरेदारी कर लो, पानी छिड़क-छिड़ककर पूरा रास्ता कीचड़-कीचड़ कर दो, 400 नंबर के दीदार के लिए ये रोमियो की तरह पहुंच ही जाता है सरकारी मीटर की खिड़की पर।

AQI का खौफ दिल में लिए मैं पार्क पहुंचा ही था कि वही चंट बच्चा बल्लू बाश्शा दिख गया। उसने चश्मा चढ़ा रखा था। मैं कुछ पूछता, इससे पहले ही उसने गुड मॉर्निंग की गुड लेंथ बॉल डाल दी। पर मैं पीछे नहीं रहने वाला था। पकड़ लिया उसे,'दिनभर मोबाइल में घुसे रहोगे। आंख तो खराब होगी ही। इस पलूशन में बाहर धमाचौकड़ी करते हो। घर में बैठो, अखबार पढ़ो तो देश-दुनिया का हाल पता चले। यहां इंडिया गेट पर हमने प्रदूषण के खिलाफ जुलूस निकाला, वहां ब्राजील में दुनियाभर के लोग जमा हैं पर्यावरण की रक्षा के लिए, तुमको कुछ खबर है?'

बल्लू ने मुझे गौर से देखा, जैसे कपिल देव पलटकर देखा करते थे कातिल आउटस्विंगर डालने से पहले। 'अंकल, आपके किए की सजा मिल रही है मुझे।' बल्लू शुरू हो गया, 'नजर की देखभाल कैसे होगी, 65000 लोगों पर आंखों का एक डॉक्टर है अपने देश में। ये हाल हमारी जेनरेशन ने किया है? छत्तीसगढ़ में एक के बाद एक जंगल साफ हो रहे हैं। चलो यह तो मायोपिया हुआ कि आपको दूर की चीज नहीं दिख रही, पर यहां अरावली की हरियाली साफ होती रही और आप मजे से चाय सुड़कते रहे। इतने करीब की चीज भी न दिखी? इंडिया गेट के किस्से छोड़ो, आप तो अपना आई चेक-अप करा लो अंकल।' बल्लू भी कैसी बातें करता है, भला प्रदूषण का आंखों से क्या रिश्ता!

एकदा

संकलन : **रिंकल शर्मा**

रोटी का मूल्य

Subrata Dhar

शम्स तबरेजी (1185-1248) ईरान (प्राचीन फारस) के एक महान सूफी संत, घुमक्कड़ फकीर और आध्यात्मिक गुरु थे। शम्स को फारस के महान विद्वान जलालुद्दीन रूमी के जीवन में आध्यात्मिक क्रांति लाने के लिए भी जाना जाता है। एक दिन वह बाजार से गुजर रहे थे। उन्होंने देखा कि एक प्रसिद्ध विद्वान अपने शिष्य को डांट रहा था, 'तुम अभी बहुत छोटे हो, ज्ञान पाने के लिए बहुत त्याग चाहिए।' शिष्य की आंखों में अपमान और पीड़ा थी। शम्स आगे बढ़े और मुस्कुराकर बोले, 'हुजूर, आप बड़े ज्ञानी लगते हैं।' विद्वान ने गर्व से कहा, 'हां, मैंने सैकड़ों पुस्तकें पढ़ी हैं। धर्म, दर्शन, तर्क - सब जानता हूं।' शम्स ने पास की दुकान से एक रोटी उठाई और पूछा, 'बताइए, इसकी असली कीमत क्या है?' विद्वान ने हंसते हुए कहा, 'यह तो एक-दो सिक्कों की चीज है।' शम्स ने कहा, 'ठीक है, तीन दिन कुछ मत खाइए, फिर इस रोटी की कीमत बताइएगा।' तीन दिन बाद वह विद्वान शम्स से मिला तो रो पड़ा, 'मैंने बहुत सी किताबें पढ़ीं, पर जीवन का सबसे बड़ा पाठ विनम्रता नहीं सीखा।' शम्स मुस्कुराए, 'जब मनुष्य अपने ज्ञान का अभिमान छोड़ देता है और साधारण चीजों का मूल्य समझ लेता है, तभी वह सच्चे ज्ञान को प्राप्त करता है।' विनम्रता ही सच्चे ज्ञान की पहली सीढ़ी है।

पाकिस्तान और बांग्लादेश की क़रीबी भारत के लिए बन रही नया ख़तरा

कैसी चेतावनी है लाल क़िला विस्फोट

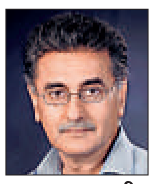

अजय साहनी

लाल किला मेट्रो स्टेशन की पार्किंग में 10 नवंबर को हुए विस्फोट पर सोशल मीडिया में भले ही तरह-तरह की चर्चाएं चल रही हों, आधिकारिक तौर पर ठोस जानकारी बहुत कम है। इतना स्पष्ट है कि इस विस्फोट को आतंकवादी कृत्य की तरह लिया जा रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इसे साजिश बताते हुए कह चुके हैं कि जिम्मेदार लोगों को किसी भी सूरत में बख्शा नहीं जाएगा। देश की प्रमुख आतंकवाद रोधी एजेंसी एनआईए इस मामले की जांच की अगुवाई कर रही है।

सरकार की हिचक । सरकार ने अब तक औपचारिक तौर पर इसे आतंकवादी हमला घोषित नहीं किया है। ऑपरेशन सिंदूर के बाद जिस तरह से सरकार ने यह लकीर खींच दी थी कि अब हर आतंकवादी कृत्य को 'युद्ध की कार्रवाई' माना जाएगा, उसे देखते हुए यह हिचक स्वाभाविक है। प्राथमिक जांच के आधार पर लाल किला विस्फोट का मुख्य संदिग्ध पुलवामा के उमर उन नबी को बताया जा रहा है। जांच में फरीदाबाद और कई अन्य स्थानों पर बड़ी संख्या में मिले विस्फोटकों से इस मामले के संभावित जुड़ाव को भी परखा जा रहा है।

खतरा बरकरार । साल 2013 में पटना में हुए बम विस्फोट के बाद से देश में कश्मीर के बाहर कोई बड़ी आतंकवादी घटना नहीं हुई थी। ऐसे में यह सवाल स्वाभाविक है कि क्या दिल्ली का 2025 का यह विस्फोट अपने आप में अकेली घटना है या इसे किसी व्यापक रणनीतिक बदलाव का संकेत मानना चाहिए? ध्यान रहे, इस्लामी आतंकवाद से जुड़ी साजिशों के मामले में इस साल जम्मू-कश्मीर से बाहर कम से कम 82 लोग गिरफ्तार किए गए हैं। 2024 में यह संख्या 80 थी। जाहिर है, देश भर में आतंकवादी हमलों के खतरे बने हुए हैं। हालांकि ज्यादातर साजिशों को नाकाम किया जा रहा है, लेकिन दिल्ली विस्फोट ने दिखाया है कि कोई भी सुरक्षा व्यवस्था पूरी तरह से अभेद्य नहीं होती।

नाजुक हैं हालात

- भारत पर कड़े जवाबी कदम का दबाव
- आतंक के आका बदल सकते हैं रणनीति
- चीन-US से पाक की करीबी से है उत्साह

आतंकी रणनीति में बदलाव । जम्मू कश्मीर में घुसपैठ अब मुश्किल हो गई है और आतंकवादियों के लिए वहां स्थिति चुनौतीपूर्ण होती जा रही है। लेकिन ऑपरेशन सिंदूर के बाद भू राजनीतिक हालात में आए बदलाव, खासकर अमेरिका और चीन के साथ पाकिस्तान की करीबी ने वहां बैठे आतंक के आकाओं का मन बढ़ा दिया है। ऐसे में संभव है कि वे 1997-2011 की अवधि वाले पैटर्न को फिर से शुरू करना चाहें जिसमें पाक समर्थित आतंकवादी समूहों के संयुक्त अभियानों को स्टूडेंट्स इस्लामिक मूवमेंट ऑफ इंडिया-इंडियन मुजाहिदीन (SIMI-IM) के लोकल कॉडर की मदद से अंजाम दिया जाता था।

संगठित नेटवर्क तहस-नहस । हालांकि ऐसी कोई भी कोशिश उनके लिए आसान नहीं साबित होने वाली। कारण कि इस बीच आतंकवादियों के समर्थन का संगठित नेटवर्क तहस-नहस किया जा चुका है, जम्मू-कश्मीर के बाहर आतंकवाद के किसी ढांचे की मौजूदगी नहीं रह गई है और देश की आतंकवाद रोधी संरचना की क्षमता में जबरदस्त इजाफा हो चुका है।

भारत पर उठाई उंगली । इस संदर्भ में यह बात मायने रखती है कि प्रधानमंत्री मोदी की 'तेजी से न्याय करने' की घोषणा के कुछ घंटों के अंदर 11 नवंबर को इस्लामाबाद के जिला न्यायालय में आत्मघाती आतंकी हमला हुआ, जिसमें कम से कम 12 लोगों की मौत हो गई। पाकिस्तान के पीएम शाहबाज शरीफ ने तत्काल इस 'कायरतापूर्ण आतंकवादी हमले' के लिए भारत को जिम्मेदार ठहरा दिया। दूसरी तरफ पाकिस्तानी मीडिया ने लाल किला वाली घटना को 'रहस्यमय विस्फोट' के रूप में पेश किया।

बांग्लादेश कनेक्शन । सीमा के दोनों तरफ ऐसे समय में तनाव बढ़ रहा है जब न केवल दुनिया की भू राजनीतिक स्थिति नाजुक दौर से गुजर रही है बल्कि दक्षिण एशिया में भी पाकिस्तान और बांग्लादेश के गहराते रिश्ते भारत की चिंता बढ़ा रहे हैं। ध्यान रहे, 90 के आखिरी और 2000 के शुरुआती वर्षों में चलाए गए ज्यादातर संयुक्त आतंकी अभियानों में हरकत-उल-जिहाद इस्लामी-बांग्लादेश की अहम भूमिका थी।

हालात हो सकते हैं बदतर । ऐसे में अगर लाल किला विस्फोट अपने आप में अकेली घटना साबित होता है तो भी इसके परिणामस्वरूप भारत-पाकिस्तान के बीच छद्म संघर्ष तेज होने के पूरे आसार हैं। भारत का नेतृत्व जिस तरह के तेवर दिखा रहा है, उसके मद्देनजर अगर जांच में पाकिस्तानी आतंकी तत्वों का हाथ सामने आया तो कड़े जवाबी कदम को टालना मुश्किल होगा। जाहिर है, मौजूदा हालात में लाल किला विस्फोट दर्शाता है कि इस्लामी आतंकवाद का खतरा न केवल बना रहने वाला है बल्कि इसके और बढ़ने के आसार हैं।

(लेखक इंस्टिट्यूट फॉर कन्फ्लिक्ट मैनेजमेंट के एक्जीक्युटिव डायरेक्टर हैं)

कांटे की बात

तकनीक अच्छी है या बुरी, यह इस पर निर्भर करता है कि हम उसका उपयोग कैसे करते हैं। बतौर डिजाइनर, इनोवेटर और इंसान - तकनीक को मानवता की भलाई के लिए आकार देना हम पर है।

रीड हॉफमैन, *लिंक्डइन के संस्थापक (पोप लियो XIV के बयान पर जवाब देते हुए)*

असंभव संवाद

नहीं, हिम्मत से होगा आतंक का ख़ात्मा

दिल्ली विस्फोट से देश सकते में है। लंबे अरसे बाद राजधानी की सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल उठे हैं। पंजाब से आतंक का सफाया करने वाले सुपर कॉप केपीएस गिल आज होते, तो क्या टिप्स देते?

AI Image

पुरानी दिल्ली की कभी न जाने वाली चमक बुझी-बुझी सी है। शाम उदास लग रही है और हवा भारी। गिल ने माहौल को भांप लिया और पास खड़े लोगों से कहा, 'एक वारदात का मतलब हमारा असफल हो जाना नहीं। हार तब मिलती है, जब हिम्मत छूट जाती है।' 'सर, लोगों में बहुत गुस्सा है। सोशल मीडिया पर जनता उबल रही है।' 'यह लड़ाई हैशटैग की नहीं, जमीन की है। भावनाएं व्यक्त करना गलत नहीं, पर सबक भी सीखने होंगे।' 'सर, क्या स्ट्रैटजी बदल लेनी चाहिए।' 'रणनीति स्टेटस की तरह नहीं बदला करती, और बदलनी भी है तो उसकी यूं चर्चा क्या करना। जवाब जैसा को तैसा देना है, तो कदम ऐसा बढ़ाओ कि दुश्मन भी हैरान रह जाए।'

Poli-tickle

R PRASAD

एक ब्राजीलियाई ने 10 बूथों पर 22 वोट डाले: राहुल गांधी

दुनिया में हर हजार लोगों में से 27 ब्राजील के हैं। इनमें से सिर्फ 22 ने मतदान किया। हमें बाकी 5 को तलाशना ही होगा।

जब कश्मीरी गेट था हॉकी की नर्सरी

साझी दिल्ली

विवेक शुक्ला

साल 1928, भारतीय हॉकी टीम ने एम्सटर्डम ओलिंपिक हॉकी का गोल्ड मेडल जीता। उस टीम में कश्मीरी गेट के माइकेल एंटनी गेटले भी थे। तब दिल्ली में हॉकी की गतिविधियों का केंद्र था कश्मीरी गेट। गेटले तेज-तर्रार फॉरवर्ड प्लेयर थे। उस जमाने में कश्मीरी गेट में बहुत से एंग्लो इंडियन परिवार रहा करते थे। भारतीय हॉकी ने बीते 7 नवंबर को अपने 100 गौरवशाली वर्ष पूरे कर लिए हैं।

खेल के जेंटल । कश्मीरी गेट से दूसरे मशहूर ओलिंपिक खिलाड़ी हुए आर.एस. जेंटल। भारत की हॉकी में उनका बेहद खास मुकाम रहा है। जेंटल 1948 (हेलसिंकी), 1952 (लंदन) और 1956 (मेलबर्न) में भारतीय टीम के मेंबर थे। मेलबर्न ओलिंपिक्स में उन्होंने कप्तानी भी की। वह कमाल के फुल बैक थे। उन्हीं के गोल की बदौलत भारत ने पाकिस्तान को फाइनल में मात दी थी। जेंटल रफ-टफ खिलाड़ी थे, इसलिए कई बार खिलाड़ी उनसे कहते, 'प्लीज, बी जेंटल।' यूं उनके नाम के साथ जेंटल जुड़ गया।

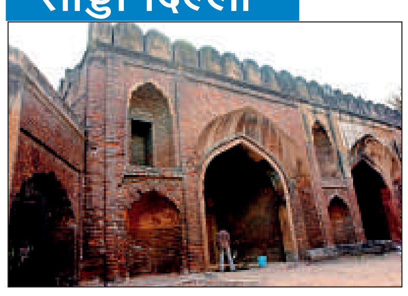

सबसे खास साल । दिल्ली की हॉकी के लिए 1933 खास था। उस साल नैशनल स्टेडियम (अब मेजर ध्यानचंद नैशनल स्टेडियम) का उद्घाटन हुआ। इसका निर्माण गुजरात के भावनगर के महाराजा के सहयोग से हुआ था। यहीं 1948 के लंदन ओलिंपिक्स में गोल्ड मेडल जीतने वाली भारतीय टीम ने तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ.राजेन्द्र प्रसाद और प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के सामने प्रदर्शनी मैच खेला।

पहाड़गंज का जलवा । जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में शिखर हॉकी खिलाड़ियों, हरबिंदर सिंह और मोहिंदर लाल की फोटो लगी है। ये दोनों 1964 के तोक्यो ओलिंपिक्स में गोल्ड जीतने वाली टीम का हिस्सा थे। उस टीम में जोगिंदर सिंह (जोगी पाजी) भी दिल्ली से थे। वह बाद में कोलकाता शिफ्ट हो गए। मोहिंदर लाल पहाड़गंज से थे, हरबिंदर मिंटो रोड से। फाइनल मैच का विजयी गोल मोहिंदर लाल ने ही किया था। लोधी कॉलोनी वाले अशोक दीवान 1975 का वर्ल्ड कप जीतने वाली टीम के गोलकीपर थे। भारत ने 1980 के मास्को ओलिंपिक्स में फिर हॉकी का गोल्ड जीता। उस टीम के एम.के. कौशिक खाटी दिल्ली वाले थे।

खून में हॉकी । नेहरू हॉकी टूर्नामेंट का 1964 में आयोजन शिवाजी स्टेडियम (पहले हार्डिंग ग्राउंड) में शुरू हुआ। भारतीय हॉकी टीम के पूर्व कप्तान अशोक कुमार ने बताया था कि उन्होंने दशकों तक शिवाजी स्टेडियम में खेला। यहां अजीत पाल सिंह, सुरजीत सिंह, जफर इकबाल, मोहम्मद शाहिद जैसे सितारों ने अपने जौहर दिखाए। शिवाजी स्टेडियम के ठीक पीछे स्थित होने के चलते यूनियन अकैडमी स्कूल के डीएनए में भी हॉकी रसी-बसी है। अर्जुन पुरस्कार विजेता विनीत कुमार, गगन अजीत सिंह और भारत के पूर्व कोच हरेंद्र सिंह इसी स्कूल से हैं।

असम में जड़ें तलाशता म्यांमार

टाइम मशीन

म्यांमार से एक प्रतिनिधिमंडल पिछले हफ्ते असम पहुंचा। ये लोग अपने पूर्वजों की विरासत को देखने और उससे जुड़ने के लिए आए थे। पूर्वज यानी चाओलुंग सुकाफा (Chaolung Sukapha), जो भारत की भी सांस्कृतिक विरासत का अहम हिस्सा हैं। उन्होंने 600 बरसों तक राज करने वाले अहोम साम्राज्य की स्थापना की। उनके शासनकाल ने असम की सांस्कृतिक, राजनीतिक और सामाजिक पहचान को गढ़ा।

13 बरस की यात्रा । सुकाफा का जन्म मोंग माओ नामक स्थान में हुआ था, जो आज के चीन और म्यांमार की सीमा के आसपास पड़ता है। वह ताई समुदाय से थे, जो उस समय दक्षिण-पूर्व एशिया में फैला हुआ था। ब्रिटिश भारत में बंगाल प्रेसीडेंसी के लेफ्टिनेंट गवर्नर रहे सर एडवर्ड अल्बर्ट गेट ने अपनी किताब 'द हिस्ट्री ऑफ असम' में लिखा है कि सुकाफा ने 1215 ईसवी में कुछ खास लोगों के साथ यात्रा शुरू की, जो 13 बरसों तक चली। म्यांमार, नगालैंड और अन्य पहाड़ी इलाकों से होते हुए आखिरकार वह असम तक पहुंचे।

असम दिवस । 2 दिसंबर 1228 की तारीख थी, जब सुकाफा ने असम की धरती पर कदम रखा। इसी वजह से हर साल दो दिसंबर को असम दिवस मनाया जाता है। सुकाफा ने सबसे पहले चराईदेव में अपनी राजधानी बनाई। उन्होंने यहां प्रशासनिक केंद्र स्थापित करने के साथ आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विकास भी किया। यहीं पर अहोम राजवंश के लोगों की कब्र हैं, जिन्हें मोइदम कहा जाता है। अब ये UNESCO की वर्ल्ड हेरिटेज साइट का हिस्सा हैं।

जनजातीय एकता पर जोर । सुकाफा की सबसे बड़ी सफलता मानी जाती है उनका स्थानीय लोगों के बीच घुलमिल कर बिल्कुल उनके जैसा बन जाना। इसकी वजह है कि उन्होंने जनजातीय एकता की नीति अपनाई। मोरन, बोराही, चुटिया और कचारी समेत सभी समुदायों को बराबरी का दर्जा मिला। उन्होंने मूल निवासियों के साथ विवाह संबंध स्थापित किए और सांस्कृतिक साझेदारी पर जोर दिया।

व्यवस्था में सुधार । इन प्रयासों का नतीजा यह रहा कि अहोम साम्राज्य मजबूत होता चला गया और किसी तरह का आक्रोश या विद्रोह नहीं भड़का। अहोम साम्राज्य की बड़ी उपलब्धियों में गिना जाता है भुइयां यानी जमींदारों की पुरानी राजनीतिक व्यवस्था का खात्मा। 12वीं सदी में असम के पुराने कामरूप साम्राज्य के पतन के बाद भुइयां का जन्म हुआ था। जब अहोम शासन मजबूत हुआ, तो इसकी जगह पाइक प्रणाली लागू हुई, इसमें हर नागरिक राज्य की सेवा के लिए जिम्मेदार था। इससे प्रशासन में मदद मिली।

मुगलों को हराया । 17वीं सदी में जब मुगल साम्राज्य ने असम पर आक्रमण किया, तो लाचित बरफुकन के नेतृत्व में अहोम सेना ने सराइघाट के युद्ध (1671) में मुगलों को निर्णायक रूप से पराजित किया। यह जीत असम के गौरव और असमी एकता का प्रतीक बन गई। अहोम में बरफुकन का मतलब था मुख्य सेनाध्यक्ष और लाचित ने जिस तरह अपनी भूमिका निभाई, उसने उन्हें इतिहास के सबसे महान सेनापतियों में से एक बना दिया। 24 नवंबर को मनाया जाने वाला लाचित दिवस उन्हीं को समर्पित है।

ब्रिटिश शासन का कब्जा । लेकिन, वक्त के साथ अहोम साम्राज्य भी कमजोर पड़ने लगा। 18वीं सदी में बर्मा की तरफ से आक्रमण बढ़ गए थे, आंतरिक चुनौतियां भी थीं। आखिरकार 1826 की यंडाबू संधि के बाद असम ब्रिटिश शासन के अधीन आ गया और अहोम राजवंश का अंत हुआ। लेकिन, 6 सदियों में इसने जो छाप छोड़ी, वह आज भी दिखती है।

अंधेरे में दीप, समुद्र में द्वीप व रेगिस्तान में छाया हैं सद्गुरु

मुनि जयकुमार

भारतीय संस्कृति में गुरु को अत्यंत महान स्थान प्राप्त है। गुरु की कृपा और आशीर्वाद से शिष्य का जीवन सार्थक बन जाता है। गुरु न केवल जीवन को अध्यात्म की रोशनी से प्रकाशित करते हैं, बल्कि मोक्ष का मार्ग भी प्रशस्त करते हैं। संसार रूपी महासागर से पार कराने में गुरु केवट की भूमिका निभाते हैं। गुरु सूर्य के समान होते हैं, जो चैतन्य से साक्षात्कार कराते हैं।

सच्चा गुरु वही है, जो अपने शिष्य में ज्ञानरूपी प्राण का संचार कर उसकी सुप्त चेतना को जागृत कर दे। ऐसे सद्गुरु का मिलना किसी शिष्य के लिए अत्यंत सौभाग्य की बात होती है। सद्गुरु की शक्ति अदृश्य होते हुए भी शिष्य के जीवन पर वह असीम प्रभाव डालती है। शिष्य का आध्यात्मिक जन्म सद्गुरु से ही होता है। जब गुरु के प्रति शिष्य पूर्ण श्रद्धा और समर्पण रखता है, तब उसकी आत्मिक उन्नति शीघ्र होती है।

गुरु के बिना ज्ञान नहीं हो सकता। जो गुरु एक अक्षर का भी ज्ञान देता है, उसके प्रति शिष्य सदा ऋणी रहता है। संसार में ऐसा कोई द्रव्य नहीं, जिससे वह गुरु का ऋण चुका सके। ज्ञान देने वाले गुरु अनेक मिल सकते हैं, पर आत्मज्ञान प्रदान करने वाले सद्गुरु दुर्लभ हैं। सद्गुरु वही हैं जो आत्मा या चेतना की पहचान कर चुके होते हैं, और शिष्य को भी आत्म-साक्षात्कार की दिशा में अग्रसर करते हैं।

THE SPEAKING TREE
और पढ़ने के लिए देखें
www.speakingtree.nbt.in

गुरु के बिना जीवन यात्रा न तो आनंदमय हो सकती है, न ही अध्यात्ममय। गुरु को भगवान से भी बड़ा स्थान इसलिए दिया गया है, क्योंकि वही हमें भगवान का साक्षात्कार कराते हैं। अंधकार से प्रकाश की ओर, असत्य से सत्य की ओर और दुख से मुक्ति की ओर गुरु ही ले जा सकते हैं। वे हमारे लिए अंधकार में दीपक, समुद्र में द्वीप और मरुस्थल में वृक्ष की शीतल छाया समान हैं। ज्ञान का प्रकाश देने वाले गुरु नेत्र, दीपक, सूर्य और चंद्रमा की उपमाओं को सार्थक करते हैं। वे सच्चे मार्गदर्शक हैं, सन्मार्ग दिखाने वाले देवतुल्य प्रेरक हैं।

शिष्य जब गुरु की भक्ति में स्थिर रहता है, तब धीरे-धीरे स्वयं भी गुरुता के गुणों को प्राप्त करता है। यही गुरु-शिष्य परंपरा की दिव्यता और भारतीय संस्कृति की सबसे सुंदर पहचान है।

रीडर्स मेल

संतुलित साझेदारी

12 नवंबर का लेख 'ये रिश्ता क्या कहलाता है' पढ़ा। भारत-अमेरिका रक्षा साझेदारी दोनों देशों के संबंधों की रीढ़ बन चुकी है। नए डिफेंस फ्रेमवर्क एग्रीमेंट ने इस रिश्ते को और मजबूती दी है, खासकर ऐसे समय में जब वैश्विक राजनीति तेजी से बदल रही है। यह सुरक्षा के लिए एक सकारात्मक कदम है।

संजीव रावत, ईमेल से

nbtedit@timesofindia.com पर अपनी राय नाम-पते के साथ मेल करें।

आर.एन.आई. नं. 510/57 © सर्वाधिकार सुरक्षित। लिखित अनुमति के बिना संपूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित। स्वत्वाधिकारी बैनेट, कोलमैन एण्ड कम्पनी लिमिटेड के लिए राजीव यादव द्वारा, 7 बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित तथा **टाइम्स ऑफ इंडिया प्रेस, साइट IV, औद्योगिक क्षेत्र साहिबाबाद** और प्लॉट नंबर 7-8, सेक्टर M-11, ट्रांसपोर्ट हब, इंडस्ट्रियल मॉडल टाउनशिप, मानेसर, हरियाणा से मुद्रित। फोन: 23302000 फैक्स: 23492047, पंजीकृत कार्यालय: दादाभाई नौरोजी रोड, मुंबई-400001। विमान सेवा शुल्क: 1 रु. प्रति कॉपी। नेपाल में कुल मूल्य: सोमवार से शनिवार: नेपाली 5 रु.; रविवार: नेपाली 6 रु.
संपादक (दिल्ली मार्केट): आशीष पांडे (इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी)